रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 5 अंक 12, दिसम्बर 2021

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
वार्षिक - 720/-
आजीवन - 10000/-

अनुक्रमणिका

बेटियाँ 7

चादर से कह रही रजाई 9

गिनती गीत 10

पंचतंत्र की कथाएँ 11

बीते बचपन 13

ख्वाहिश है 15

अधूरी कहानी पूरी करो 18

कौवा और मोर 18

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी 18

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 19

घमण्डी ऊँट 19

आज की नारी 21

प्यारे दादा जी 23

प्लास्टिक ईंट खेल 25

हमर गवइ गांव 27

मन के जीते जीत 29

रिक्शा चालक 30

पुष्ट जानकारी 31

स्वर गीत 33

व्यंजन गीत 34

अहसासों का बंधन 36

चाचा नेहरू का जन्मदिन आया 38

देखो आई मछली 40

लगा हुआ है मेला 42

आ गया फिर जाड़ा 44

खजूर 46

मूँगफली 48

कर्म का फल 50
गैया 51
चिड़िया 52
दीपावली त्यौहार में 53
नागरिहा किसान 55
संघर्ष 57
डेंगू मच्छर 58
राष्ट्रभाषा हिंदी 60
देवारी तिहार 61
धूप 63
जलेबी 64
कोयल 65
दिए जलाएं 66
गीताली और गिल्लू 68
शहर से अलग है गाँव के घर 70
खेल-कूद 72
कालू बंदर 73
बिल्ली मौसी 75
नाम है मेरा घड़ी 77
सोना का पायल 79
बच्चों की रेल 81
भागी बिल्ली 83
भारत के प्रमुख नगरों के उपनाम 84
आओ दीप जलाएँ 85
मिलजुल के रहव 87
घर का कुलदीपक 90
शिक्षा मानव का आभूषण है 91
दिवाली के दिये 93

विश्व गुरु भारत.....95
द्वीपवती.....97
सबले जुन्ना मंदिर देवरानी-जेठानी.....99
कभी चुका नहीं पाऊंगा.....102
हारा नहीं हूँ मैं.....104
रिश्ते-नाते.....106
मम्मी के राजदुलारे.....107
छुक छुक रेल.....109
सुशासन.....111
दीपोत्सव.....113
सरसती बंदना.....115
तिरंगा.....117
प्रियदर्शिनी इंदिरा.....118
भारत की पावन मिट्टी.....120
दरकते रिश्ते.....122
सेंटा क्लाज मुझे बना दो जी.....123
खुशियाँ त्यौहारों की.....124
पूस की रात.....125
भाई दूज.....126
फूलों की मुस्कान.....128
एक बंदरिया छत पर आई.....129
सुरभित सदन.....130
खेलें खेल.....131
क्रिशमस का त्यौहार है.....134
तितली.....135
पिचील-पिचील पैरा.....136
हस्तलिखित पुस्तिका.....137
दिया और बाती.....138

कहानी से मिलती है शिक्षा.....140
हमारे प्रेरणास्रोत.....141
नानी.....143
चंदा तारे.....144
बंदर मामा.....145
बाल दिवस.....146
मेरा खेत.....148
परमार्थ की भावना.....150
शिशु शिरोमणि.....151
मंटू मुर्गा.....153
सौर परिवार.....154
बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू.....155
मुस्कुराता पुष्प.....157
प्यारी नानी.....158
अटकन-बटकन.....159
बचपन.....160
बचपन की वे बातें.....161
करव बिचार के.....162
जाड़ा आई.....163
गाय.....164
बन्दर भैया.....165
मेरी नानी.....166
छठ पूजा.....167
सुबह हुई.....168
छठ-पर्व.....173
लौह पुरुष को सत सत नमन.....174
हस्तलिखित पुस्तिका लेखन.....175
कृतज्ञता.....176

त्योहारों का अनुभव 177
आसमा को जमीन पर लाने वाला चाहिए 179
दीप मालिका.....180
रात्रि कहानी 181
सुखद अनुभव 183
जीवन के अनुभव 185
प्रेरणा 187
आम का पेड़ 188
ट्रेन.....190
चींटी रानी.....191
छठ पूजा 192
भारतीय साहित्य 194
बच्चे.....196
रेल चली 197
प्रकृति से सामंजस्य करें.....199
ठंडी आई 201
चित्र देख कर कहानी लिखो 202
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 202
उत्तम क्षमा धर्म 202
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 203
भाखा जनऊला.....204

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल, कुन्दन लाल साहू

प्रिय शिक्षक साथियो एवं बच्चो,

प्रतिभा किसी परिचय की मोहताज नहीं होती है. प्रतिभा व्यक्ति को एक नया मुकाम प्रदान करती है. विगत दिनों जवाहरलाल नेहरू शिक्षा समागम कार्यक्रम में ऐसे ही प्रतिभावान बच्चों से मुझे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ. बच्चे कला, साहित्य संस्कृति खेल खिलौना निर्माण, चित्रकारी में अपनी हुनर का लोहा मनवा रहे हैं. आपके विद्यार्थियों एवं आपमें भी ऐसी प्रतिभाएँ छिपी हुई है जिसे बाहर लाए जाने की आवश्यकता है. किलोल ऐसे सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को यह अवसर प्रदान करता है जो अपने लेखनी को बाहर लाना चाहते हैं. हमारे शिक्षक साथियों एवं विद्यार्थियों द्वारा लिखे गए प्रत्येक आलेख को हम अपने आनलाइन वर्जन में स्थान देते हैं. सीमित पृष्ठ होने की वजह से हम केवल कुछ रचनाओं को ही प्रिंट वर्जन में स्थान दे पाते हैं. आप सभी से अनुरोध है कि अपनी अपनी कक्षा में बच्चों के साथ किलोल की रचनाओं पर नवीन तरीकों से काम करें और हमें ईमेल से भेजें ताकि उन्हें हम अपने आगामी अंकों में स्थान दे सकें.

आप सभी से अनुरोध है कि बच्चों को प्रतिभाओं को निखारने एवं उनकी भाषाई कौशलों को संवारने हेतु किलोल में प्रकाशित रचनाओं का अपनी कक्षाओं में नियमित उपयोग करते हुए फोटो के साथ हमें ईमेल से kilolmagazine@gmail.com में भेजें. हम इन जानकारियों को आगामी अंकों में स्थान देने का प्रयास करेंगे.

आपका

आलोक शुक्ला

प्रकाशक विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, मुद्रक सलूजा ग्राफिक्स द्वारा म. न. 580/1, गली न. 17बी, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित व सलूजा ग्राफिक्स, दुबे कॉलोनी मोवा, रायपुर में मुद्रित.

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

बेटियाँ

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी

घर की जान होती है बेटियाँ,
पिता की आन बान शान होती है बेटियाँ.
बेटों से कम नहीं होती है बेटियाँ,
पिता का गुमान होती है बेटियाँ.

माँ, बहन, बहू, भाभी, पत्नी बनकर,
सेवा करती है बेटियाँ.
खुद अपमान सह,
दूसरों को मान देती है बेटियाँ.

कमियों को भुला जो मिले,
उसमें खुश रहती है बेटियाँ.
हर हाल में खुश हो,
मुस्कुराती रहती है बेटियाँ.

खुद की पहचान मिटा दूसरों की.
पहचान अपनाती है बेटियाँ.
बहू बन सास ससुर की,
सेवा करती है बेटियाँ.

सुनो जग वालों, धन मन हृदय,
सब कुछ है बेटियाँ.
लक्ष्मी सरस्वती पार्वती,
का रूप है बेटियाँ.

घर की जान होती है बेटियाँ,
पिता की आन बान शान होती है बेटियाँ.
बेटों से कम नहीं होती है बेटियाँ,
पिता का गुमान होती है बेटियाँ.

*****

चादर से कह रही रजाई

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव

वर्षा गई शरद ऋतु आई
चादर से कह रही रजाई
जाओ कहीं दुबक कर बैठो
अब तो मेरी बारी आई.

अब सब मुझको ही खोजेंगे
मुझको रातों में ओढ़ेंगे
अगर नहीं ओढ़ेंगे तो वह
सर्दी के मारे रो देंगे.

*****

गिनती गीत

रचनाकार- रंजय कुमार सिंह

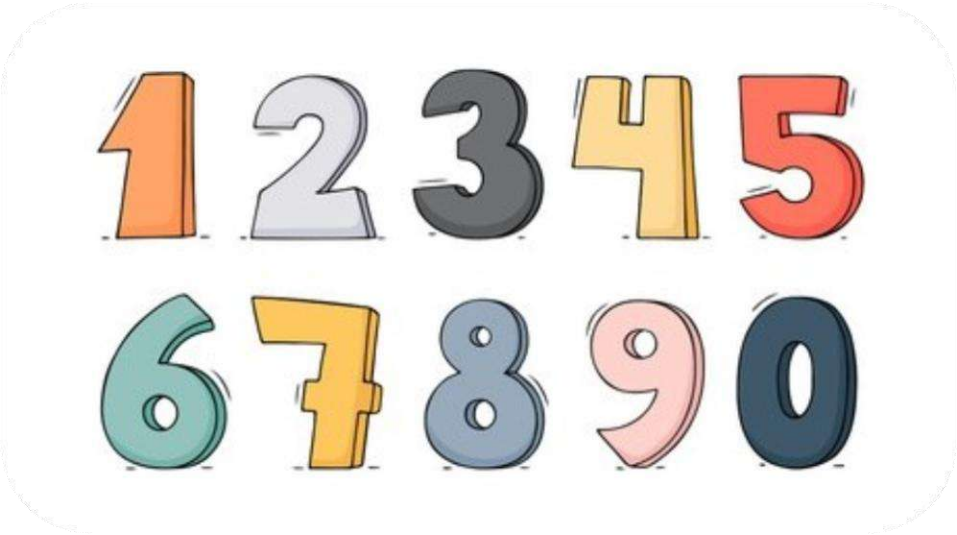

एक चिड़िया आती है, चु चु गीत सुनाती है.
दो बिल्ली के पिल्ली है, दोनों जाते दिल्ली है.

तीन गिलहरी रानी है, तीनों पीती पानी है.
चार चूहे राजा है, खूब बजाते बाजा है.

पांच लँगूर बड़े शैतान, मारे थप्पड़ खिंचे कान.
छः खरगोश है खड़े, लंबी मूंछें कान खड़े.

सात कबूतर आते है, दाना चुगकर जाते हैं.
आठ फूल खिल रहे, मस्त हवा में झूल रहे.

नौ सोने की चिड़िया है, फुदक फुदक कर गाती हैं.
हम दस मिलकर गाये गान, जय जय प्यारा हिंदुस्तान.
हम सब मिलकर गाये गान, जय जय प्यारा हिंदुस्तान.

*****

पंचतंत्र की कथाएँ

देववर्मा

एक गाँव में देववर्मा नाम का एक व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ रहता था. आजीविका का कोई निश्चित साधन न होने से दोनों का जीवन कष्टमय था.

एक दिन उनके घर कुछ अतिथि पधारे. उनके आने से गृहणी अत्यंत चिंतित हो गई. उसने अपने पति को अलग से बुलाकर कहा, "घर पर कुछ भी नहीं है जो पकाकर मैं उन्हें खिलाऊँ. जब से तुमसे ब्याह हुआ है, मेरा जीवन दुःखों से भर गया है. गहने-जेवर तो सपने हैं, कभी ढंग के कपड़े भी ना पहना सके तुम मुझे. प्रतिदिन यह चिंता कि आज भोजन मिलेगा भी कि नहीं. कैसा जीवन तुमने दिया है."

ऐसा कह कर वह अत्यंत दुखी हो गई.

देववर्मा ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "तुम्हारा वचन यद्यपि सत्य है देवी, किंतु भोजन का कुछ-न-कुछ प्रबंध तो हो ही जाता है. समय सदा एक सा नहीं रहेगा. धीरज रखो. हम सदैव यत्न कर रहे हैं. एक दिन हम अभावों से अवश्य ही मुक्त होंगे."

"आज क्या करूँ?" देववर्मा की पत्नी ने पूछा.

"आज गाँव के महाजन के यहाँ कोई उत्सव है. सुना है कि वे इस अवसर पर बहुत दान कर रहे हैं. वहीं जाकर कुछ प्राप्त करता हूँ. कुछ दिन तो चैन से बीत जाएँगे. जितना उपलब्ध हो जाए, उसका उपयोग करना और संतुष्ट रहना किंतु प्रयत्न करते रहना ही बुद्धिमानी है. अधिक लालसा करने पर ललाट पर शिखा उग आती है."

यह कह कर देववर्मा हँसने लगा.

उनकी पत्नी ने कहा, "ऐसे में भी तुम विनोद करते हो. भला ललाट पर भी कभी चोटी उग सकती है, यह क्या बात हुई?"

देववर्मा ने कहा, "सुनो! वह कथा तुम्हें सुनाता हूँ."

"एक बार एक शिकारी अपना धनुष - बाण लिए शिकार ढूँढ़ते हुए वन में घूम रहा था. अचानक ही उसने काजल के पहाड़ की भाँति विशालकाय काले वन-शूकर को देखा. थोड़ी दूर पर ही वह अपने पैने दाँतों से भूमि को खोदकर कंद निकाल रहा था. शिकारी ने अपने धनुष का संधान किया और उसकी डोरी को अपने कानों तक खींचकर बाण छोड़ दिया. वह तीक्ष्ण बाण पल भर में ही उस शूकर के कंठ के आर-पार हो गया.

किंतु इस पर भी वह शूकर गिरा नहीं. उसने शिकारी को देख लिया और तीव्र गति से उसकी और दौड़ा. शिकारी संभल पाता इसके पहले ही उसने अपने बलशाली थूथन से उस पर वार किया. शिकारी दूर जा गिरा. उसका पेट फट चुका था. थोड़ी ही देर में शिकारी और शूकर दोनों के प्राण निकल गए.

यह सारा दृश्य एक सियार छुप कर देख रहा था. वह धीरे-धीरे निश्चेष्ट पड़े उन दोनों के मृत शरीरों के पास आया. बहुत दिनों से वह सियार भूखा था किन्तु आज वह अत्यंत आनंदित था. वह सोच रहा था, आज भाग्य से इतना अधिक भोजन मिल गया कि आने वाले कई दिनों तक अब भटकना नहीं पड़ेगा.

एक पल उसके मन में विचार आया, आज जी भर कर भोजन कर लूँ. किंतु अगले ही पल वह यह सोचने लगा, थोड़ा-थोड़ा उपयोग करुँ तो यह भोजन बहुत दिनों तक बचा रहेगा.

उस अभागे और दरिद्र सियार ने इतना कुछ होने पर भी उसका उपयोग नहीं किया. धनुष में लगी आँतों से बनी डोरी को उस स्थान पर चबाने लगा जहाँ वह कमान से बंधी हुई थी. उसके दुर्भाग्य से डोरी के कटते ही कमान खींचकर सीधा हो गया और उसके कपाल को चीरता हुआ उसके आँखों के बीच से बाहर निकल आया. ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उसके ललाट पर शिखा उग आ गई है.

पल भर में सियार के प्राण-पखेरू उड़ गए. प्राप्त का उपयोग न कर उसे बचाए रखने की लालसा ने उसके प्राण ले लिए. तब से यह कहते हैं कि अत्यधिक लालसा से ललाट पर शिखा उग आती है."

देववर्मा की पत्नी ने हँसकर कहा, "अच्छा ! अब जाओ, अतिथियों के भोजन की व्यवस्था करो. मैं अच्छा समय आने की प्रतीक्षा करुँगी."

*****

बीते बचपन

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

कितना सुंदर होता बचपन,
खिल जाता था पूरा तन-मन.
कुत्ते बिल्ली घर पर आते,
चुन्नू-मुन्नू साथ खिलाते.

पेड़ो की होती हरियाली,
चढ़ते उस पर डाली-डाली.
सुंदर दिखते बाग बगीचे,
बैठ खेलते बच्चे नीचे.

बैलो की गाड़ी में चढ़ते,
आगे-आगे सब है बढ़ते.
खुला-खुला सा होता आंगन,
कितना सुंदर होता बचपन.

माँ आँगन चूल्हा सुलगाती,
भोजन उसमें रोज पकाती.
साथ-साथ मिलकर है रहते,
कभी किसी से कुछ ना कहते.

रंग-बिरंगे चिड़िया आती,
चींव-चींव की गीत सुनाती.
दौड़-दौड़ भौंरा भी आते,
पुष्प रसों को वह पी जाते.

*****

ख़्वाहिश है

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

ख़्वाहिश है नीलगगन में उन्मुक्त उड़ान भरने की.
ख़्वाहिश है सागर के अंदर गहराई में डुबकियाँ लगाने की.
ख़्वाहिश है जी भर के बेपरवाह खिलखिलाने की.
ख़्वाहिश है अपनी ही शरारतों पर मुस्कुराने की.
ख़्वाहिश है भौंरे की तरह गुनगुनाने की.

ख़्वाहिश है इंद्रधनुष के रंगों में घुल मिल जाने की.
ख़्वाहिश है उम्मीदों की किसलय बन जाने की.
ख़्वाहिश है सितारों जैसे जगमगाने की.
ख़्वाहिश है सब की मुस्कुराहटों में बस जाने की.
ख़्वाहिश है पतझड़ में भी फूल खिलाने की.

ख़्वाहिश है बारिश की बूंदों में भीग जाने की.
ख़्वाहिश है चांदनी रातों में जागते हुए तारे गिनने की.
ख़्वाहिश है बादल बनके बरस जाने की.
ख़्वाहिश है बारिशों में फिर से कागज की कश्ती चलाने की.
ख़्वाहिश है फिर से कंचे और खेलों की दुनिया में खो जाने की.

*****

जंकफूड से टाटा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

नाम लिया पिज्जा-बर्गर का,बाबा जी ने डांटा.

नूडल,फ्रूटी,कोल्ड-ड्रिंक से,कर लो एकदम टाटा.

तेज दिमाग,स्वस्थ तन पाना,

खाओ अपने घर का खाना.

चने अंकुरित,रोटी-दाल,

विटामिनों से मालामाल.

जंकफूड कैलोरी देता,करे स्वास्थ्य का घाटा.

जंकफूड से तन हो मोटा,

कर देता है बुद्धि से खोटा.

चिंता और थकान सताती,

इसकी आदत,आलस लाती.

स्वादयुक्त हैं घर के व्यंजन,खाकर उँगली चाटा.

दूध पूर्ण आहार कहाता,

सब बीमारी दूर भगाता.

लस्सी- दही फायदेमंद,

सेवन करो,मिले आनंद.

भागो,दौड़ो,खेलो कूदो, मारो सैर-सपाटा.

कर लो भैया तुम भी अब,जंकफूड को टाटा.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी –

कौवा और मोर

जंगल में रहने वाला काला कौवा न अपने रूप रंग से संतुष्ट था, न ही अपनी बिरादरी से. वह मोर जैसा सुंदर बनना चाहता था.

जब वह दूसरे कौवे से मिलता, तो कौवों के रूप रंग की बुराई कर अपनी किस्मत को कोसता कि उसने कौवा बनकर इस धरती पर क्यों जन्म लिया. साथी कौवे उसे समझाते कि जैसा रूप रंग मिला है, उसके साथ संतुष्ट रहो. पर वह किसी की बात नहीं मानता और उनसे लड़ता.

एक दिन कौवे को एक स्थान पर बिखरे हुए ढेर सारे मोर पंख दिखाई पड़े.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

मोर पंख को देखकर कौवा बहुत खुश हो गया. कौवे ने मोर के पंखों को अपने ऊपर लगा लिया और खुद को मोर समझकर मोरों के झुंड में पहुँचकर कहने लगा-दोस्त! मैं तुम सबसे दोस्ती करना चाहता हूँ. क्या तुम सब मुझसे दोस्ती करोगे? झुंड में से एक मोर ने कहा-तुम कौन हो? तुमको तो यहाँ पहले कभी नहीं देखा. कौवे ने कहा-मैं इस जंगल में नया हूँ. मोर ने कहा- ठीक है.आ जाओ, आज से तुम भी हमारे दोस्त हो. मोर के झुंड में शामिल होकर कौवा मन ही मन मोर के ना पहचानने पर बहुत खुश हुआ.

कुछ देर पश्चात वहाँ हल्की बारिश शुरू हुई. सारे मोर बारिश में खुशी से नाचने लगे. कौवे ने भी उन्हें देखकर गाना शुरू किया. वह जोर-जोर से काँव-काँव करने लगा. उसको पता भी नहीं चला कि कब पानी में भीगकर ऊपर से लगाए हुए मोर के सारे पंख नीचे गिर गए. कौवे की आवाज सुनकर और पंख देखकर सभी मोरों को पता चल गया की मोरपंख लगाकर कौवा अपने आपको मोर समझ रहा है.

कौवे ने शर्मिंदा होकर सभी मोरों से क्षमा मांगी और दुख भरी आवाज से कहने लगा कि मैं अपने रूप रंग से संतुष्ट नहीं हूँ मैं मोर जैसा सुंदर बनना चाहता हूँ. मोर के राजा ने कौवे से कहा- तुम्हें ईश्वर ने जैसा बनाया है उससे संतुष्ट

रहना चाहिए. अपनी तुलना किसी से मत करो तुम्हारे जैसा भी कोई दूसरा ईश्वर ने नहीं बनाया है. हम लोगों को देखो हम लोग राष्ट्रीय पक्षी होते हुए भी हमारा शिकार किया जाता है. हमें मारकर हमारा एक- एक पंख नोचा जाता है और बेचा जाता है. तुम्हें अंदाजा भी नहीं होगा कि मोर की जिंदगी में हरपल खतरा है और तुम मोर बनना चाहते हो. कौवे को समझ में आ गया कि मोर के समान घुट-घुट कर जीने से अच्छी हमारी जिंदगी है जो निडर होकर अपना जीवन यापन करते हैं. कौवे ने ईश्वर को धन्यवाद दिया. अब वह अपने रूप रंग से संतुष्ट है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

घमण्डी ऊँट

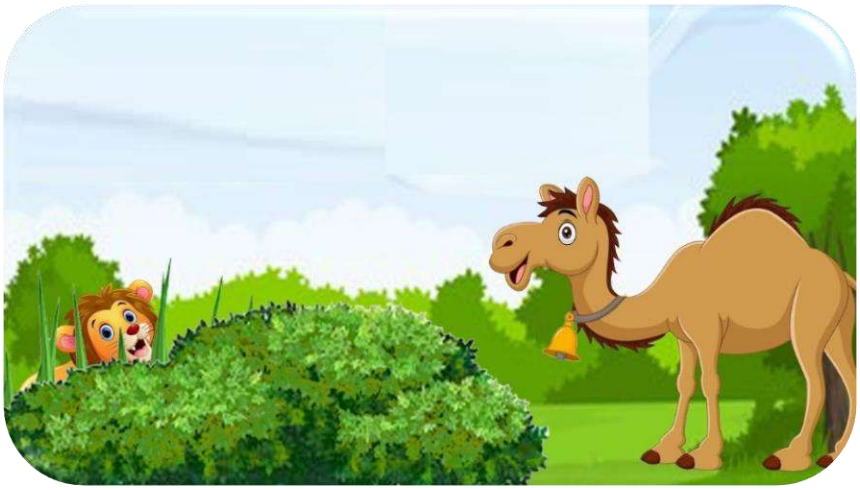

एक गाँव में एक बढ़ई रहता था. वह बहुत गरीब था. गरीबी से तंग आकर उसने लकड़ियाँ काटकर बेचने की सोची. जब वह जंगल गया तो वहाँ उसने देखा कि एक ऊँटनी प्रसवपीड़ा से तड़प रही है. ऊँटनी ने जब बच्चे को जन्म दिया तो बढ़ई उँट के बच्चे और ऊँटनी को लेकर अपने घर आ गया. ऊँटनी को खूँटी से बाँधकर वह उसके खाने के लिये पत्तों-भरी शाखायें काटने वन में गया. ऊँटनी ने हरी-हरी कोमल कोंपलें खाईं. बहुत दिन इसी तरह हरे-हरे पत्ते खाकर ऊँटनी स्वस्थ और पुष्ट हो गई. ऊँट का बच्चा भी बढ़कर तंदुरुस्त हो गया. बढ़ई ने उसके गले में एक घंटा बाँध दिया, जिससे वह कहीं खो न जाए.

ऊँटनी के दूध से बढ़ई के बाल-बच्चे भी पलते थे. ऊँट भार ढोने के भी काम आने लगा.

उस ऊँट-ऊँटनी से ही उसका व्यापर चलता था. यह देख उसने कुछ धन उधार लेकर एक और ऊँटनी खरीद लाया. उसके पास अनेक ऊँट-ऊँटनियां हो गईं. उनके लिये रखवाला भी रख लिया गया. बढ़ई का व्यापार चमक उठा.

शेष सब तो ठीक था, किन्तु जिस ऊँट के गले में घंटा बँधा था, वह बहुत गर्वित हो गया था. वह अपने को दूसरों से विशेष समझता था. सब ऊँट वन में पत्ते खाने को जाते तो वह अकेला ही जंगल में घूमा करता था.

उसके घंटे की आवाज़ से सबको यह पता लग जाता था कि ऊँट किधर है. सबने उसे मना किया कि वह गले से घंटा उतार दे, लेकिन वह नहीं माना.

एक दिन जब सब ऊँट वन में पत्ते खाकर तालाब से पानी पीने के बाद गाँव की ओर वापिस आ रहे थे, तब वह सब को छोड़कर जंगल की सैर करने अकेला चल दिया. शेर ने घंटे की आवाज सुनकर उसका पीछा किया.

इसके बाद ऊँट के साथ क्या हुआ होगा?

इसके बारे में आप सोचना शुरू करें और इस कहानी को पूरा कर हमें ईमेल से kilolmagazine@gmail.com पर भेज देवें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

*****

आज की नारी

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी

कौन कहता है इस युग में,
नारी अबला होती है
आज की दुनिया में नारी,
सबला होती है.

करुणा दया नम्रता ममता से,
उसकी परख होती है
इसका मतलब ना समझना,
वह कमजोर होती है.

नारी, लक्ष्मी सरस्वती पार्वती,
की रूप होती है
समय आने पर माँ रणचंडी दुर्गा,
काली का स्वरूप होती है.

सम्मान करो नारी का वो, ममता प्यार
वात्सल्य का स्वरूप होती है,
अपमान न करना नारी का,
आज की नारी सबला होती है.

नारी ऐसी होती है, जो सभी रिश्तो को,

एक धागे में पिरोती है,
मां बहन पत्नी बेटी बन,
हर रिश्ते को संजयोती है.

मत समझ अब अबला,
नारी सबला होकर जीती है
हर क्षेत्र में नारी आगे,
भारत की अब यह नीति है.

*****

प्यारे दादा जी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

हमें बहुत अच्छे लगते हैं, प्यारे-प्यारे दादा जी.
पढ़ना-लिखना अच्छा माने, खेल उन्हें प्रिय ज्यादा जी.

हमें जानकर हुआ अचंभा,
पापा को सकते हैं डांट.
बाहर से जब घर आते हैं,
सबको टॉफी देते बाँट.

करते शाकाहारी भोजन, जीवन सीधा-सादा जी.

नन्हे-मुन्नोंसे लगाव है,
हम सबको दुलराते हैं.
जब भी कभी हाट जाते हैं,
बढ़िया चीज़ लाते हैं.

जन्मदिवस पर ड्रेस देने का, करते पक्का वादा जी.

बात-बात में बड़े प्रेम से
योगासन सिखलाते हैं.
उन्नति हित अतिशय उपयोगी,
अनुशासन बतलाते हैं.

प्रायः धोती-कुर्ता पहनें, ओढ़ें नहीं लबादा जी.

पाँच किलोमीटर तक प्रतिदिन,
प्रातःकाल टहलने जाते.
चाय नहीं, दूध पीते हैं,
लड्डू, दही-जलेबी खाते.

जब जाते हैं गाँव तो लाते, मूंगफली का गादा जी.
तुम भी सुनो और सुनते जाओ,
ऐसे हमारे दादाजी.

*****

प्लास्टिक ईंट खेल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

हमें बहुत ही अच्छा लगता,
लेगो प्लास्टिक ईंट खेल है.
कभी बनाऊँ, कभी बिगाड़ूँ
रोचकता का अजब मेल है.

इसमें इतना मजा मिल रहा
समय का पता नहीं चलता.
निज पसंद की जोड़-तोड़ से
बहुआकृतियों में ढलता.

चाहे सुंदर भवन बना लो,
दिखें सीढ़ियाँ रंगबिरंगी.
प्लास्टिक की ईंटों से गढ़ लो
हाथी, शेर, गेंद, नारंगी.

बिना गोंद के प्लास्टिक ईंटें,
आसानी से जुड़ जाती।
छोटी सीधी रेल बना लो
तुरन्त ही देखो मुड़ जाती.

खेल बड़ा रोमांच भरा है,
खेलो खेल, खूब लो मस्ती.
खेल नयी कल्पना बढ़ाता,
कला-बुद्धि मिलती सस्ती.

ऐसा है यह रुचिर खिलौना,
बच्चे-बड़ों सभी को भाता.
इसको सकते खेल अकेले,
रहे नहीं दूजे से नाता.

*****

हमर गवइ गांव

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

सहर ले दुरिहा हे गांव के घर,
नदिया नरवा के तीर मा घर.
घास बास के बने हे घर,
डारा पाना ले सजे हे घर.
बर पिपर के छाव म घर,
बढ़ सुग्घर हे गांव के घर.
माटी मा छबाय मुदाय घर,
छुहि म लिपाय पोतय घर.
झिल्ली झिपारी वाला घर,
खपरा छानी वाला घर्.
मेयारी पटाव वाला घर,
गोबर ले घर दुवार लिपथे.
बढ़ सुग्घर घर ह दिखथे,
तुलसी चौरा सबके घर.
गऊ माता पूजे सब घर,
गाय गरु ला घर में रखथे.
गऊ माता के सेवा करथे,
छेना लकड़ी ल आगी जलाथे.
चुल्हा माटी मा खाना बनाथे,
कुआँ ले पानी ला भरथे.

काभू टेरा ल टेरत रहिथे,
होवत बिह्निया जावत खेत.
भूख पियास के नइ राहय चेत,
लिम बम्बुर् के दतवन करथे.
बततिस दात जनम भर रहिथे,
घर ले दूर नहाय ला जाथे.
तरिया डबरी मा नहाय के आथे,
बारी बखरी के साग फाजी हर.
कनौजि पतलया म अब्बड़ सुहाथे,
डोकरी दाई के अनगाकर रोटी.
पताल चटनी संग घाते मिठाथे,
मिलजुल के तिहार मनाथे.
काम बुता ला दिनभर करथे,
बैइठ भुइया मा भात खाथे.
कस के खाथे कस के कमाथे.
कोसो दूर बीमारी हर रहिथे,
घर ले दूर शौचालय रहिथे.

*****

मन के जीते जीत

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

बाधाएं तो आती है, वह आती हैं और आती रहेंगी.
तू डर मत, तू रूक मत, बस अपना
कर्म करते चल.
मन को बना ले सरिता, बाधाओं के बीच रास्ता बनाते चल.
क्योंकि मन के हारे हार है मन के जीते जीत.
जरूरी नहीं जीवन में तुझे शीतल, मंद, सुगंधित समीर मिले.
सामने गर्म पवन, सर्द हवाएं, आंधी तूफानों के चक्रवात भी आएंगे.
तू हिम्मत न हार, मन छोटा ना कर, मन को अपने सुमेरु बना.
क्योंकि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत.
क्या हुआ जो तू ठोकर लगने से औरों की तरह गिर गया.
गिरने में कोई बड़ी बात नहीं, फिर से संभल और इतिहास बना.
जिन पत्थरों से तुझे ठोकर लगी, उन्हें ही सफलता की सीढ़ी बना.
क्योंकि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत.
उलझनों के भंवर में, अगर फंसी है तेरी जीवन नैया.
इधर-उधर के लहरों के थपेड़े भी जब तुझे विचलित करने लगे.
तब भय छोड़ हिम्मत से कर सामना, मन को तू अपने पतवार बना.
क्योंकि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत.
जीवन एक संघर्ष है, तू इससे कब तक बचेगा और भागेगा.
हिम्मत से कर सामना, मन को कस, कर इस पर अपना वश.
अपनी सफलता की कहानी, स्वयं अपने कर्मों से तू लिख.
क्योंकि मन के हरे हार है, मन के जीते जीत.

*****

रिक्शा चालक

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

करे मेहनत रोज, पसीना माथ बहाते,
एक-एक पैसा जोड़, घरों में रोटी लाते.

तपती गर्मी धूप, सड़क पर चलते जाते,
दिखे सवारी राह, उसे मंजिल पहुँचाते.

देखे सपने रोज, टूट जाते हैं सारे,
पाई-पाई जोड़, सभी के बने सहारे.

किस्मत अपनी देख, हाथ को अपने मलते,
उड़ते आँखे नींद, सबेरे रिक्शा चलते.

करें मेहनत काम, नहीं होता है छोटा,
करते हैं जो शर्म, उसी का किस्मत खोटा.

रिक्शा वाला देख, लोग जो मुख को मोड़े,
आये विपत्ति पास, हाथ को अपना जोड़े.

*****

पुष्ट जानकारी

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी

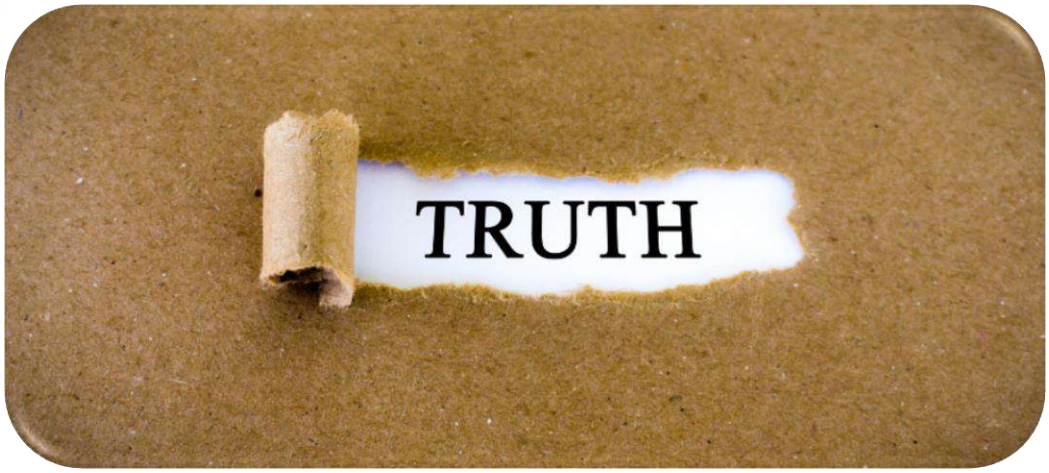

भारत में कई बार हम सुनते हैं, खासकर एक प्रदेश के बारे में कि वहाँ इतने घंटे, इन क्षेत्रों में इंटरनेट सुविधा ब्लॉक की गई है या इन क्षेत्रों में सर्वर बंद है या किया गया है. हम जानते हैं कि अफवाहों, गलत सूचनाओं और फर्जी खबरों का संचार रोकने और शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए शासन, प्रशासन द्वारा सुरक्षा कारणों से रणनीतिक तौर पर इस तरह की कार्यवाही की जाती है और फिर शांति व्यवस्था वापस आने पर संचार सुविधाएँ बहाल कर दी जाती है. मीडिया संचार का एक सशक्त, शक्तिशाली माध्यम है और इसे लोकतंत्र में चौथा स्तंभ माना जाता है. मीडिया की देश और नागरिकों के प्रति कर्तव्य और जवाबदारी है कि सत्यता को सबके सामने लाए. जनता द्वारा चुनी गई सरकारें, सरकारों द्वारा नियुक्त प्रशासन-शासन अपना कर्तव्य जनहित में निभा रहे हैं? विपक्ष की भूमिका, गतिविधियों के बारे में जानकारी, शासकीय जनहित योजनाओं की खूबियाँ, कमियाँ, भ्रष्टाचार, प्राकृतिक संसाधनों का अवैध दोहन इत्यादि अनेक मुद्दों पर सत्यता को उजागर करना मीडिया का काम है. अगर हम बड़े बुजुर्गों द्वारा कही बातों पर विचार करें तो उनके एक-एक शब्द अनमोल मोती की भाँति है जो दिशानिर्देश के काम आता है उन्होंने सत्य ही कहा था,,सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से,, वाह! क्या बात है! साथियों, यह सच है कि कोई कितनी भी अपुष्ट जानकारी, झूठी अफवाहें, गलत सूचनाएँ या फर्जी खबरें फैलाए, परंतु सच्चाई सामने आ ही जाती है, क्योंकि झूठ, सच्चाई को ज्यादा दिन छुपाने में कामयाब नहीं रहता है! जीत हमेशा सच्चाई की होती है.

पुष्ट जानकारी ही प्रभावी संचार, सुशासन, और पारदर्शिता की कुंजी है क्योंकि यही जानकारी राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डेटा का हिस्सा होती है. इसलिए शासकीय-प्रशासकीय अधिकारियों का यह प्राथमिक उत्तरदायित्व है कि पुष्ट जानकारी और डेटा ही मीडिया में जारी करें. अपुष्ट जानकारियों को फैलने से रोकने में पूरा जोर लगाना चाहिए. गलत सूचनाओं और अफवाह फैलाने वालों की पहचान कर उनपर तात्कालिक कार्रवाई करनी होगी जिससे देश का माहौल बिगाड़ने से बचाया जा सके.

दिनांक 19 अक्टूबर 2021 को माननीय राष्ट्रपति द्वारा भारतीय सूचना सेवा प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ बातचीत में पीआईबी की विज्ञप्ति के अनुसार उन्होंने भी मीडिया को एक शक्तिशाली माध्यम बताते हुए कहा कि वे चाहते है कि इस माध्यम का इस्तेमाल जिम्मेदारी के साथ किया जाए ताकि अपेक्षित बदलाव आए. उन्होंने अपनी परिचित

शैली में कहा, जुड़ें, संवाद करें और बदलाव लाएं. उन्होंने अपने आवास पर 2020 बैच के भारतीय सूचना सेवा (आईआईएस) के प्रशिक्षु अधिकारियों के एक समूह के साथ बातचीत करते हुए कहा कि सरकारों और नागरिकों के बीच की खाई को पाटनेमें जन-संचारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. उन्होंने प्रशिक्षुओं से कहा,यदि आप विभिन्न योजनाओं के बारे में लोगों को सरल और स्पष्ट भाषा में सूचित करते हैं, तो वे अपने अधिकारों और सरकारी प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं. इससे पारदर्शिता आती है. उन्होंने कहा कि पुष्ट जानकारी सरकार की तरफ से संचार की कुंजी है. उन्होंने सूचना सेवा के अधिकारियों से गलत सूचनाओं और फर्जी खबरों को रोकने पर ध्यान केंद्रित करने को कहा. उन्होंने उनसे सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषयों पर काम करने को कहा. जैसे-लैंगिक असमानता और कुछ वर्गों में वैक्सीन लगाने को लेकर हिचकिचाहट को दूर करना. उन्होंने सुशासन में प्रभावी संचार की भूमिका पर जोर देते हुए आज जन-संचारकों अर्थात पब्लिक कम्यूनिकेटर्स से लोगों को समय पर स्थानीय भाषाओं में सरकार की नीतियों की जानकारी देकर उन्हें सशक्त बनाने की अपील की.

उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से, पुष्ट जानकारी प्रभावी संचार प्रशासन और पारदर्शिता की ही कुंजी है तथा मीडिया संचार का शक्तिशाली, सशक्त माध्यम है और गलत सूचनाओं और फ़र्जी खबरों को रोकने समाज के हर वर्ग को सुजाग व सचेत रहना ज़रूरी है.

*****

स्वर गीत

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

स्वर :-
अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ
ओ औ अं अः ऋ ॠ

अ से अदरक चाय में डालो,
आ से आम रसीले खा लो.

इ से इलायची रोज खाओ,
ई से ईख चूसते जाओ.

उ से उजाला सूरज देता,
ऊ से ऊन भी गर्मी देता.

ऋ से ऋषि होते बड़े महान.

ए से एड़ी का रखो ध्यान,
ऐ से ऐनक कान पर चढ़ती.

ओ से ओखली अनाज कुटती,
औ से औरत बड़ी महान होती.

अं से अंजीर बड़ी मीठी लगती,
अः से दर्द से कहराते अः.

*****

व्यंजन गीत

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

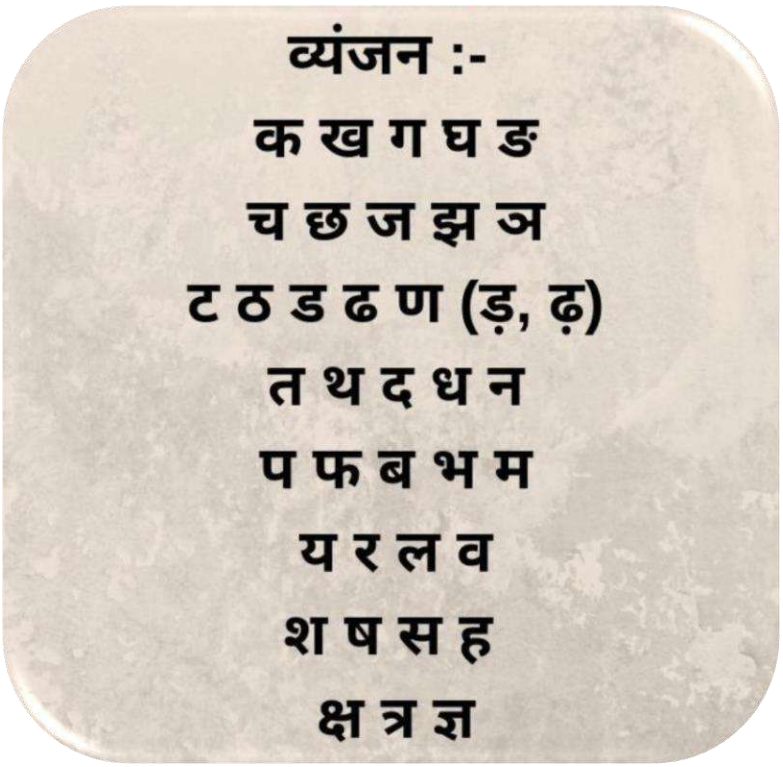

क से कमला है लक्ष्मी माता,
ख से खरबूजा सबको भाता.
ग से गगन को अंबर भी कहते,
घ से घड़ा इसमें हम पानी भरते.

च से चमके चम-चम हीरा,
छ से छतरी ओढ़े प्यारी मीरा.
ज से जगह को अपने साफ रखें,
झ से झपकाओ अपनी पलकें.

ट से टमाटर है बड़ा रसीला,
ठ से ठंड होता बड़ा सर्दीला.
ड से डमरू डम-डम बाजे,
ढ से ढक्कन सदा ढक कर रखें.

त से तकिया बड़ा मुलायम होता,

थ थरमस जिससे मैं पानी पीता.
द से दरवाजा धीरे लगाओ,
ध से धनुष पर डोरी चढ़ाओ.
न से नमक बिना कुछ ना भाता.

प से पलाश कितना सुंदर खिलता,
फ से फल ताज़ा मिलता.
ब से बढ़िया ढोलक बाजे,
भ से भक्त बन दर्शन करो.
म से मंदिर भी तुम जाया करो.

य से यज्ञ करो, बनो महान,
र से रथ चलाएं रथवान.
ल से लड़की गाना गाती,
व से वरदान मनचाहा पाती.

श से शबनम को ओस भी कहते,
ष से षटकोण देखो हंसते-हंसते.
स से सफल सब होते जाएं,
ह से हल किसान चलाएं.

क्ष से क्षत्रिय करते सब की रक्षा,
त्र से त्रिशूल शिव शक्ति का अच्छा.
ज्ञ से ज्ञान अपना बढ़ाते जाऐ,
अब हम पढ़ना लिखना सीख जाऐ.

*****

अहसासों का बंधन

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

हमारे जीवन में अनेक रिश्ते होते हैं. कुछ रिश्ते हमें जन्मजात मिले होते हैं तो कुछ रिश्ते समय के साथ बनाए जाते हैं. हर रिश्ते का अपना एक महत्व होता है.

जन्मजात रिश्तों का बंधन

कुछ रिश्ते हमें जन्मजात मिलते हैं.

यह वे रिश्ते होते हैं जो हमारे जन्म लेने से पूर्व और जन्म लेने के बाद हम से जुड़े होते हैं. जिनमें सबसे पहला रिश्ता होता है माता पिता और बच्चे का. जब हमारा जन्म होता है तो हमें माता-पिता के अलावा और भी रिश्ते स्वतः ही मिल जाते हैं जैसे कि बड़े भाई और बहन, चाचा-चाची, दादा- दादी,नानी- नाना, मामा बुआ फूफा मासी, इत्यादि. हमें ऐसे अनेक रिश्ते जन्मजात मिल जाते हैं बिना परिश्रम के. इन्हें हम खून के रिश्ते भी कहते हैं.

बनाये गये रिश्तो का बंधन

ये ऐसे रिश्ते हैं जो हमें जन्मजात नहीं मिलते हैं इन्हें हम बनाते है.

जैसे कि दोस्त, गुरु, पति अथवा पत्नी इत्यादि. ये सारे रिश्ते ऐसे हैं जो हमें समाज के साथ सामंजस्य स्थापित कर बनाने पड़ते हैं. इन्हें बनाने के लिए हम स्वतंत्र होते हैं इसे बनाते समय हम सामने वाले में बहुत सारी खूबियों को अच्छाइयों को ढूँढते हैं जो हमें पसंद होते हैं.

यूँ तो लोग कहते हैं कि खून का रिश्ता ही सबसे बड़ा रिश्ता होता है और यह कभी नहीं टूटता है. लेकिन हम देखते हैं कि जो रिश्ते हम स्वयं बनाते हैं, जो हमें जन्मजात नहीं मिले होते हैं, इन रिश्तों को बनाने के लिए हमें मेहनत करनी पड़ती है और उसके लिए धैर्य, त्याग और विश्वास की भी आवश्यकता पड़ती है.

रिश्ते में नोकझोंक चलती रहती है पर जो रिश्ते हम अपनी पसंद से बनाते हैं उन्हें संजोए रखने में हम अपना जी जान लगा देते हैं.

वास्तविक सत्य यही है कि रिश्ते चाहे हमें जन्मजात मिले हो अथवा हमारे द्वारा बनाए गए हो प्रत्येक रिश्ते की अपनी गरिमा और महत्व होता है. इस गरिमा को बनाए रखना हमारा कर्तव्य होता है. रिश्ता कोई भी हो उस रिश्ते में प्यार सहानुभूति एहसास विश्वास होना अति आवश्यक है. क्योंकि जिस रिश्ते में प्यार और विश्वास ना हो वह रिश्ता बहुत जल्दी टूट जाता है. प्रत्येक रिश्तो की यह डोर अनुबंध के धागों से निर्मित होती है. यह रिश्तो की डोर दिखाई तो देती नहीं है पर हम इसे अंतर्मन से महसूस करते हैं और यह हमारे एहसासों से होते हुए हमारे दिलों पर छाए रहते हैं. यह अनमोल रिश्ते होते हैं. यह ऐसे रिश्ते होते हैं जिन्हें हम किसी डोर से बाँधकर नहीं रख सकते बस इन्हें तो एहसासों की डोर से बाँधे रखा जा सकता है.

हम सभी की यह कोशिश होनी चाहिए कि चाहे रिश्ता कोई भी हो हमें उससे पूरी शिद्दत और सम्मान के साथ निभाना चाहिए.

*****

चाचा नेहरू का जन्मदिन आया

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

आओ बच्चों आओ बच्चों,
चाचा नेहरू का जन्मदिन आया.
लाल गुलाब की याद,
सब बच्चों को आया.

सब बच्चों से प्यार,
करते थे चाचा नेहरू.
जन्मदिन पर उपहार,
देते थे चाचा नेहरू.

सब बच्चों के मन को,
भाते थे चाचा नेहरू.
खुद हंसते थे और,
सब बच्चों को हंसाते थे चाचा नेहरू.

चौदह नवम्बर को बाल दिवस,
मनाते थे चाचा नेहरू.
दुनिया भर में धूम,
मचाते थे चाचा नेहरू.

बच्चों के संग बच्चा,
बन जाते थे चाचा नेहरू.
अच्छी अच्छी बातें सबको,
बताते थे चाचा नेहरू.

कुर्ता टोपी और कोट,
पहनते थे चाचा नेहरु.
सदा कोट कुर्ता में,
गुलाब लगाते थे चाचा नेहरू.

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री,
कहलाते थे चाचा नेहरू.
भारत की शान दुनिया में,
बढ़ाते थे चाचा नेहरू.

*****

देखो आई मछली

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

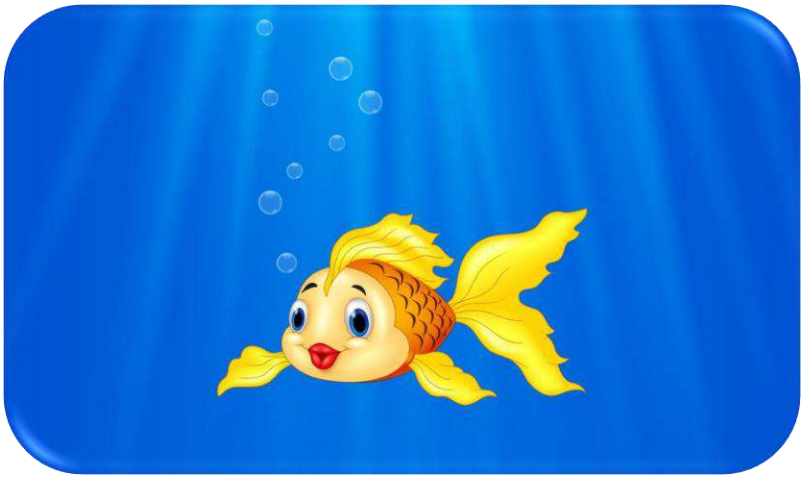

सात समुन्दर पार से,
देखो आई मछली.
मेरे हिन्दुस्तान को,
देखने आई मछली.

चीन जापान जर्मनी अमेरिका,
सब देश घुम आई.
आज उसका मन भारत को,
देखने को आई.

राम कृष्ण गौतम बुद्ध की,
वह धरती देखना चाहती थी.
सारा हिन्दुस्तान वह,
खूब घुमना चाहती थी.

उसको मेरा हिन्दुस्तान,
बहुत ही मन भाया.
मुंबई पुरी कच्छ कोलकता,
देख कर मन हर्षाया.

लाल किला कुतुब मिनार,

ताजमहल गोरखनाथ मंदिर मन भाया.
जयपुर का हवा महल,
देख कर मन हर्षाया.

घुम कर सारा हिन्दुस्तान,
रुस घुमने चली.
मछली रानी दुनिया की,
सैर करने चली.

रुस का सेंटपिटरवर्ग लाल चौक,
बहुत ही मन भाया.
रुसी लोगों से मिल कर,
मन में खुशी उमड़ आया.

कनाडा आस्ट्रेलियाई इटली,
आगे चली घुमने.
वह तो निकल पड़ी थी घर से,
सारी दुनिया को देखने.

सारी दुनिया घुम कर मछली,
घर हिन्दमहासागर लौट आई.
सभी मछलियों को उसने,
अपनी यात्रा वृतांत सुनाई.

*****

लगा हुआ है मेला

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

गाँव-गाँव में जगह जगह,
लगा हुआ है मेला.
मेले में आते हैं,
सरकस दिखाने वाले खेला.

सब बच्चों को मेला,
बहुत ही प्यारा लगता है.
मेले में तरह तरह का,
सब सामान बिकता है.

कुछ बच्चे झूले पर,
झूला खूब झूलते हैं.
कुछ बच्चे खिलौना रेल की,
सैर खूब करते हैं.

मेले में जादुगर आ कर,
दिखलाता है जादू का खेला.
सब बच्चों के मन को,
भाता बहुत है मेला.

खेल खिलौने और मिठाईयां,
मेले में खूब बिकता है.
चाट पकौड़े गोल गप्पे का,
खूब दुकान दिखता है.

हर मेले में रावण का पुतला,
हर जगह जलाया जाता है.
राम सीता हनुमान लक्ष्मण का,
खेल दिखाया जाता है.

*****

आ गया फिर जाड़ा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

चलो निकालो स्वेटर कोट,
आ गया फिर जाड़ा.
सर पर मफलर कनटोप लगाओ,
आ गया फिर जाड़ा.

ठंडी खूब बढ़ गई देखो,
आ गया फिर जाड़ा.
बच्चों और बड़ो को सताने,
आ गया फिर जाड़ा.

थर-थर बदन कांपने लगा,
आ गया फिर जाड़ा.
आग जला कर लगे तापने,
आ गया फिर जाड़ा.

रोज कोहरा लगा दिखने,
आ गया फिर जाड़ा.
सूरज की धूप मन को भाए,
आ गया फिर जाड़ा.

ओस रात भर गिरने लगा,
आ गया फिर जाड़ा.
कम्बल और रजाई ओढ़ो,
आ गया फिर जाड़ा.

*****

खजूर

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

लगे पेड़ पर फल हैं दूर.
लाल-लाल हैं पके खजूर.

मीठा फल, निर्धन का मेवा.
बच्चे-बड़ों की करता सेवा.

सूरज किरणों से पकता है.
खाओ! जल्दी पच सकता है.

प्राकृतिक शर्करा है इसमें.
पौष्टिकता गुण भरा है इसमें.

सूखा फल है 'छुहारा' होता.
गर्मी का अच्छा है सोता.

तन में ज्यादा भूख बढ़ाता.
हड्डी- दाँत मजबूत बनाता.

ऊर्जा, चुस्ती, शक्ति प्रदाता.
कोलेस्ट्राल से रखे न नाता.

मैग्नीशियम, पोटैशियम ज्यादा.
स्वस्थ रखे तन, पक्का वादा.

पाचन शक्ति करे मजबूत.
यह पौष्टिक आहार अकूत.

*****

मूँगफली

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

खा लो, खा लो मूँगफली,
लगे स्वाद में बहुत भली.

सर्दी का मौसम है आया,
मूँगफली का रूप लुभाया.
बड़ी-बड़ी है, चुनी हुई है,
ताजी खस्ता, भुनी हुई है.

अच्छी भरी हुई दानों से,
यदि खाली तो बहुत खली.

सोंधी-सी सुगंध आती है,
खाने में सबको भाती है.
एक-एक कर फोड़ो, खाओ,
मिले विटामिन, स्वास्थ्य बनाओ.

ठेलों पर हैं लगी ढेरियाँ,
धूम मची है गली-गली.

पोषक तत्त्वों से भरपूर,
दूर-दूर तक है मशहूर.
मित्रों को दो, स्वयं भी खाओ,
कहीं नहीं छिलके बिखराओ.

स्वयं डस्टबीन में डालो,
अच्छी आदत, सदा फली.
खा लो, खा लो मूँगफली.

*****

कर्म का फल

रचनाकार- मनोज कश्यप

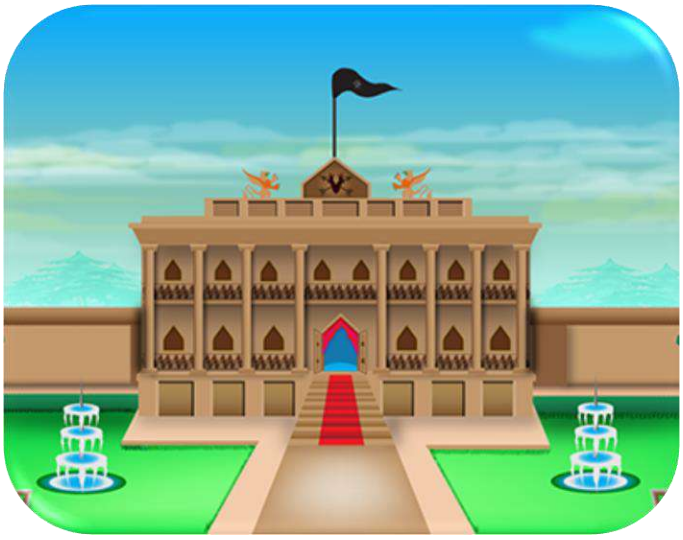

एक राजा था जो बड़ा न्यायप्रिय था. वह अपनी प्रजा के दुःख-दर्द में बराबर काम आता था. प्रजा भी उसका बहुत आदर करती थी.

एक दिन राजा वेश बदल कर अपने राज्य में घूमने निकला. रास्ते में उसने देखा कि एक वृद्ध आदमी एक छोटा-सा पौधा लगा रहा है. राजा कोतूहल वश उसके पास गया और बोला- "यह आप किस चीज का पौधा लगा रहे हो. "वृद्ध ने धीमे स्वर में कहा- "आम का. "राजा ने हिसाब लगाया कि उसके बड़े होने और उस पर फल आने में कितना समय लगेगा. हिसाब लगाकर उसने अचरज से वृद्ध की ओर देखा और कहा- सुनो दादा, इस पौधे के बड़े होने और उस पर फल आने में कई वर्ष लग जाएंगे. तब तक आप क्या जीवित रहोगे?" वृद्ध ने राजा की ओर देखा. राजा की आँखों में मायूसी थी. उसे लग रहा था कि वृद्ध ऐसा काम कर रहा है जिसका फल उसे नहीं मिलेगा. यह देखकर वृद्ध ने कहा- "आप सोच रहे होंगे कि मैं पागलपन का काम कर रहा हूँ. जिस चीज से आदमी को फायदा नहीं पहुंचता उस पर मेहनत करना बेकार है. लेकिन यह भी तो सोचिए कि इस बूढ़े ने दूसरों की मेहनत का कितना फायदा उठाया है? दूसरों के लगाए कितने फल अपनी जिंदगी में खाए हैं. क्या उस कर्ज को उतारने के लिए मुझे कुछ नहीं करना चाहिए? क्या मुझे इस भावना से पेड़ नहीं लगाने चाहिए कि उनके फल दूसरे लोग खा सकें? जो केवल अपने लाभ के लिए ही कार्य करता है वह तो स्वार्थी वृत्ति का मनुष्य होता है."

वृद्ध की यह बात सुनकर राजा बहुत ख़ुश हुआ क्योंकि आज उसे भी कुछ बड़ा सीखने को मिला था.

*****

गैया

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

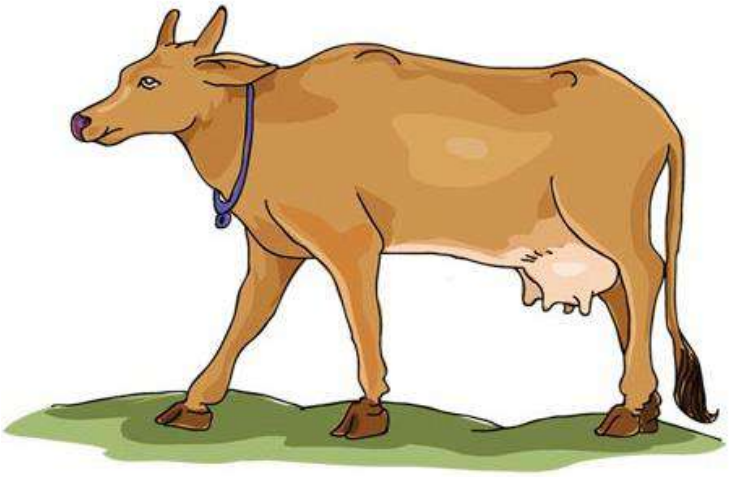

प्यारी-प्यारी गैया जी,
तुम हो मेरी मैया जी.

हरी घास, तुम खा लोजी,
उड़ा लूँ मैं कनकैया जी.

चला न देना लात कहीं,
दूध दुह रहे भैया जी.

कालू पर तुम क्यों झपटी,
जोर से बोला, दैया जी.

कितना सुंदर बछड़ा है,
घूमे खेत-तलैया जी.

*****

चिड़िया

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

घर में नन्हीं चिड़िया आयी,
'टिंउ टू टिंउ टू' पड़ी सुनायी.

धीरे-धीरे पंख फैलाती,
बार-बार वह पूँछ हिलाती.

झट जा बैठे डाली पर,
चोंच मारती जाली पर.

रस्क मजे से खाती कुर्र,
मुझे देखकर उड़ गयी फुर्र.

*****

दीपावली त्यौहार में

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

आओ साथी हम सभी देंगे सब का साथ,
दीवाली त्यौहार में,सभी बटाएँ हाथ.

सभी बटाएँ हाथ और अब साफ सफाई,
चादर कम्बल खोल, करे हम आज धुलाई.

चमकाओ घर द्वार, खुशी से झूमो गाओ,
मिलकर सारे लोग, काम सब के तुम आओ.

दीपक मिट्टी का जले, ऐसा रखना सोच,
झालर मालर फेंक दो, करो नहीं संकोच.

करो नहीं संकोच, तभी होगा उजियारा,
टिम-टिम जलते दीप, लगेगा कितना प्यारा.

यही हमारी रीत, इसी में अपना है हक,
होगा रौशन देश, जलाओ मिट्टी दीपक.

आतिशबाजी में सभी, करते पैसा खर्च,
नये पटाखे क्या बने, करते गूगल सर्च.

करते गूगल सर्च, सभी बाजारे जाते,
रंग बिरंगे देख, पटाखे घर पर लाते.

वातावरण अशुद्ध, प्रदूषण यह फैलाती,
है बीमारी पास, बंद हो आतिशबाजी.

*****

नागरिहा किसान

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

नागर, बाईला धरे कुदारी,
खेत खार ओकर संगवारी.
उठथ बिहिनिया जावत खेत,
भूख पियास हरागे चेत.
धरती ल लागिस पियास,
सुन गुहार आइस आगास.
टरर टरर मेचका नरियाय,
मोर पापिहा कोयल कुहके.
गढ़गढ़,गढ़गढ़ बादर गरजे,
झरझर झरझर पानी बरसे.
हरियर हरियर धरती होगे,
तरिया डबरी लबालब होंगे.
खेत जोत के बोइस धान,
धरती दाई के राखिस मान.
बन बुटा के निदाई करथे,
गाय गरु ले धान ल बचाथे.
जावय खेत किसनहा बेटा,
धरे चतवार निकालय लेटा.
खेत जोत के फसल उगावत,
हरियर धरती के गुनगावत.
जम्मो झन के भूख मिटाथे,

अन्नदाता वो हर कहलाथे.
पोरा म गरभ पूजा कर थे,
किस्सा कहानी करमा गावत.
सुख दुःख के गोठ गोठियात,
पिवराय धान के लुआई करथे.
बड़होना पूजा पाठ करके,
मुररा ला धान मा चघाथे.
सुर मा, मुड़ मा भारा डोहारत,
करपा,खरहि खेत म रचके.
खेत खार म बियारा बनाथे,
दौरी,ठेला,बाइलागाड़ी हाकके.
हसिया कलारी म कोड़ियावत,
पैर डारके धान ला मिजथे.
सूपा, झेझरी पंखा मा ओसाथे.
पेरा पेराउसि बियारा मा रखके,
ओसाय धान ला घर म लाथे.
धान के पूजा पाठ करके,
गुरहा चिला धान मा चघाथे.
पारा परोस म परसाद बाटके,
धान ला माई कोठी म भरथे.

*****

संघर्ष

रचनाकार- सीमा यादव

जीवन में है कष्ट बहुत, पर इनका मोचन करना है जरूर.

जीवन में है संघर्ष बहुत, पर इनका सामना करना जरुर.

जीवन में है चुनौतियाँ बहुत, पर इन्हें स्वीकारना भी है जरूर.

जीवन में है दुःख बहुत, पर दुःखों से ऊपर उठना है जरुर.

जीवन में है कठिनाईयाँ बहुत, पर इनको सरल बनाना भी है जरुर.

*****

डेंगू मच्छर

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

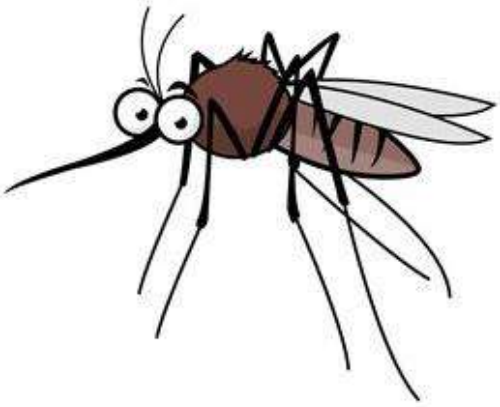

डेंगू मच्छर है शैतान,
सबको करता है हैरान.

एडीज एजिप्टी इसका नाम,
पानी में करता आराम.
वजन में कुछ भारी होता है,
ऊँचे न भर सके उड़ान.

बड़ा दुष्ट है, दिन में काटे,
घर भर में भरता फर्राटे.
बचना है डेंगू बुखार से,
काफी रखना होगा ध्यान.

पूरी बाँह के पहने कपड़े,
तन को ढके, न पाले लफड़े.
घर- बाहर की रखें सफाई,
सोएँ मच्छरदानी तान.

डेंगू ले जब पाँव पसार,
उल्टी-दस्त हो तेज बुखार.
अस्पताल में जाँच कराकर,
नियमित औषधि मात्र निदान.

फास्टफूड, मीठा कम खाएँ,
योग और आसन अपनाएँ.
दूध, दही, अंकुरित अन्न लें,
कोल्ड-ड्रिंक का करें न पान.

*****

राष्ट्रभाषा हिंदी

रचनाकार- विभा पाटकर

हिंदी अपनी राष्ट्रभाषा
हिंदी अपनी शान है,
हिंदी से ही गौरवान्वित
हिंदी से पहचान है.

हिंदी की यह विशिष्टता
सबसे घुलमिल जाती है,
उर्दू, अरबी,फारसी
सबको यह अपनाती है.

उच्चारण में भी इसके
ना कोई अंतर रहे,
है सदा समृद्धशाली,
चाहे कितने युग बहे.

भारत की संस्कृति का
करती गौरव गान है,
देश की अखंडता की
हिंदी ही पहचान है.

*****

देवारी तिहार

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

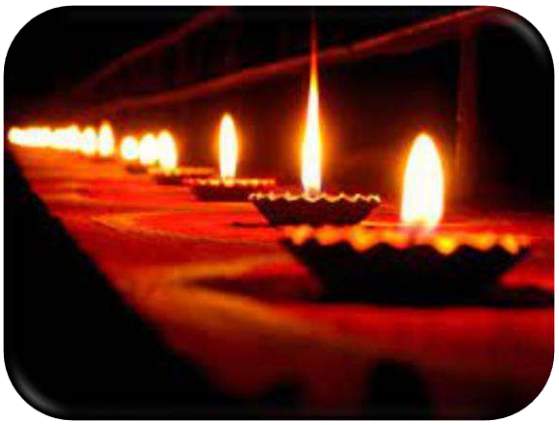

देवारी मा बढ़गे काम,
कोनो नइ करे अराम.
लीपे पोते खोर दुवार,
तब्भे मानथे ये तिहार.

बड़े बिहान सब उठ जाय,
धुर्रा माटी ला झर्राय.
घर ला उन सुग्घर चमकाय,
माटी दीया रोज जलाय.

लइका मन हा गावय गीत,
बाढ़य संगी सब के प्रीत.
एक जगा जम्मो जुरियाय,
छत्तीसगढ़ी गीत सुनाय.

बाढ़य संगी सब के शान,
राखय पुरखा मन के मान.
अपन संस्कृति ला अपनाव,
मिलजुल देवारी ल मनाव.

*****

सर्दी दीदी

रचनाकार- अशोक 'आनन'

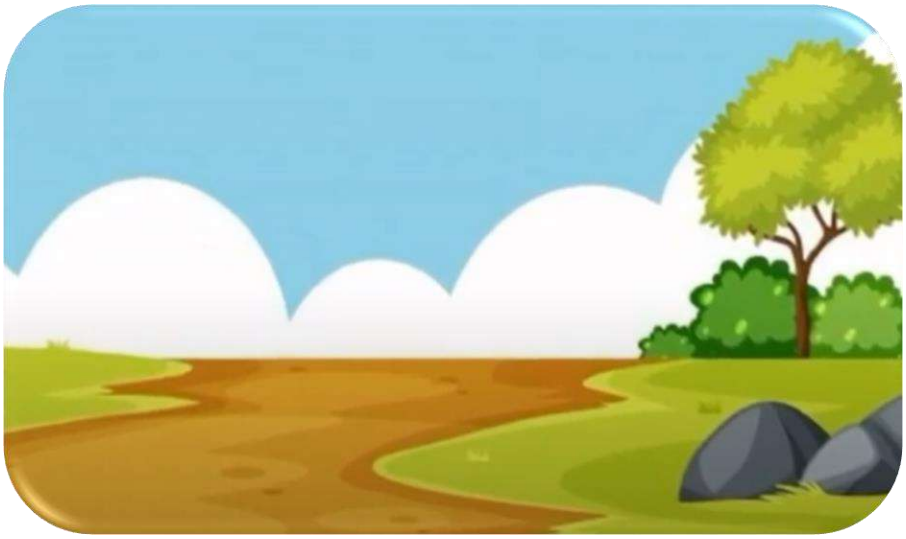

सर्दी दीदी! सर्दी दीदी!
हालत पतली कर दी दीदी,
भाव धूप के चढ़े गगन पर,
लाओ धरा पर जल्दी दीदी.

सर्द हवाएं पिन-सी चुभतीं,
यही आपसे अर्ज़ी दीदी.

सूरज के साथ धूप गुलाबी,
घर को जल्दी चल दी दीदी.
नहाते, तो लगता यूं मानों,
बर्फ बदन पर धर दी दीदी.

मार सही न जाती हमसे,
मौसम उफ्! बेदर्दी दीदी.

*****

धूप

रचनाकार- अशोक 'आनन'

स्वप्न-सलौने जैसी धूप,
देह से सोने जैसी धूप.

उछल-कूद कर धूम मचाती,
मृग के छौने जैसी धूप.

सर्दी में यह मीठी लगती,
रस के दौने जैसी धूप.

मन को जब ये बहलाती है,
लगे खिलौने जैसी धूप.

हरी दूब पर रेशम के ये,
लगे बिछौने जैसी धूप.

*****

जलेबी

रचनाकार- अशोक 'आनन'

घी में जब ये तली जलेबी.
लगी हमें तब भली जलेबी.

मीठी रस भरी जलेबी.
खाते कुरकुरी जलेबी.

मीठी गरमागरम जलेबी.
चाव से खाते हम जलेबी.

जाड़े में खूब भाए जलेबी.
खाने को जी चाहे जलेबी.

मीठे बोले बोल जलेबी.
ठंड की रानी गोल जलेबी.

*****

कोयल

रचनाकार- अशोक 'आनन'

मधुमास में आती कोयल,
पाती उसकी लाती कोयल.

डाली पर वह बैठ मज़े से,
आम कुतरकर खाती कोयल.

काली है पर, देखो फिर भी
मन को कितनी भाती कोयल.

मीठी मिश्री जैसी लगती,
बोली जब सुनाती कोयल.

बोलें मीठे बोल सभी से,
हमें यही सिखाती कोयल.

*****

दिए जलाएं

रचनाकार- भगवत पटेल

आओ फिर से दिए जलाएं.
मिलकर तम को दूर भगाएँ.
आडम्बर, प्रपंच, पाखण्ड से
हरदम दूर रहें हम.
ईर्ष्या, द्वेष कहीं न हो,
न हो कोई गम.
छल कपट के तम को हरकर
प्रेम का दीप जलाएं.
आओ फिर से दिए जलाएं.

हो समाज में समरसता
कम न हो सम्मान.
ज्ञान का दीप चलो जलाएं,
कर लें कार्य महान.
बाल विवाह औऱ कुरीति के
तम को दूर भगाएँ.
आओ फिर से दिए जलाएं.

बेटी है पराया धन
संकीर्ण है सोच विचार.
बेटा ही देगा मुखाग्नि,
है सोंच बेकार.
इन कुरीतियों के तम को
फिर से दूर भगाएं.
आओ फिर से दिए जलाएं.

पढ़ा लिखा हो हर परिवार
हर का हो सम्मान.
हुनरमंद हर एक व्यक्ति हो,
बने भारत की पहचान.
शिक्षा कादीप जला दें हम सब
आगे बढ़ते जाएं.
आओ फिर से दिए जलाएं.

*****

गीताली और गिल्लू

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

मास्टरजी की बिटिया गीताली अपनी मम्मी जैसी ही थी. गीताली सुबह जल्दी उठकर अपने पापा के साथ टहलने जाती मैदान का एक चक्कर लगाकर वापस आती फिर अपना होम वर्क करती. गीताली के तैयार होने तक मम्मी उसके लिए रोटी बनाती. गिताली रोज चार रोटी लेकर स्कूल जाती और खाने की छुट्टी में अपनी दोस्त परी के साथ स्कूल के बगीचे में अशोक के पेड़ के नीचे भोजन करती. एक दिन गीताली की नजर पेड़ के नीचे उछल-कूद करती गिलहरी पर पड़ी. गीताली को गिलहरी बहुत अच्छी लगी और वह गिलहरी को पकड़ने की कोशिश करने लगी, पर गिलहरी झट से पेड़ पर चढ़ गई.

स्कूल की छुट्टी होने पर गीताली ने घर आकर अपनी ड्राइंग बुक में गिलहरी का सुंदर चित्र बनाया और उसका नाम गिल्लू रख दिया.

अब गिताली रोज खाने की छुट्टी में एक रोटी गिल्लू को भी दे देती.

एक दिन गिताली गिल्लू को रोटी देना भूल गई तब गिल्लू गीताली के पास आकर उछल-कूद करने लगी. गीताली ने गिल्लू को रोटी दी और उसे पकड़कर घर ले आई. अब गीताली गिल्लू के साथ खेलती और उसे खाना देती .

पर मम्मी को यह सब अच्छा नही लग रहा था. एक दिन गीताली की मम्मी गीताली को बिना बताये अपने मायके चली गई. गीताली जब स्कूल से घर आई तब घर मे मम्मी को न पाकर रोने लगी.

दो दिन बाद मम्मी घर लौट आई. मम्मी को देख गीताली बहुत खुश हो गई. गीताली ने मम्मी से कहा कि मम्मी आप मुझे बिना बताये अकेली क्यों चली गई थी. आपके बिना मुझे अच्छा नही लग रहा था मुझे रोना आ रहा था.

तब मम्मी कहने लगीं कि तुम भी तो गिल्लू गिलहरी को उसके माता-पिता से दूर अकेले ले आई हो. क्या उन्हें अच्छा लग रहा होगा?

गिल्लू को भी अपने माता-पिता की याद आती होगी न? गीताली को मम्मी की बात समझ मे आने लगी और उसे अपनी भूल का एहसास होने लगा.

अगले दिन गीताली ने जैसे ही गिल्लू को उसके घर अशोक के पेड़ के पास छोड़ा,गिल्लू गिलहरी फिर से उछल-कूद करने लगी और पेड़ पर चढ़ गई. यह दृश्य देखकर गीताली बहुत खुश हो गई.

*****

शहर से अलग है गाँव के घर

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

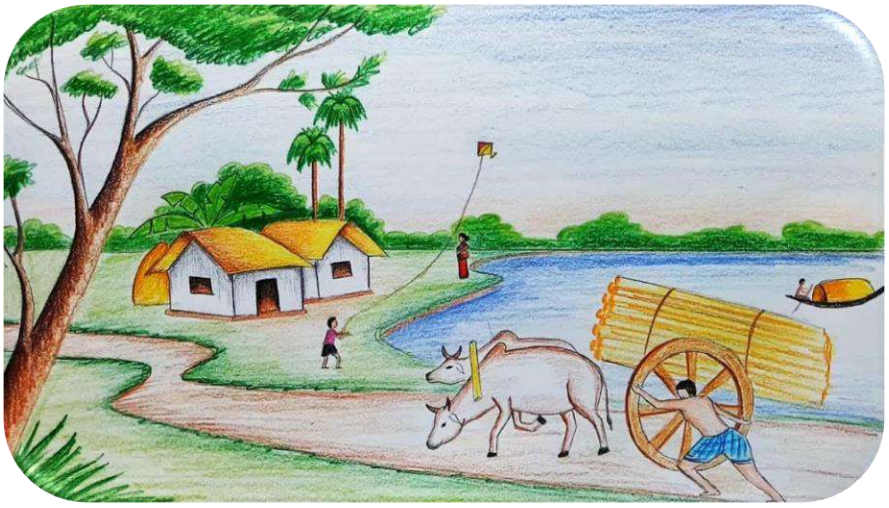

शहर से अलग है गाँव के घर,
घास मिट्टी से बने है घर.

बर पीपल के छाँव में घर,
लगते सुंदर न्यारे घर.

तुलसी चौरा सबके घर,
गौ माता पूजे घर-घर.

पशुओं को भी घर में रखते,
हरदम उनकी सेवा करते.

गोबर से घर आँगन लिपते,
स्वच्छ सुंदर घर है दिखते.

कोसो दूर बीमारी रहते,
घर से दूर शौचालय रखते.

दादा-परदादा साथ में रहते,
आपस में सब बातें करते.

रिश्ते-नाते साथ निभाते,
गीत ख़ुशी के सब हैं गाते.

बैठ जमी में खाना खाते,
मम्मी,चाची परोसा करते.

बंद दरवाजा कभी ना रखते,
मेहमानों का आदर करते.

*****

खेल-कूद

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

घर के अंदर, बाहर खेल,
गाँव, गली, शहर में खेल.
एकल और समुह के खेल,
तरह-तरह के अपने खेल.

खेल-कूद में मस्त है रहना,
स्वस्थ सदा तन-मन है रखना.
हार-जीत से कभी ना डरना,
कोशिश अंत तक है करना.

खेल हमें हर दम सिखाता,
अनुशासन का पाठ पढ़ाता.
कभी हंसाता, कभी रुलाता,
संघर्ष का मार्ग हमें दिखाता.

हार हमें यह सब बतलाता,
कोशिश करने को है कहता.
जीत हम में उत्साह जगाता,
आगे बढ़ने को प्रेरित करता.

*****

कालू बंदर

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

वन उपवन से आया बंदर,
गाँव गली और शहर के अंदर.
उछल कूद है करता रहता,
नाम है उसका कालू बंदर.

तन है काला मन है साफ,
जय श्री राम का करता जाप.
नहीं किसी से पंगा लेता,
दुश्मन को भी करता माफ़.

किचकिच दाँत दिखाता,
किसी के पास नहीं जाता
पेड़ पौधों में बसेरा करता,
फल,फूल को खूब खाता.

कुश, परी, प्रकाश आया,
साथ में अपने केला लाया.
केला देख बंदर ललचाया,
दोस्त बनकर केला खाया.

दिन भर घुमता रहता बंदर,
नहीं किसी का उसको डर.
शाम हुई तो घर के अंदर,
जंगल ही है उनका घर.

*****

बिल्ली मौसी

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

बिल्ली मौसी घूमने को जब,
घर से बाहर आई.
देख मिठाई जी ललचाई,
खाई मीठी रसमलाई.

बिल्ली को जब लगी प्यास,
दौड़ी आई किचन के पास.
देख दूध से भरा गिलास,
बढ़ गया,दूध पीने की आस.

पीकर दूध से भरा गिलास,
अपनी प्यास बुझाई.
कहने लगी बिल्ली मौसी,
अब जान में जान आई.

देख चूहे कोबिल्ली मौसी,
चुपके सेपासआई.
दावत करने चूहे का,
वोखूबदौड़लगाई.

पकड़ ना पाई बिल्ली मौसी,
रोई और पछताई.
बिलमेंघुस कर चूहा ने,
जब अपनी जान बचाई.

*****

नाम है मेरा घड़ी

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

टीक-टीक-टीक-टीक करती रहती,
दिन रात मैं चलती रहती,
ना मैं थकती,नामैंरुकती,
अपनी राह पर चलती रहती,
नाम है मेरा घड़ी.

कुश, परी, प्रकाशके घरों में,
लटका रहता हूँ दीवारों में,
गीताली के हाथ में सजती,
सुबह-सुबह अलार्म मैं बजती,
नाम है मेरा घड़ी.

संग मेरे जो साथ है चलता,
जीवन पथ पर आगे बढ़ता,
अपनी धुन पर मैं चलती हूँ,
नहीं किसी की मैं सुनती हूँ,
नाम है मेरा घड़ी.

समय के साथ काम करो,
जग में अपना नाम करो,
समय का जो करता मान,
हर जगह, वो पाए सम्मान
नाम है मेरा घड़ी.

नदियों सा मैं बहती हूँ,
सब लोगों से कहती हूँ,
आगे जब मैं बढ़ जाती हूँ,
लौटकर कभी नहीं आती हूँ,
नाम है मेरा घड़ी.

*****

सोना का पायल

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

कलेक्टर दफ्तर में काम करने वाली अंजली के पास धन दौलत बहुत थी. पर परिवार में बेटी सोना के सिवाय कोई भी न था. अंजली सुबह दफ्तर के लिए निकलती तो शाम को घर वापस आती. घर का सारा काम नौकरानी शीला करती थी.

दो दिन बाद सोना का जन्मदिन था. ऐसे में मम्मी ने सोना के लिए एक अच्छी-सी पायल लेने की सोची. अगले ही दिन अंजली अपने नौकरानी शीला के साथ पप्पू सेठ की दुकान से सुन्दर-सा पायल ले कर आई. पायल को देखकर शीला मन ही मन सोचने लगी कि "काश !मैं भी अपने बेटी टीना के लिए ऐसा ही सुंदर पायल ले पाती. "

अगले दिन शीला सोना के जन्मदिन की खुशियों में शामिल हुई. सोना को पायल बहुत पसंद आया और वह बहुत खुश थी. सोना पायल को पहन कर रोज स्कूल जाती और स्कूल से आने की बाद खूब खेल भी खेलती. सोना अपने दोस्तों के साथ पास के गार्डन में खूब खेलती-कूदती और शाम को घर वापस आती.

एक रात सोना अपने मम्मी के साथ सोई थी ऐसे में मम्मी की नजर सोना के पैरों पर पड़ी. पैरों पर पायल ना होने से पायल के गुम जाने का शक हुआ. माँ ने सोना से पूछा कि पायल कहाँ गई?अपने पैरों पर पायल ना देख सोना रोने लगी. और पायल के बारे में सोच ठीक से सो नहीं पाई. सुबह शीला के आने पर अंजली ने शीला से कहा कि सोना की पायल कहीं गुम हो गई है ज़रा ढूँढना तो. शीला घर का कोना-कोना ढूँढी पर पायल कहीं नहीं मिली. शीला जब शाम को घर आई तब अपनी बेटी टीना के पैरों में पायल देख चौंक गई. शीला पायल को पहचान गई उसने टीना से पूछा यह तो सोना की पायल है तुम्हें कहा मिली? तब टीना कहती है कि कल मैं गार्डन गयी थी. वहीं घास में पड़ी हुई मुझे यह पायल मिली और आस-पास कोई न था तो पायल मैंने रख ली.

अब शीला चाहती तो यह पायल अपने बेटी के लिए रख सकती थी लेकिन शीला ने ऐसा नहीं किया और ईमानदारी का परिचय देते हुए अपने मालकिन अंजली को पायल वापस कर दी. मालकिन शीला कि ईमानदारी से खुश हो गई और वह पायल ईनाम में शीला को वापस दे दी और उनका पगार भी बढ़ा दी. शीला का चेहरा खिल उठा. शीला ने अपनी मालकिन का शुक्रिया अदा किया और रोज की तरह घर के कामों में लग गई.

*****

बच्चों की रेल

रचनाकार- श्वेता तिवारी

छुक छुक छुक छुक करती आई रेल,
आओ मिलकर खेले खेल.
एक दूजे के पीछे अपनी,
लंबी एक बनाएं रेल.

जो है सबसे मोटा ताज़ा,
भाग बनेगा वो इंजन वाला.
सबसे आगे जाएगा,
सबको वही चलाएगा.

आगे पीछे लग कर हम,
डिब्बे बाकी बन जाएँगे.
सीधी लाइन में चलेंगे सब,
आजु बाजू नहीं मुड़ेंगे अब.

जो साथी है सबसे छोटा,
गार्ड वही रेल का होगा.
हरी लाल झंडी दिखाकर,
चलना रूकना बताएगा.

जब इंजन सिटी बजाएगा,
सब का पैर बढ़ जाएगा.
छुक छुक छुक छुक करके,
हम अब आगे बढ़ते जाएंगे.

*****

भागी बिल्ली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

बिल्ली चूहे में कभी,
ना हो सकता मेल.

दोनों में होता सदा,
लुका छिपी का खेल.

लुका छिपी के खेल में,
मगर चूहा है पगला.

पगला चूहा देख के,
बिल्ली का मन मचला.

बिल्ली बोली चलो घूमने,
चलते दिल्ली है.

पर डॉगी संग देख चूहा,
बिल्ली गई भाग बिल्ली गई भाग.

*****

भारत के प्रमुख नगरों के उपनाम

रचनाकार- कु. सुषमा बग्गा

1. कोयला नगरी- धनबाद
2. पांच नदियों की भूमि- पंजाब
3. बुनकरों का शहर- पानीपत
4. त्यौहारों का नगर- मदुरै
5. स्वर्ण मंदिर का शहर- अमृतसर
6. अंतरिक्ष का शहर- बेंगलुर
7. डायमंड हार्बर- कोलकाता
8. सात टापूओं का नगर- मुंबई
9. महलों का शहर- कोलकाता
10. इलेक्ट्रॉनिक शहर- बेंगलुर
11. नवाबों का शहर- लख़नऊ
12. पर्वतों की रानी- मसूरी
13. रैलीयों का नगर- नई दिल्ली
14. भारत का प्रवेश द्वार- मुंबई
15 . भारत का पिटसबर्ग- जमशेदर
16. इ स्पात नगरी- जमशेदपुर

*****

आओ दीप जलाएँ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

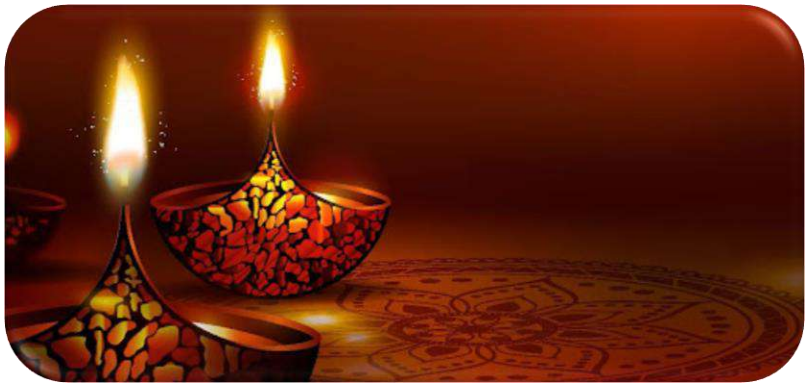

आओ हम सभी दीप जलाएँ
तन मन हो सब का उजियारा,
वसुंधरा ये दमके गगन ये दमके
दमके जग का कण-कण सारा.
आओ हम सभी दीप जलाएँ.

घर आँगन हो सबका उजला
सब का मन हो निखरा-निखरा,
सगुन-सुमङ्गल,मन-चिंतन हो
सद्गुण उद्भव अंतर-मन में हो.
आओ हम सभी दीप जलाएँ.

धन-धान्य सुख-शांति आए
समृद्धि के द्वार खुल जाए,
माँ लक्ष्मी के आशीष पाएँ
दुख-दरिद्रता से मुक्ति पाएँ.
आओ हम सभी दीप जलाएँ.

जीवन सभी का सुखमय हो
मन मे साहस और निर्भय हो,
सत्य-सद्भावना का विजय हो
मन-पावन ज्योतिर्मय मय हो.
आओ हम सभी दीप जलाएँ.

आशाओं के फूल खिलाएँ
आपस मे सब एक हो जाएँ,
आओ अब जीवन महकाएँ
राग-द्वेष सबके दूर हो जाए.
आओ हम सभी दीप जलाएँ.

दिये मिट्टी का सम्मान करें हम
अपनी धरती का मान करें हम,

अकिंचन का ख्याल करें हम
ख़ुशियों का प्रकाश भरें हम.
आओ हम सभी दीप जलाएँ.

*****

मिलजुल के रहव

रचनाकार- कलेश्वर शत्रुहन साहू

एक गांव म एक किसान रिहिस जेखर पांच बेटा-चैतराम, बेदराम, जयराम, बुधराम, सुधराम नाव के रिहिस. ये पांचो लइका म अपने-अपन भाई-भाई रोज अड़बड़ झगड़ा होवय. नान-नान गोठ बर घलो झगड़ा-लड़ई होत ते रहय. किसान बपुरा ह अपन लइकामन के झगड़ा ले तंग आ गे रिहिस. वो हर एक दिन वोमन ल समझाय भर अपन तीर बलाइस. पहिली ले पातर-पातर सुख्खा पांच टहनी के एकठन छोटकन गठरी बना ले रिहिस. अपन पांचो बेटा सो कइथे कि तुमन पांचो भाई जउन ये टहनी के गठरी ल टोरही तउन ल एक बड़का इनाम मिलहि. पांचो भाई फेर अपने-अपन झगड़ा होय लगिस कि गठरी ल पहिली मैं टोरहा पहिली मैं टोरहा कइके. उमन ल डर होगे कि कहु दूसर भाई ह मोर ले पहिली गठरी ल टोर दिही त इनाम उहि ल मिल जाही. तब किसान ह कइथे पहिली सबले छोटे भाई सुधराम ल टोरन दव. सुधराम गठरी ल उठा लिस अउ अपन सब्बो ताकत ल लगा दिस फेर गठरी ह नइ टुटिस, माथा म पछीना घलो आगिस अउ सुधराम ह दांत ल निपोर दिस. एखर बाद गठरी ल बुधराम ल दे दिस. उहू हर जोर लगाइस, फेर गठरी ल नइ टोरे सकिस. एसने पारी-पारी सब्बो भाई ह गठरी ल टोरे के ताकत लगाइस फेर कोनो भाई टहनी के गठरी ल टोर नइ सकिस. किसान ह गठरी ल छोर के एकक टहनी पांचो लइका ल दे दिस त फेर ये दनी सब्बो झन टहनी ल पड़पड़उहन टोर दिस. तब फिर किसान ह कइथे सुनव बेटा ये टहनी मन जब एक संग रिहिस त तुमन कोनो नइ टोर सकेव अउ जब ये सब्बो ह अलग-अलग होइस तहां तुमन पड़पड़उहन टोर देव. इही किसिम ले तुमन अपने-अपन झगड़हा अउ अलग-अलग रइहूं त दूसर मन तुमन ल परशान करहि, पीरा दिही, दबाहि. कहूं तुमन एक संग मिलजुलके रइहूं त तुमन ल कोनो परशान करके हिम्मत घलो नइ करय.

किसान के लइका मन उहिं दिन ले अपने-अपन झगड़ा-लड़ई ल छोड़ दिस अब मिल जुल के बने रहय लगिस . एसने कहु हमर परिवार, समाज, राज्य, देश के लोगनमन मिलजुल के रइबो त हमरो उपर कोनों बैरी मन हमन ल पीरा नइ दे सकय, समाज म होवइया घटना घलो कम हो जाहि अउ मिलजुलके रहे ले विकास घलो होही.

*****

दीपावली आई

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

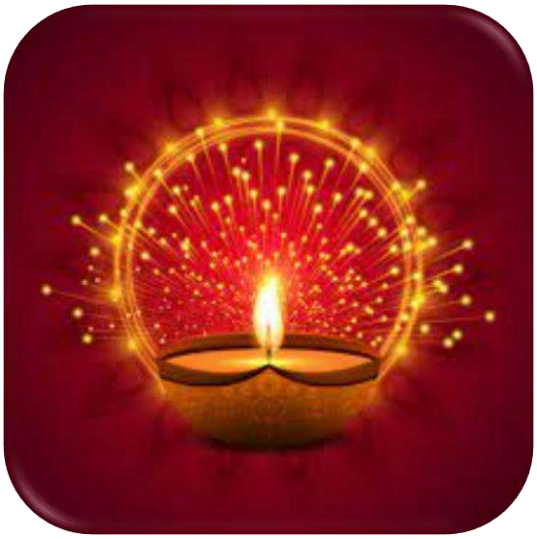

दीप जल उठे दीपावली आई
कण-कण में उजियारा छाई,
घर-आँगन में रौनकता समायी
रँग-रंगोली मन को अति भायी.

घर आँगन सुहाने लगते हैं
सब के मन को भाते हैं,
बच्चे मौज-मस्तियाँ करते हैं
खूब हंसते और मुस्कुराने लगते है.

बच्चे प्यारे-प्यारे सब
ये बड़े न्यारे-न्यारे लगते हैं,
चमकीले कपड़े पहनते हैं
बच्चे ख़ुशियाँ खूब मनाते हैं.

बच्चे फुलझड़ियाँ जलाते हैं
ये आँगन में फूल खिलाते हैं,
बच्चे खुब मिठाईयां खाते हैं
और खुशियाँ खूब मनाते हैं.

धूप-दीप से थालियां सजाते हैं
माँ लक्ष्मी की आरतियाँ करते हैं,
बतासे मिठाई से भोग लगाते हैं
सुख-शांति का आशीष पाते हैं.

*****

घर का कुलदीपक

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

बच्चों की किलकारी है,
घर-आँगन फुलवारी है.
ये घर-आँगन की रौनक है,
ये लगते बड़े मन-मोहक हैं.

घर में तुझसे ही उजास है,
तुझसे ही घर में उल्लास है.
तुझसे होता मधुमास है,
तुझसे हास-परिहास है.

तू ही तो अम्मा का दुलारा है,
तू ही तो आखों का तारा है.
तू फूलों सा बड़ा प्यारा है,
तू ही तो सबसे न्यारा है.

अम्मा की तु सुख-चैन है,
पिता के तु ही दो नैन है.
तू ही घर का कुलदीपक है,
होगा तेरा राज तिलक है.

*****

शिक्षा मानव का आभूषण है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

शिक्षा संस्कार और, नैतिक मूल्यों का दर्पण है.
शिक्षा ही आदर्श और, मानव का आभूषण है.

शिक्षा जीवन और, भविष्य का नव-निर्माण है.
शिक्षा प्रकाश है, और इससे ही मान-सम्मान है.

शिक्षा ही सुखमय, जीवन की बुनियाद है.
शिक्षा से ही मानव, गुलामी से आजाद है.

शिक्षा शांत और, स्थिर जीवन का आधार है.
शिक्षा समाधान है, अंतिम उपाय व सार है.

शिक्षा प्रकाश है, अज्ञानता को हर लेत है.
शिक्षा ही विस्वास है, शंका का समाधान है.

शिक्षा से ही चरित्रता और, बौद्धिकता बढ़ती है.
शिक्षा से आध्यात्मिकता, समग्रता आती है.

शिक्षा से ही संस्कृति है, इसी से सभ्यता है.
शिक्षा से विकास है इसी में मानवता का सार है.

*****

विज्ञान बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

1. मुखिया हूँ मैं सभी ग्रहों का,
   मुझको कहते हैं इक तारा.
   मुझसे ही जीवन संम्भव है
   करता हूँ रोशन जग सारा.

2. जिसके आँगन जीवन संभव,
   जिसको नील ग्रह सब माने.
   जो सूरज के आगे-पीछे घूमें,
   नाम बताओ तो हम माने.

3. मेरा कोई रंग नहीं है,
   मुझमें कोई गंध नहीं है.
   दो अक्षर का मेरा नाम,
   प्यास बुझाना मेरा काम.

1. सूरज, 2. पृथ्वी, 3. पानी

*****

दिवाली के दिये

रचनाकार- अशोक पटेल

रोज की तरह आज भी मैं ऑफिस के लिए निकला और जैसे ही अपने ऑफिस के नजदीक पहुँचा, कहीं से- "बाबू जी !बाबू जी!"की आवाज आती है.

मैं हड़बड़ी में था ऑफिस के लिए लेट हो रहा था, मैंने बिना विलम्ब किये, अगल-बगल को देखा और मेरे कदम ठिठक गए.

मेरी नजर सड़क के बायीं ओर बैठे एक दस साल का बच्चे पर पड़ी जो मिट्टी के दिये बेच रहा था.हर किसी आने-जाने वालों को उत्सुकता भरी निगाह में देखता और आवाज लगाता की- बाबू जी! बाबू जी! दिये ले लो! दिये लेलो!

असल में दिवाली का पर्व बहुत नजदीक था और वह बच्चा मिट्टी के दिये बेचना शुरू कर दिया था.ताकि वह भी पाइ-पाइ को इकट्ठा कर दिवाली का त्योहार धूमधाम से मना सके.

मैं उसके पास गया और बोला- 'बेटा अभी दिवाली त्योहार आने में विलंब है, मैं अभी से तुम्हारे दिये नही ले जाऊँगा जब पर्व आएगा तो मैं तुमसे ही मिट्टी के दिये खरीदूंगा."

बच्चा एक मीठी मुस्कान के साथ अपने आप को आश्वस्त कर अपने काम मे पुनः लग जाता.

"दिये ले लो दिये!"

व्यस्तता के कारण दिवाली का पर्व कब आ गया मुझे पता ही नही चला.आज आफिस के लिए सोचते हुए चला जा रहा था. बाजार, गली, चौक चौराहों पर काफी चहल-पहल है.लोग जम के दिवाली के सामान खरीद रहे हैं.तभी मुझे अचानक उस बच्चे का ख्याल आया, जिसको मैने दिये खरीदने का वादा जो किया है था.

लेकिन ये क्या?

ओ तो वहां पर कही दिखाई नही दिया, मैंने अपनी नजर इधर-उधर फैलायी, लेकिन वह बच्चा कही नजर ही नहीं आया.

और उदास मन से यह सोंचते-सोंचते ऑफिस पहुच गया की चलो कोई और मिलेगा उससे दिये खरीद लूँगा.

आज ऑफिस से जल्दी काम निपटाने के बाद मैं पूजा का सामान लेने के लिए बाजार की तरफ रवाना हुआ.बाजार काफी भीड़ थी, खूब कोलाहल हो रही थी, सब अपने-अपने सामान को बेचने के लिए आतुर हो रहे थे.

तभी मेरी नजर सड़क किनारे दिये बेचने वालों पर पड़ी.मुझे सहसा याद आई- "अरे!कहीं ओ बच्चा यहां दिये बेचने बाजार तो नही आया होगा. "और फिर मैं अपने वादे को पूरा करने के लिए उस बच्चे को यहां-वहां खूब तलाशा, लेकिन वह कहीं दिखाई नही दिया.

मुझको घर जाने के लिए देरी हो रही थी क्योकि मेरे घर में बच्चे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे और फिर मैने आनन-फानन में, खिल-बताशे, फलफूल, मिठाईयां और फुलझड़ियाँ लेकर वहां से रवाना हो गया.तब तक काफी देर हो चुकी थी थोड़ी भीड़ कम सी हो गई थी और मैं जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने लगा.

तभी सहसा किसी ने मुझे देखा और आवाज लगाई- "बाबू जी! बाबू जी! दिये ले लो! "दिये ले लो न!

मुझे लगा जैसे कोई अपना सा जाना-पहचाना मुझे आवाज लगाई हो. मेरे कदम वहां पर जड़ स्थिर हो जाते हैं, और फिर मैं खड़े होकर पीछे मुड़ने ही वाला था तभी वह बालक आकर मेरे हाथ को पकड़ लिए.मैंने उस बच्चे को झट से पहचान लिया.उसे पाकर मेरे मन मे एक आत्मिक शांति मिली.यह वही बच्चा था जिसने मुझे ऑफिस आते-जाते हमेशा "दिये ले लो न बाबू जी" कहकर हमेशा पुकारा करता था.

तभी वह बच्चा हाथ को झिंझोड़ते हुए- "चलिए न बाबू जी दिये."

कहते हुए चुप हो जाता है और अपने दिये के पास ले जाता है.जहां पर वह अपनी बूढ़ी दादी के साथ .मिट्टी के दिये बेच रहा था.जिनको देखकर लोग अनदेखा कर आगे बढ़ जा रहे थे.

मुझे देखकर उसकी दादी बोल पड़ी- "साहब मेरा यह पोता आपकी सुबह से प्रतीक्षा कर रहा था और बार-बार यह कहता रहा बाबू जी जरूर आएंगे, हमारे दिये जरूर बिकेंगे, आज हम लोग भी दिवाली मनाएंगे."इतना कहते हुए उसकी दादी का गला रुंध जाता है और आंखों में आंसू आ जाते हैं.

तभी मैंने उस बच्चे को उसके सारे दिये मेरे झोले में पैक करने को कहा, बच्चा उछल कर झट से सारे दिये पैक कर दिए.फिर मैंने उसे कुछ रुपये, फुलझड़ियाँ और मिठाईयां दी.

बच्चे के चेहरे पर रौनकता आ जाती है, वह अपनी दादी को बता-बता कर फुला नही समा रहा था.

*****

विश्व गुरु भारत

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

शिक्षा समर्पित जन-जन को, मिला सभी वर्णों को ज्ञान.
घोर तिमिर को ज्योति दिया, विश्व गुरु है यह हिंदुस्तान.

यह ऋषि-मुनियों की तपोभूमि, यहां ज्ञान की गंगा बहती है.
आओ तुम्हें मैं काबिल बना दूं, मां शारदे विश्व से कहती है.

सर्व संपदा से समृद्ध भारत, सोने की चिड़िया कहलाता है.
बैठकर पीपल की डाली में, सुख जीवन का गीत गाता है.

लोगों में था खुशहाली बहुत, आदर्श सभ्यता से जीते थे.
संस्कृतियों के दीप जलाकर, परंपरा को सदैव निभाते हैं.

आदि गुरु हैं शिव भगवान, जगत आदि योगी कहलाते हैं.
ध्यान और समाधि में लीन, सबको योग की बात बताते हैं.

कृष्ण,महावीर और बुद्ध ने, दिए हैं उपदेश योग माया का.
सिद्ध,शैव,नाथ,वैष्णव शाक्त, बता रहे प्राचीन छाया का.

वैदिक काल में शल्य गुरुदेव, इंद्र,अग्नि और सोम प्रवीण.
दो वैद्यों का हुआ आविर्भाव,अश्विनी कुमार थे बड़े निपुण.

अंग-भंग होने पर करते प्रार्थना, नए अंग लगा दो आदिदेव.
महर्षि सुश्रुत थे काय के जनक, प्रतीची देश किए छद्मवेव.

महान् गणितज्ञ जन्में धरा में, शून्य सिद्धांत दिया ब्रह्मगुप्त.
खगोल शास्त्री आर्यभट्ट ने, शून्य की खोज की विश्वसंयुक्त.

अनंत भव का वर्णन वेद में, उड़न तश्तरी की बताता बात.
मंडलाकार है हमारी पृथ्वी, घूमने से होता दिन और रात.

देववाणी प्यारी परिनिष्ठित, विश्व की है सबसे प्राचीन भाषा.
दिए हैं उपदेश जन-जन को, विधाता की कीर्ति चारण गाता.

शिक्षा का केंद्र था भारतवर्ष, गुरुओं का स्थान था सर्वोपरि.
उच्च शिक्षा में नामी नालंदा, चौंसठ शास्त्रों का ज्ञान बड़ी.

अनभिज्ञ था विश्व शिक्षा से, हिंद में शिक्षा की फुलवारी था.
गुरुकुल से लेकर जन विद्या,ज्ञान सागर में गोते लगाता था.

वैदिक से बौद्ध काल तक, भारत था शिक्षा का स्वर्ण युग.
बनकर शिक्षक पाठ पढ़ाए, विश्व शीश झुकाएगा युग-युग.

*****

द्वीपवती

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

हे! जलमाला नीर की देवी, निकलती हो तुम शिखर से.
हो तुम चंचल परी तनुजा, अडिग असितांग नीलांबर के.

चलती हो तुम लहराती हुई, दुर्गम,चढ़ाव,नितम्ब मार्गों में.
झर-झर गाती जीवन गीत, विभक्त होती हो कई सर्गों में.

श्वेत रंगों की पहनी हो साड़ी, अति निर्मल उज्जवल काया.
मोह लेती हो सभी प्राणी को, कैसी अद्भुत है तुम्हारी माया?

इंतजार कर रही पावन धरा, कब रखोगी पग मेरी छाती में?
कर लूंगी मैं त्रिपथगा स्नान, इंद्रायुध रंगों के भांति-भांति में.

धूल जाएगी तन मलिनता, बुद्धि हो जाएगी अचल अभरम.
हो जाऊंगी फिर मैं नवीन, कभी ना होगी सौम्य धरा गरम.

अपलक देख रहे हैं विपिन, सपना गुलशन नवजीवन का.
अब आकर लग जाओ गले, खिल जायेगा बहार मन का.

कब से कर रहा हूं इंतजार?, बच गया है केवल मेरी हाड़.
उजड़ चुकी है दुनिया मेरी, खड़ा हूँ बेबस बनकर पहाड़.

राह देख रहें व्याकुल जीव, पछाड़ खाकर गिर रहे वसुंधरा.
रवि अनल में जल रहा तन, मार्ग नहीं दिखता कोई दूसरा.

आ जाओ तुम उछलते हुए, मन की प्यास बुझा दो तटिनी.
रंग लो हमें भी अपने रंग में, जीवन अमृत दो स्रोतस्विनी.

रहते हैं तुम्हारे उदर समुचय, नाना प्रकार के जलीय जीव.
करते अपना भरण-पोषण, खेल खेलते बहुसंख्य अतीव.

आते सभी आंचल में छुपने, घने अरण्य से निरकुंश निरीह.
तृप्त कर अपनी आत्मा को, लौट जाते फिर से वे गृहखोह.

मन-ही-मन सोचता पीड़ा को, कहता नहीं मैं मन की बात.
तुम मूक-बधिर पशु बनके, मानुस होकर लगाते क्यों घात ?

बने हैं तुम्हारे तट में भवन, जल भरने आती बाला सुंदरी.
करके तृप्त अपने कुटुंब को, मुख आभा से प्रकट चुंदरी.

बहती धारा में स्नान करती, मिलकर सभी सोम सहेलियां.
हस-हस कर बातें करती हैं, बुझती एक दूसरे से पहेलियां.

तुम चली जा रही हो हंसते, ढलमल-ढलमल रव सदानीरा.
पिया मिलन की आस लिए, गा रही हो जीवन गीत बिरहा.

मन में आश लिए दौड़ती हो, जगत का करती हो कल्याण.
सुदूर बैठा अर्णव राह देखे, कब आओगी मेरी जीवन प्राण?

मिल जाओगी प्रीतम के गले, तुम हमें कभी ना भूल जाना.
हमें संतान समझ स्नेह करना, ऐसे ही नीर छलकाते रहना.

*****

सबले जुन्ना मंदिर देवरानी-जेठानी

रचनाकार- कलेश्वर शत्रुहन साहू

हमर ताला गांव छत्तीसगढ़ के सुघ्घर ऐतिहासिक, धार्मिक, संस्कीरितिक अउ पर्यटन ठउर आय. जउन छत्तीसगढ़ अउ भारत देश भर नइ बल्कि जम्मो दुनिया भर म परसिध हावय, जउन छत्तीसगढ़ म हम रहइया मन बर गरब के गोठ आय. लोगनमन के कहना हे कि ये गांव के सही नाव अमेरी कांपा आय फेर ये मंदिर मेरा पांच एकड़ के एकठो बड़का तरिया रहिसे तेखरे सेती ये गांव के नाव ताला गांव परिस हे. तालागांव बिलासपुर ले तीस किलोमीटर बिलासपुर-रायपुर राष्ट्रीय राजमार्ग म भोजपुरी गांव ले उत्ती म लगभग पांच किलोमीटर, बिलासपुर-रायपुर रेल रद्दा म दगौरी टेशन ले बुडती म चार किलोमीटर अउ हमर गांव लोहदा ले उत्ती म सात किलोमीटर के दुरिहा म मनियारी नदिया के तिर म बसे हे. इहां बसंती ढ़ोड़गा अउ मनियारी नदिया ह मिलथे अउ थोरकिन आगु जाके मनियारी नदिया ह शिवनाथ नदिया म मिल जाथे.

इहां के पुजारी श मुकेश गोस्वामी , फागुराम निषाद अउ उहां के सियान मन कना हमर चरचा होइस त इमन मोला अउ मोर संगवारी राजेश निर्मलकर ल बताइस कि तइहा बेरा म पौसरी गांव के रहइया स्वामी पुन्नानन्द बाबा ह भइसी, गरुवा ल चराय बर जंगल गिस. तिहा कुछ अवशेष ल देखिस अउ वोहर गांव म जाके सियान मन ल बताइस. त फेर सरकार के पुरातत्व बिभाग ह ये गोठ ल सुन के ये ठउर ल खनवाय के बुता करिस. जिहां ले ये देवरानी-जेठानी मंदिर ह निकले हे. ये मंदिर क्षेत्र ह १४.२८ एकड़ म हे. अइसे इहां के लोगनमन के कहना हे. स्वामी पुन्नानन्द बाबा ह तइहा बेरा म श्री सिद्धनाथ बाबा के नाव ले धुनी बारे हे तउन आज ले सरलग बरत हे. स्वामी जी के मठ ताला गांव के सिद्धनाथ मंदिर के बाजू म हावय.

इहां सबले पहिली बिलासपुर के वो बेरा के कमिश्नर मि. फिशर ह पुरातत्ववेत्ता जे.डी. बेगलर ल ये पुरावशेष मन के सूचना १८७३-७४ म दिस. एखर बाद २०वीं शताब्दी म पं.लोचन प्रसाद पाण्डेय ह छठे दशक म एला चिन्हारी करिस, फेर सातवें दशक म डॉ. बिष्णु सिंह ठाकुर जी ह एखर जानकारी ल सार्वजनिक करिस. अंतर्राष्ट्रीय इसतर म १९८० म अमेरिका के शोधार्थी डोनाल्ड स्टेडनर ह ताला के देवरानी-जेठानी के परकाशन छावचित्र संग करिस, ये

इसमारक ह छत्तीसगढ़ प्राचीन इसमारक अउ पुरातात्वीय इसथल व अवशेष अधिनियम १९६४ अउ नियम १९७५ के भीतर राज्य संरक्षित घोसित करें हे. एखर बाद राज्य शासन ह पुरातत्व विभाग म मिलाके अपन देखरेख करत हे.

तालागांव के वास्तुकला अनोखा हे. इहां के देवरानी-जेठानी मंदिर छत्तीसगढ़ के सबले जुन्ना मंदिर आय. देवरानी-जेठानी मंदिर के नाव ले ये गांव ह परसिद्ध हे. इहां देवी-देवता के अड़बड़ अकन मंदिर हे. देवरानी-जेठानी ताला गांव म मनियारी नदिया के तीर दूठन मंदिर हे. जउन मन ल शंकर भगवान के मंदिर माने गेहे. देवरानी-जेठानी एखर संघरा नाव गांव के लोगनमन रखे हे. डेरी कोती जेठानी अउ जेवनी कोती देवरानी मंदिर हे. देवरानी मंदिर के मुंह उत्ती कोती हावय. ये मंदिर अभी ले कुछ बने हे जउन लाल बलुआ पखरा के बने हे. ये गुप्तकालीन शिल्प इसथापत्य कला के प्रतिनिधित्व करथे. इहां जलेश्वर शिव मंदिर घलो हे ये मंदिर शिल्पगत सुघ्घर, नानकुन के नजर ले गुप्तकालीन मंदिर मन के जानकारी म बड़ अद्भुत हे. देवरानी मंदिर के डेरी कोती जेठानी मंदिर हे जेखर मुंह दक्छिन कोती हे . ये मंदिर म जाय बर उत्ती अउ बुड़ती दूनों कोती ले रद्दा रहिस. जेठानी मंदिर बनेच टूटे-फूटे के कगार म हे. तभो ले कुछ मुरति अउ फलक मुरति बने हे जउन मन ल अभी बचाय खातिर छावनी बना के रखें हे. ये कुषाण शिल्प इसथापत्य के प्रतिनिधित्व करथे. इहां के सियान मन के कहना हे कि देवरानी-जेठानी मंदिर ल शरभपुरीय वंश के दूझन रानी मन बनवाय हे. इहां बड़का-बड़का अड़बड़ अकन मुरती रहिस हे तउन मन ल पुरातत्व बिभाग ह सकेल के वोमेर एकठन कुरिया म रखें हे. देवरानी-जेठानी मंदिर के बने बेरा म लगभग ५०-६० बछर के अंतर हे ये दूनो मंदिर ल लगभग पांचवीं-छठवीं शताब्दी म शरभपुरीय काल के दुझन रानीमन बनवाय हे. तेखरे सेती इहला छत्तीसगढ़ के सबले जुन्ना मंदिर माने गेहे.

इहां देवरानी मंदिर के दुवारी म खनत खनत दुनिया के एकठन अद्भुत मुरती टीला म दबे मिलिस जेखर नावकरन अउ चिन्हारी आज तक नइ हो सकिस. एला १९८७ के बछर म भुइयां ल कोडके निकाले रहिस. ये मुरती ल वास्तु इतिहास के अलहन कहे जा सकत हे. ये मुरती के ग्यारा अंग ह अड़बड़ अकन जीव-जंतु ले बने हे. ये लगभग नौ फुट उंचा, चार फुट चाकर, अढ़ाई फुट मोटा अउ लगभग छै टन गरु लाली बलुआ पखरा के बने हे. ये मुरती ल अभी तक रूद्रशिव, महारुद्र, पशुपति, अघोरेश्वर, महायज्ञ विरूपेश्वर, यक्ष आदि नाव दे डरे हे. कइ झन एला शंकर भगवान कइथे त कइ झन अउ कुछु भगवान कइथे सही गियान बर आज ले बिवादित हे. रूद्रशिव के मुरती के मुड म नाग जोड़ी के पागा बने हे. नाक अउ चंडी म घररक्खा , आँखी गोलवा अंडवा जइसे, मेंछा ह मछरी, ठुड्डी ह केकरा, कान ह मंजूर, खांध म मंगरा के मुंडी बने हे, हाथ के अंगरी म सांप के मुंह बने हे, दूनों जांघ के बीच म लिमवान अउ दूठन घंटी छपाय हे दूनों खन्धहइया के उपर नाग फन के छांव हे, जांघ म चारठन मुंह बने हे, माड़ी म दूठन बघवा मुंह, पेट म एकठन अउ छाती म दूठन, छपे हे कुल-मिलाक़े दसठन मुडी छपे हावय. पांव कना बड़ेकजन सांप के मुडी हावय. पांचवी-छठवीं शताब्दी के ये कलाकृति शरभपुरीय राजा मन के बेरा के लागत हे काबर कि छठवीं सदी म शरभपुरीय राजा प्रसन्नमात्र के चांदी के सिक्का घलो मिले हे. इहां कल्चुरी राजा रत्नदेव प्रथम अउ प्रतापमल्ल के एकठन चांदी के पइसा तको मिले हे.

ताला गांव ऐतिहासिक, धार्मिक, संसकीरिती ठउर के संगे-संग पर्यटन केंद्र घलो आय. सियानमन कहे हे कि लोगन के बिकास, सुख, शांति अउ गियान बर पर्यटन अड़बड़ जरूरी हावय तेखरे सेती हमन ल अपन जिनगी म पर्यटन म खच्चित जाना चाही. ताला गांव सुघ्घर पर्यटन ठउर बनगे हे जिहा दुनियाभर के लोगन मन इहां अपन खाली बेरा में

घूमे बर आथे. पर्यटन केंद्र बने के कारन कइयों लोगन मन ल इहां रोजी रोटी के साधन मिलगे हे. सैकड़ो लोगनमन ये कना दुकान खोले हे जउन अपन पेट बर चार पइसा कमात हे. बेरा बेरा म लोगन ल पर्यटन केंद्र ताला गांव जाना चाही अउ अपन पीरा ल बिसराना चाही. ताला गांव ह बिल्हा जाय के रद्दा म हावय. मैं अपन इसकूल बिल्हा लइकामन ल पढ़हाय बर जाथव त हप्ता म एकात दिन जरूर इहां रुक के इहां के परकीरिति के सुख लेथव अउ ताला गांव के एतिहासिक गियान ल घलो जाने के परयास करथव. छुट्टी के दिन घलो मैं अउ मोर संगवारी अशोक बरगाह गुरुजी दूनों जाके इहां के मंदिर कना बइठथन अउ इहां के इतिहास ल जाने के घलो बुता करथन. इहां के ऐतिहासिक, धार्मिक, संसकीरिती अउ ल परकीरिति ल देख ताला गांव ले मोला अड़बड़ मया हे.

हर बछर माघ महिना के अँजोरी पाख म ताला गांव के मंदिर कना सुघ्घर सात दिन के भागवत कथा अउ तीन दिन के ताला महोत्सव होथे जउन म छत्तीसगढ़ के बड़े-बड़े कलाकर मन अपन कार्यक्रम देके छत्तीसगढ़ के लोक कला-संसकीरिती ल बगराथे संगे-संग माघी पुन्नी के दिन इहां मेला भराथे जेमा हजारों गांव के लोगन आथे अउ सुघ्घर मेला के मजा लेथे. अइसे हे हमर छत्तीसगढ़ के सुघ्घर ताला गांव.

*****

कभी चुका नहीं पाऊंगा

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.
अगले जनम में मैं फिर, तेरे लाल बनकर आऊंगा.

रख के नौ माह उदर में, मेरी पग प्रहार को सही हो.
देकर नव जन्म मुझे तुम, चिरंजीवी रहना कही हो.

प्रतीति मुझे भी होता है, कष्ट को भुला नहीं पाऊंगा.
माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.

उंगली पकड़कर मेरी तूने, चलना मुझे सिखाया था.
अनदेखे जगत के दृश्यों को, तूने मुझे दिखाया था.

गुजरे हुए पलों को स्मृति से, मैं मिटा नहीं पाऊंगा.
माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.

भूख से होता था बेहाल, दौड़कर पास में आता था.
हवा देती मुझे बिजना से, तुम्हारे हाथों से खाता था.

तुम्हारी लाड,प्यार को, किसी को दिखा नहीं पाऊंगा.
माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.

घर आता था देर से तो, बहुत डांट मुझे लगाती थी.
जल्दी आ जाया करो, यह बात हमेशा कहती थी.

देखती रहती राहों को, किसी को बता नहीं पाऊंगा.
माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.

मैं करता था कोई गलती, पिता से छुपाती थी तुम.
बुरी आदत को छोड़ दो, नैतिक सीख देती थी तुम.

रोशन करूंगा नाम तुम्हारी, नाम डूबा नहीं पाऊंगा.
माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.

तुम्हारी ही बदौलत मिला, मुझे कर्तव्य आजीविका.
दूर हो गई सारी गरीबी, रहने लगे हम सभी हर्षिता.

तुम्हारे किए उपकार को, आजीवन डूबा नहीं पाऊंगा.
माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.

विस्तार करेगा वंश को, कहके कर दी मेरी शादी.
आ गई नववधू घर में, बढ़ने लगी देश की आबादी.

रो रहे हैं बच्चें बिलख, लोरी से सूला नहीं पाऊंगा.
माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.

छिड़ गया घर में गृहयुद्ध, सास-बहू की है टक्कर.
बिगुल बजा शंखनाद से, उतरे हैं मैदान में डंटकर.

कमीं गिनाते लाख-लाख, गलती बता नहीं पाऊंगा.
माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.

घर में खींचाया सीमा-रेखा, हुई चीजों की बंटवारा.
सिर से उठा उनका हाथ, जो थे जीवन का सहारा.

अच्छे पुत्र के दायित्व को, अब निभा नहीं पाऊंगा.
माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.

इस जनम में कलह से, जननी मैं तुमसे दूर हो गया.
पत्नी की प्रेम के खातिर, मैं बहुत मजबूर हो गया.

तुम्हारे दिल को और ज्यादा, मैं दु:खा नहीं पाऊंगा.
माँ तेरी ममता का कर्ज, कभी चुका नहीं पाऊंगा.

*****

हारा नहीं हूँ मैं

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

अभी हारा नहीं हूं मैं, एक और मौका मिला है मुझे.
लड़ रहा हूं चुनौतियों से, सफल होकर दिखाऊंगा तुझे.

तू क्या समझता है मुझे?, खो दूंगा मैं अपना हौंसला.
रोते रहूंगा बैठकर हरपल, मायूस होकर मन बौखला.

क्या चुप होकर बैठ जाऊं?,ऐसा हरगिज़ नहीं करूंगा.
नए राह में कदम रखकर, कठिनाइयों से नहीं डरूंगा.

जीवन जंग में जीता नहीं तो, कर लिया अपनी आंखें नम.
कुछ दिन था उदास बहुत, सोच कर डूबा रहता था मैं ग़म.

मन-ही-मन उसी बात को, दोहराते रहता था बार-बार.
क्यों नहीं मिला मुझे मंजिल?, क्या कमी थी मुझमें सार?

मैं लायक तो नहीं इसका, नहीं-नहीं ऐसी बात नहीं है.
करूं भी तो क्या करूं मैं?, भाग्य ही मेरे साथ नहीं है.

हल-चल हो रही है मन में, उदासी लग रहा मुझे बहुत.
दिल कहता है तू फिर लड़, दिमाग कहता है थोड़ा रुक.

नहीं मानूंगा किसी की बात, करूंगा सदा अपनी मन की.
टूटने ना दूंगा हौसला अपनी, थामा हूं डोर नवजीवन की.

अभी-अभी तो चलना सीखा, दौड़ में कैसे जीत पाऊंगा?
करके तैयारियां कौशल लेकर, मैदान में लड़ने आऊंगा.

फिर देखूंगा सबको ज्ञान से, खोल कर अपनी त्रिनेत्र को.
विद्यारण भूमि में कूद पड़ूंगा, चुनकर एक ही परिक्षेत्र को.

मिलेंगे वहां कई योद्धागण, दिखाएंगे बाहुबल पराक्रम.
किए होंगे दक्षता हासिल, पैदा करेंगे लोग हरपल भ्रम.

दाएं से बाएं करेंगे वो वार, मुझे भी संभल कर खेलना है.
देने होंगे मुझे उन्हें प्रतिउत्तर, भारी आयुध मुझे झेलना है.

सीखने होंगे उनके नव तरीके, तभी जीत पाऊंगा उनसे.
यदि नहीं सीख पाया कला, हार मान लौटुंगा गुमसुम से.

अभ्यास से अर्जित होगा ज्ञान, नवशक्ति का होगा संचार.
एक बार जीतना होगा मुझे, कोशिश कर लूंगा प्रतिकार.

*****

रिश्ते-नाते

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

नाना-नानी,मामा-मामी
घर आये हमारे.
मौसा-मौसी,दीदी-भैया
साथ उनके पधारे.

दादा-दादी, मम्मी-पापा
ले आये मीठे-खारे.
बड़े प्यार से लगे परोसने,
चाचा-चाची हमारे.

बुआ-फूफा केला लाए,
मिल बैठ मजे से खाए.
सभी मिलकर करते बातें,
ठहाके दिनभर लगाए.

ताऊ-ताई दिल्ली से आए,
वहाँ से सुंदर बिल्ली लाए.
बिल्ली इनकी बड़ी सयानी,
दूध झटपट चट कर जाए.

*****

मम्मी के राजदुलारे

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

गहरी नींद में सोए,
मम्मी के राजदुलारे.
भोर हुई अब उठ भी जाओ,
ओ मुन्ना राजा हमारे.

भर कटोरी लायी मम्मी,
काजू,किशमिश,छुहारे.
झटपट उठ अब मुँह धोलो,
ओ मुन्ना राजा प्यारे.

झटपट अब स्नान कर,
स्कूल हो जा तैयारे.
प्रस्तुत है टिफिन तुम्हारा,
चाय-नाश्ता,बिस्किट करारे.

स्कूल जाना पढ़ना लिखना,
अच्छी शिक्षा पाना तुम.
नाम हमारा रोशन करना,
जग में ओ मेरे प्यारे.

*****

मेरी प्यारी नीली छतरी

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

ओ मेरी प्यारी नीली छतरी.
बहुत ही सुंदर न्यारी छतरी.

ऊँचे सुंदर नील गगन सी.
रंग आसमानी नहाये छतरी.

बारिश आती झम-झमाझम.
मुझे बारिश से बचाये छतरी.

आठ हाथ एक पैर है इनके.
धूप में भी कमाल दिखाये छतरी.

देती हरदम मेरा साथ छतरी.
चिपके रहती मेरे हाथ छतरी.

कोई भी मुझे आँख दिखाये.
रक्षा करती मेरी नीली छतरी.

*****

छुक छुक रेल

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

छुक-छुक आती-जाती रेल
पों-पों हॉरन बजाती रेल.
इस डिब्बे से उस डिब्बे में,
आपाधापी ठेलमठेल रेलमपेल.

दो पटरी पर चलती रेल,
सरपट दौड़ लगाती रेल.
गेट पर बैठा टाइमकीपर,
लाल, हरी झंडी दिखाती रेल.

खानों से कारखानों तक
झटपट आती-जाती रेल.
माल ढोकर आती रेल,
ढोकर माल जाती रेल.

बच्चे मन के होते सच्चे,
खेल रेल का खेलमखेल.
मुन्नी बिटिया बड़े मजे से
सफर करती रेलमरेल.

सामान ढोना हुआ आसान,
आसान हुआ आवागमन.
आय के हैं प्रमुख साधन,
देश की आय बढ़ाती रेल.

*****

सुशासन

रचनाकार- किशन भावनानी

सरकारों को ऐसी नीतियाँ बनाना हैं,
सुशासन को आखरी छोर तक ले जाना हैं.
लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करके,
सुखी आरामदायक बेहतर जीवन बनाना हैं.

भारतीय लोक प्रशासन को ऐसी नीतियाँ बनाना हैं,
वितरण प्रणाली में क्षमता अंतराल को दूर.
करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना हैं,
सुशासन को आखिरी छोर तक ले जाना हैं.

भारत को परिवर्तनकारी पथ पर ले जाना हैं,
सबको परिवर्तन का सक्रिय धारक बनाना हैं.
न्यूनतम सरकार अधिकतम शासन प्रणाली लाना हैं,
सुशासन को आखिरी छोर तक ले जाना हैं.

सुविधाओं समस्यायों समाधानों की खाई पाटना हैं,
आम जनता की सुविधाओं को बढ़ाना हैं.
प्रौद्योगिकी पर जोर देकर विकास को बढ़ाना हैं,
कल के नए भारत को साकार रूप देना हैं.

*****

ऊन का गोला

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

माँ ला दो मुझे ऊन का गोला,
बनाऊँ मैं इक सुंदर झिंगोला.

कड़ाके की सर्दी है पड़ रही,
नाक से दूधिया धार बह रही.

थरथर-थरथर काँप रहा हूँ,
ठंड से हूहूहूहू जाप रहा हूँ.

रोम-रोम में सिलवट आई,
ठंड से देखो ठिठुर रहा हूँ.

मन होता रंग बिरंगा पहनूँ झिंगोला,
माँ ला दो मुझे ऊन का गोला.

झिंगोला सर्दी से मुझे बचायेगा,
वह जब तन मेरे समायेगा.

ठंड में झबलेदार पहनूँ झिंगोला,
तब बड़ा मजा मुझे आएगा.

*****

दीपोत्सव

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

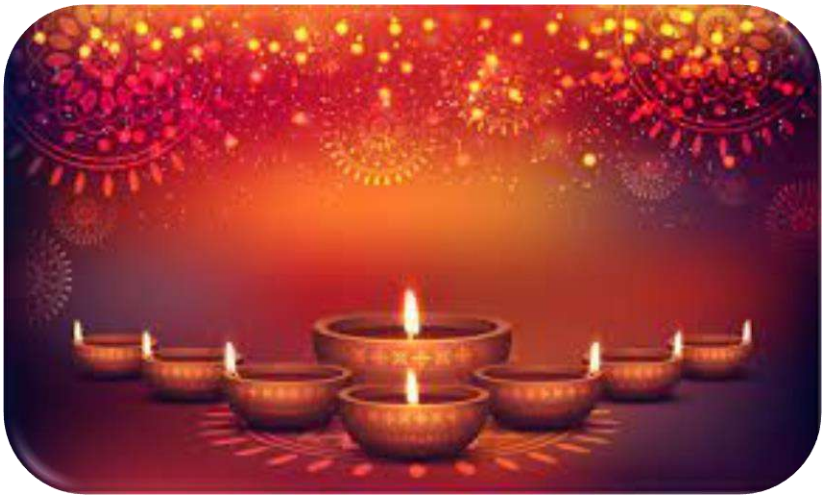

दीप जले हैं घर-आँगन में,
दीपों का त्यौहार है आया.
सबका मन हर्षित पुलकित,
सबके अंतर्मन में समाया.

घर की होगी साफ सफाई,
गाँव गली स्वच्छ बनाएँगे.
चहुँ ओर स्वच्छता की छटा,
बगिया फूलों सा महकाएँगे.

बच्चों की होगी धमाचौकड़ी,
सूट बूट में यारों संग मस्ती.
घर आँगन दीप जलाएँगे,
खुशियों से दीवाली मनाएँगे.

चाइना का होगा बहिष्कार,
होगा स्वदेशी ही स्वीकार.
कुम्हार की मेहनत से बनी,
मिट्टी के दिये जलाएँगे.

घर दुल्हन सी सजाएँगे,

मिलकर खुशियाँ मनाएँगे.
गौरा-गौरी की पूजा-अर्चना,
कलशा भी खूब सजाएँगे.

माँ लक्ष्मी की पूजा आराधना,
सुख-समृद्धि की होगी कामना.
मीत संग करेंगे धूम-धड़ाका,
जलाएँगे फूलझड़ी व फटाका.

बैरभाव को त्यागकर,
सबको गले लगाएँगे.
भाईचारे का संदेश देंगे,
गोबर्धन टीका लगाएँगे.

*****

सरसती बंदना

रचनाकार- रजनी

परनाम के लेवईय्या तै हस,
आसीस मंगईय्या हों मां मैं.

आखर ज्ञान देवईय्या तै हस,
मां तोर सीस नवावथंव मैं.

लईका हम हन माता तै हस,
ज्ञान के पियास धरे हंव मैं.

जगत के पार लगै अईय्या तै हस,
जुग में निच्चट अज्ञानी हव मैं.

इंद्रावती कस पोसईय्या तै हस,
चिरिया, चुनमुन कस परानी मैं.

ढ़ोलकल गनेस संग बिराजे हस,
शंकनी, डंकनी कस हावंव मैं.

उज्जर अंजोर मुख के तै हस,
तम के करिया कोठरी हावंव मैं.

वाणी वीणा के धरईय्या तै हस,
सप्तक, पंचम सुर के पियासु मैं.

भारत में जुग, जुग से तै हस,
नवावंव सीस जीयत भर मैं.

*****

तिरंगा

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

तीन रंगों का झंडा,
झंडा देश की शान है.
भारत माता की निशानी,
हम सबकी पहचान है.

ऊँचे आसमाँ पे फहरे,
नीचे जमीं पे नहीं ठहरे.
भारत माता की आन-बान,
तिरंगा भारत की जान है.

प्रतीक केसरिया बलिदानी,
सुख-शांति श्वेत रंग निशानी.
हरा रंग दे जाए हरियाली,
भारत माता की बात निराली.

आओ हम सब मिलकर,
तिरंगा फहर-फहर फहराएं.
तिरंगा ऊँचे नील गगन में,
शान से लहर-लहर लहराए.

*****

प्रियदर्शिनी इंदिरा

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

तुम इंदिरा हो,तुम प्रियदर्शिनी हो,
तुम नेहरू की लाडली नन्दिनी हो.

तुम पिता की राज-कुमारी हो,
तुम परिवार की राज-दुलारी हो.

तुम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हो,
तुम देशभक्त हो स्वाभिमानी हो.

तुम जन-जन भारत की आदर्श हो,
तुम नई आशा व नई विस्वास हो.

तुम पहिली महिला प्रधानमंत्री हो,
तुम नारी शक्ति की अभिव्यक्ति हो.

तुम ही भारत की नई पहचान हो,
तुम ही विश्व क्षितिज की शान हो.

तुम राजनीति की साक्षात मूर्ति हो,
तुम ही दृढ़ राजनीति की शक्ति हो.

तुम कहलाती लौह महिला हो,
तुम नेतृत्व की अद्भुत कला हो.

तुम शक्ति सामर्थ्य की प्रतिमूर्ती हो,
तुम एकता की पर्याय व शक्ति हो.

*****

भारत की पावन मिट्टी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

हे भारत की पावन मिट्टी
तुझको शत-शत वन्दन है,
तेरी मिट्टी चंदन सा पावन
तुझको मेरा अभिनन्दन है.

सूर्य सा तू दैदीप्यमान है
स्वर्णिम तेरी गाथा है,
तेरी महिमा अवर्णीय है
तेरा युगों-युगों से नाता है.

तूने ही तो सिंचित किया है
प्राचीन संस्कृति सभ्यता को,
तेरा ही तो अनुकरण किया है
यह विश्व तेरी योग्यता को.

ज्ञान-जोतिष, धर्म-आस्था का
तूने ही तो दर्शन कराया है,
वेद-पुराण,गीता,रामायण का
सृजन कर विश्व गुरु कहलाया है.

ज्ञान-भक्ति और आस्था का
ध्वज तूने ही फहराया है,
कबीर, तुलसी, सुर, मीरा, नानक
से ज्ञान का मशाल जलाया है.

जब-जब तेरी मिट्टी में
अत्याचारों का पाप बढ़ा है,
तब-तब तूने शिवा, महाराणा
जैसे वीर योद्धा को गढ़ा है.

तूने ही तो लक्ष्मी,दुर्गा और
अवन्ति, अहिल्या, अवतारा है,
इस मिट्टी की लाज बचाने
इन्होंने दुश्मन को ललकारा है.

जिसने तूझ पर बुरी नियत गड़ाई
उसको मुह की खानी पड़ी है,
चाहे यवन हो,शक हो या कुषाण
निश्चित है उसकी बलि चढ़ी है.

साइरस,डेरियस और सिकन्दर
ना जाने कितने दुश्मन आए,
सब के दाँत यहां खट्टे हो गए
भारतीय वीरों ने है धूल चटाए.

सेल्युकस,पौरस,कासिम आए
और आए नादिरशाह अब्दाली,
सभी के यहां छक्के छूट गए
सच्चे सपूत थे यहाँ बलशाली.

वीर सपूतों में महा पराक्रमी
राजा हरिश्चंद्र और चन्द्रगुप्त थे,
भारत की गौरव इन्होंने बचाई
और प्रतापी सम्राट अशोक थे.

*****

दरकते रिश्ते

रचनाकार- अविनाश तिवारी

सिमटता समय बढ़ती दूरियाँ,
दरकते रिश्ते कहां है कमियाँ.

खोता विश्वाश बढ़ता हुआ द्वेष,
गिरता ईमान छद्म है वेश.

पाश्चात्य प्रभाव छोटा परिवार,
विलुप्त संस्कार जीवन व्यापार.

बढ़ता तापमान गिरता ईमान,
पैशाचिक कृत्य निष्कृष्ट अभिमान.

खोया मान बुजुर्गो का सम्मान,
छोटा है मन ऊँचे मकान.

पिता का आदर्श माँ का ध्यान,
भूलता बचपन गुम है इंसान.

*****

सेंटा क्लाज मुझे बना दो जी

रचनाकार- श्वेता तिवारी

सेंटा मुझे बना दो जी,
मोटी तोंद लगा दो जी,
नाक गाल को खूब सजाकर,
सफेद सफेद दाढ़ी चिपका कर,
उछल-उछल कर कूद-कूद कर,
रातों को मैं घूम -घूम कर,
सबको उपहार देता हूँ.

बच्चे मुझे सब प्यार करते,
प्यार से मुझे है सेंटा कहते,
रातों-रात तोहफा दे जाऊँ,
जी करता है सैंटा बन जाऊँ.

*****

खुशियाँ त्यौहारों की

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

छन्न पकैया-छन्न पकैया, घर-घर दीप जलाये.
मम्मी पापा के सँग मिलकर, दीपावली मनाये.

छन्न पकैया-छन्न पकैया, सभी आरती गाते.
लक्ष्मी माता की पूजा करते, खुशियाँ सभी मनाते.

छन्न पकैया-छन्न पकैया, सारे द्वार सजाते.
दादा-दादी के सँग बच्चे, मिलकर धूम मचाते.

छन्न पकैया-छन्न पकैया, खिचड़ी सभी बनाते.
गौ माता की पूजा करते, गौ को भोग लगाते.

छन्न पकैया-छन्न पकैया, भैया दूज मनाते.
नये-नये पकवान बनाकर, मिलकर सब हैं खाते.

छन्न पकैया-छन्न पकैया, टिम टिम करते तारे.
जगमग करता द्वार सभी का, लगते कितने प्यारे.

*****

पूस की रात

रचनाकार- सीमा यादव

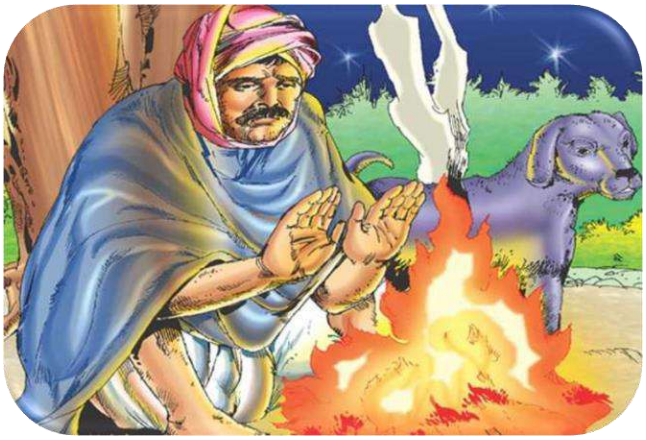

पूस की रात बड़ी सुन्दर लगती है,
गरम कपड़े से सारा शरीर ढँका होता है.

जब ठंडी-बर्फीली हवा चलती है ,
सारा बदन थर-थर काँपने लगता है.

धूप की किरणे बड़ी मीठी लगती हैं,
भोजन का स्वाद कई गुना बढ़ जाता है.

चारों तरफ फूलों की महक होती हैं,
जिंदगी बहुत खूबसूरत लगती है.

गली-खोर की सुन्दर रंगोली,
जीवन में सात रंग भर देती हैं.

पूस का मौसम बहुत अच्छा लगता है,
सुन्दर मीठे फल खाने को मिलता है.

रंग-बिरंगी साग-सब्जी से,
रसोई घर की शोभा बढ़ जाती है.

*****

भाई दूज

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

भारतीय सनातन धर्म में आस्था,विश्वास का अलग ही महत्व है, तभी यहाँ विविध प्रकार के रीति,रिवाज परम्पराएँ देखने मिलती हैं. यही हमारी धरोहर है और हमारे सनातन धर्म की पहचान है. इसी कारण हमारे देश मे अनेक जाति,धर्म,रीति रिवाज के बाद भी सद्भावना,भाईचारा,आपसी प्रेम,और अनेकता में एकता देखने मिलती है. जिसे देखकर हम मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रह सकते.

इन सांस्कृतिक परम्पराओ के अंतर्गत एक पर्व ऐसा भी आता है जिसमें भाई बहन के अटूट प्रेम को प्रदर्शित किया जाता है. भाई अपनी बहन के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हुए उसकी सुरक्षा, उसके मान सम्मान का प्रण लेता है.

इस पर्व का नाम है "भाई दूज".

भाई दूज वर्ष में दो बार आता है,होली और दीवाली में. यह पर्व होली के दूसरे दिन और दीवाली के तीसरे दिन "भैया दूज" के नाम से मनाया जाता है.

इस पर्व के सम्बंध में बहुत सुंदर कथा आती है-

शास्त्रीय कथानुसार सूर्य की पत्नी संज्ञा थी,उनकी दो संताने हुईं; यम और यमुना.सूर्य के तेज को संज्ञा सहन न कर सकी और बिना बताए कहीं चली गई.

यम और यमुना आपस मे बहुत स्नेह करते थे.

यमुना हमेशा अपने भाई यम के यहाँ आना जाना करती और अपना सुख-दुख बाँटा करती.

हर बार लौटते समय अपने भाई यम को अपने यहाँ आने का आग्रह करती.

लेकिन यमराज अपनी व्यस्तता के चलते अपनी बहन के यहाँ जा नही पाते. एक बार कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया के दिन यमराज अचानक अपनी बहन के घर पहुँच गए. वहाँ पहुँचने से पहले उन्होंने नरक के जीवों को मुक्त कर दिया. यमुना प्रसन्न हो जाती है, उनकी खूब आव-भगत करती है,उनको अनेक व्यंजन परोसती है. फिर यमुना भाई के भाल पर तिलक लगाती है. भाई प्रसन्नचित होकर वरदान माँगने को कहते हैं.

तब बहन यमुना ने भाई से कहा कि-

"तुम प्रतिवर्ष इसी दिन मेरा आतिथ्य स्वीकार करो और जो भी भाई अपनी बहन का आतिथ्य स्वीकार करे. वहाँ भोजन के पश्चात बहन भाई के भाल पर तिलक लगाएँ तो उसके सारे भय दूर हो जायें. इस दिन यदि भाई बहन यमुना नदी में स्नान करें तो वे यमराज के प्रकोप से बच जाएँगे.

यमराज ने बहन यमुना की प्रार्थना स्वीकार कर ली, तभी से भाई बहन के पवित्र प्रेम का यह पर्व भाई दूज मनाया जाने लगा.

आज हमें अपनी संस्कृति सभ्यता को संजोने की आवश्यकता है, हमारी आस्था और विश्वास हमारी पहचान है, जो देश को एकता के सूत्र में पिरोने का काम करती है.

*****

फूलों की मुस्कान

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

आ गयी अब ठंडी रानी,
फूलों की मुस्कान निराली.

पेड़ों की ऊँची डाल पर,
मानों उनके भाल पर.
पत्तियों की शान निराली,
फूलों की मुस्कान निराली.

हरी-भरी सी कलियाँ,
भीगी-भीगी सी पंखुड़ियाँ.
भौंरें की तान निराली,
फूलों की मुस्कान निराली.

बड़ी महक हवाओं में,
चहुँ ओर फिज़ाओं में.
तितलियों की आन निराली,
फूलों की मुस्कान निराली.

*****

एक बंदरिया छत पर आई

रचनाकार- राजेन्द्र श्रीवास्तव

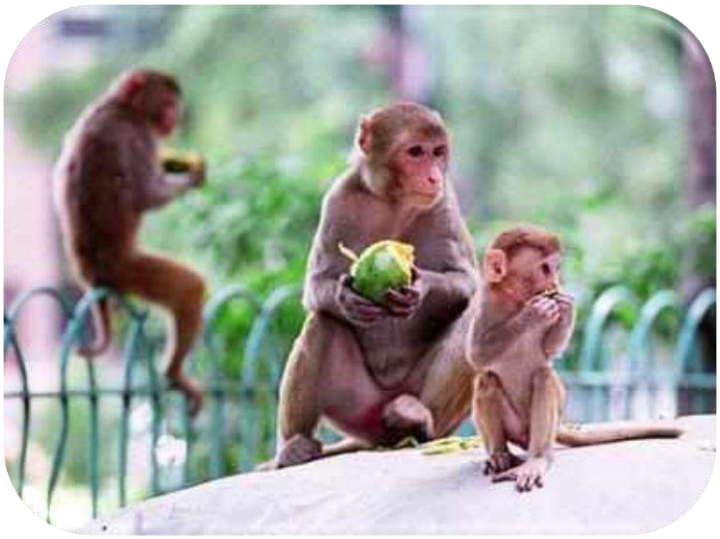

एक बंदरिया छत पर आई,
अपने दो बच्चों को लाई.
बिस्किट तीन वहाँ पर पाए,
एक-एक तीनों ने खाए.

चार छतों पर कूदे-भागे,
पाँच बजे पापाजी जागे.
छह फिट लम्बी लाठी लाए,
सात सीढ़ियाँ चढ़ कर आए.

आठ बार लाठी दिखलाई,
मम्मी नौ बिस्किट ले आई.
तीन-तीन बिस्किट खा बढ़िया,
सुबह दस बजे गई बंदरिया.

*****

सुरभित सदन

रचनाकार- अविनाश तिवारी

सदन सुरभित है वही,
मातृ-पितृ की छाँह हो.
हो दीप आलोकित यहीं,
जहाँ मन इनका सुवास हो.

बन गई अट्टालिकाएं देख,
महल विशाल मुस्का रहा.
बिन रिश्तों के साज सज्जा,
रास न इनको आ रहा.

है वही सम्पन्नता जहां,
मान हो सम्मान हो.
बुजुर्गों के आशीष की छाया,
हर सदन बिद्यमान हो.

जुगनुओं की चमक देख,
लड़ियाँ लगा लो चांद की.
एक मुस्कान खिला के देखो,
घर के इस भगवान की.

*****

खेलें खेल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

करें पढ़ाई, खेलें खेल,
मित्रों के संग रखना मेल.

छुपमछुपाई संग जमें,
गुल्लीडंडा और गुलेल.

भागें-दौड़ें, पकड़ें-धकड़ें,
तोड़ें-खाएँ, इमली-बेल.

सोनू बैठा है मुड़ेर पर,
देखो! देना नहीं ढकेल.

खड़े हों एक दूजे के पीछे,
चले धूम से छुकछुक रेल.

मार पिटाई मत करना,
डांट पड़ी, जाएँगे झेल.

कालू बैल मरखना है,
उसे डालकर रखें नकेल.

*****

टेड़ा

रचनाकार- कलेश्वर शत्रुहन साहू

हमर छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान अउ गांव के राज आय. हमर छत्तीसगढ़ के ज्यादा लोगन गांव म रइथे अउ इँहा के अधिकांश लोगन मन कृषि म निर्भर हे. खेती किसानी गांव के परमुख बुता आय. गांव के लोगन मन के गुजर-बसर पूरा म पूरा खेती किसानी म चलथे. किसानी गांव के आर्थिक विकास के साधन आय. जेखर बिना गांव के विकास नइ हो सकय. फेर खेती किसानी बर बिक़टन कन साधन मन के घलो जरूरत पड़थे जइसे बिजहा, खातू, मजदूर, पानी आदि. एमा के कोनो भी साधन के बिना खेती के बुता पूरा नइ होवय. आज काल लोगन ल ए सब बर सरकारी सुविधा घलो मिलत हे. किसान ल बैंक म कर्जा मिल जाथे, बैंक ले खातू मिल जाथे, सरकार सो उन्नत बिजहा, पानी पलोय बर पम्प घलो आदि मिल जाथे. जेखर ले खेती के आधुनीकरण होगे हे.आधुनीकरण के चक्कर म हमन अपन परम्परागत खेती ल भुलावत जातहन.

एक दिन मैं अउ लोकेश टेसवा नदिया के वो पार हमर पड़ोसी गांव ककेड़ी साग-भाजी लेबर मानसिंग मरार के बारी गेन जिहा हमन टेड़ा देखेन. टेड़ा ल देख के मोर मन ह गदगद होगिस अउ मोला अपन गांव के भावर (बाड़ा बारी) के सुरता आगिस. तइहा बेरा म हमर बबा-ददा मन बारी के साग-भाजी, फसल ल पानी दे बर टेड़ा ल बउयर, जउन अब धीरे धीरे नंदात हे. अभी के लइकन म तो टेड़ा का हरे तेनो ल नइ जानय. कहूँ पूछ देथन त उल्टा का टेड़ा कइथे ? एक बेरा रहिन जब सबो के कुँआ बारी म टेड़ा रहय. टेड़ा सड़क म लगे नाका जइसन दिखथे.

टेड़ा ल बनाय बर एकठक लंबा लकड़ी या बांस लागथे जेखर पाछू म पथरा या माटी लगाथे लकड़ी के आगु म डोरी ले टीपा के बने बाल्टी ल लगाथे. किसान मन अपन पाव रखे बर लकड़ी के अड़गा रखथे जेन म खड़ा होके किसान ह टेड़ा के डोरी म बंधाय बाल्टी ले कुँआ,तरिया, नदिया के पानी निकालथे अउ माटी के बनाय नाली होवत पानी ह फसल म जाथे. टेड़ा ले पानी पलोय के बुता ह उथली कुँआ, भरे तरिया-नदिया म बने बनथे अउ सुघ्घर पानी निकालत बनथे. लइका रहेंव त महू ह इसकूल ले आके अपन बाबू संग टेड़ा ल टेरव त बड़ा नीक लागय. टेड़ा

किसान मन सुघ्घर सिंचाई के साधन आय एखर अड़बड़ अकन फायद घलो हे जइसन नहाय बर पानी निकालथे, अउ नहाय पानी ह साग-सब्जी, फसल म जाथे जेखर ले हमर पानी खइता होय ले घलो बच जाथे.

टेड़ा ह एक बेरा किसान मन बर सुघ्घर सिंचाई के साधन रहिन जउन अब धीरे-धीरे नंदात हे. टेड़ा के नंदाय के पाछू कईठन कारन हे कृषि म बिज्ञान के प्रभाव के संगे-संग पानी के स्रोत ह घलो नीचे होवत जाथे जेखर ले टेड़ा म पानी पलोय म समस्या होथे.

*****

क्रिशमस का त्यौहार है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

आज आया क्रिसमस का त्यौहार है,
बच्चों को सेंटा-क्लॉज का इंतजार है.
सेंटा-क्लॉज लाया प्यारा उपहार है,
ये करते सदा बच्चों से बेहद प्यार है.

बच्चों के मन में उत्साह समाया है,
आज बच्चों में देखो उमंग आया है.
आज बच्चों के मन में किलकारी है,
आज घर-घर में रौनक फुलवारी है.

आज बच्चे सुंदर चमक-दमक रहे हैं,
बच्चे आज खूब चहक-फुदक रहे हैं.
आज बच्चे फूलों सा महक रहे हैं,
आज ये बच्चे मनमोहक लग रहे हैं.

आज बच्चे उमंगों की उड़ान भरते हैं,
ये बचपन की यादों में खोते जाते हैं.
आज बच्चे क्रिसमस की देते बधाई है,
एक दूसरे को केक मिठाई खिलाई है.

*****

तितली

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह

रंग-बिरंगे पंखो वाली,
तितली कितनी सुंदर है.
इस डाली से उस डाली पर,
उड़-उड़ कर यह फिरती है.

चार पंखों वाली तितली,
फूलों के रस को पीती है.
लाल पीले गुलाबी बैंगनी,
फूलों पर मंडराती है.

तितलियाँ है बड़े काम की.
परागण में सहायक होती है,
जिससे फूल, फल में परावर्तित हो जाती है.
यह छोटी तितली भी,
खाद्य श्रृंखला की इकाई है.

चलो उगायें रंग बिरंगे,
फूलों की हम क्यारी.
ताकि रंग-बिरंगी तितली,
हमेशा रहें ऐसी प्यारी.

*****

पिचील-पिचील पैरा

रचनाकार- रजनी शर्मा

आज सोनू बहुत खुश थी. वह अपने माता-पिता के साथ गाँव जा रही थी. उसका गाँव बस्तर में था. जहाँ उसका गाँव था वहाँ ज़्यादातर लोग गोंडी भाषा बोलने वाले थे. गाँव पहुँचते ही सोनू का मन खिल गया. घर के पास ही खलिहान से उड़ती सौंधी महक धान की. वह अपना सिर ऊपर करके देखने लगी पैरावट की ढ़ेर को. इतने में वहाँ गाँव के कुछ बच्चे भी आ गये.

बिना किसी भूमिका के उनसे सोनू की दोस्ती हो गई. सोनू ने पैरावट को दिखा कर उनसे पूछा कि ये क्या है? एक ने कहा "खड़". हल्बी में पैरावट को खड़ ही तो कहते हैं ना. कुछ अन्य बच्चे "गोंडी" में कहने लगे "पिचील-पिचील". सोनू को उन सभी बच्चों के साथ पैरावट में फिसलने में और खेलने में बड़ा मज़ा आया. अब वह यह भी जान गई थी कि पैरावट को गोंडी में पिचील कहा जाता है. सब गा-गा कर खेलने लगे "पिचील-पिचील पैरा".

*****

हस्तलिखित पुस्तिका

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

बच्चों की कल्पनाओं को,
देता एक मुकाम है.
कविता कहानियों से रचा बसा,
सुंदर चित्रों का सजा संसार है.

बड़े प्यार से इसमें हमने,
चुनचुन मोती सजाएं हैं.
सबको जो भा जाए,
वह प्यारे गीत बनाए हैं.

हम किसी से कम नहीं,
यह सच कर दिखलाया है.
हमने भी हस्तलिखित पुस्तिका,
अपना अपना बनाया है.

*****

दिया और बाती

रचनाकार- वंदिता शर्मा

दीवाली है आई है,
चारों ओर जगमग छाई,
यह कहानी है दिए और बाती की.

दिवाली ऐसी है आयी,
दिशाएं दीपों से छाई,
मंद-मंद मचल रहा था चिंराग,
अंधियारे को मिटाने, जग में ज्योत जगाने.
एक छोटा-सा दीया था कहीं जल रहा,
लौ की धुन में मगन, उजियारी की है लगन,
उसकी लौ में लगन भगवान की.
यह कहानी है दीये और बाती की.

कहीं दूर था त्योहार,
कहीं दूर था इस, दीये को जलाने को है दिल है मगन
सारे जग को जगमगाने मचल रहा.
एक नन्हा-सा दीया,
बाती ने एक ज्योत दिया,
अब देखो लीला विधि के विधान की.
यह कहानी है दीये और बाती की.

दुनिया ने साथ छोड़ा, ममता ने मुख मोड़ा,
अब दीये पे यह दुख पड़ने लगा,
पर हिम्मत न हार, मन में मरना विचार.
अंधियारी को मिटाने लड़ने लगा.
यह कहानी है दीये और बाती की.

फिर ऐसी घड़ी आई
दीपावली है दीपों का त्योहार
घनघोर अंधियारी मिटाने को,
भगवान राम को याद करने
तब दीया इंतजार में हैं खड़ा
चौदह बरस वनवास
राम के लौटने की आस
एक दिया बाती को लेकर खड़ा.
यह कहानी है दीये की और बाती की.

*****

कहानी से मिलती है शिक्षा

रचनाकार- सीमा यादव

खरगोश-कछुए की कहानी, ढेला-पत्ता की कहानी, बंदर-लोमड़ी की कहानी, राजा-रानी की कहानी इत्यादि शिक्षाप्रद कहानियाँ हमारे जीवन को बहुत अधिक प्रभावित करती हैं. इसी प्रकार पंचतंत्र की कहानियों से हमें जीवन के नैतिक-अनैतिक पक्ष को समझने में आसान होती है. कहानी हमारे जीवन को गति देती है. प्रायः हिंदी फ़िल्में या कार्टून्स हमें किसी महत्वपूर्ण कहानी या कथा से जोड़े रखती है. हर कहानी में एक सुन्दर संदेश छिपा होता है. पत्र-पत्रिकाओं की कहानियों में भी सही-गलत, सत्-असत्, अच्छा-बुरा इत्यादि से सम्बद्ध चरित्रों का समावेश होता है. प्राचीन कथाएँ हमारे मन मस्तिष्क को सही दिशा देने की माध्यम होती हैं. अतीत की बातें, परिवेश, स्थिति संस्कृति को हम कहानी के द्वारा सरलता व सहजता के साथ समझ पाते हैं.

बच्चों को प्रेरणादायी व शिक्षाप्रद कहानी अपने दैनिक जीवनचर्या में सुनने-सुनाने की आदत विकसित करने की अत्यंत आवश्यकता है. कहानी लोककथा, किम्वदन्ती आदि स्रोतों से प्राप्त की जाती है. अतः आज के तकनीकीकरण व मशीनीकरण के अत्याधुनिक युग में कहानी की रुपरेखा बदल गयी है. जिससे बच्चों का ध्यान कहानी के प्रति अनाकर्षित व उदासीनता भरा हो गया है जो कि निकट भविष्य में इसके प्रति सचेत होने की अत्यंत आवश्यकता है.

*****

हमारे प्रेरणास्रोत

शहीद-ए-आजम उधम सिंह

बच्चो, आज हम सुनाते हैं भारत माँ के एक वीर सपूत उधम सिंह की जीवन-गाथा, जिनके सर से बचपन में ही उनके माँ- बाप का साया उठ गया था और उन्हें अनाथालय में रहना पड़ा. अनाथालय में रहकर ही उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की. उनका जन्म 26 दिसंबर 1899 को पंजाब के संगरूर जिले के सुनाम गाँव में हुआ था.

बच्चो, आज के हमारे प्रेरणा स्रोत उधम सिंह के बारे में बताने से पहले मुझे जलियांवाला बाग के कांड को जरूर बताना होगा. आइए जानते हैं उस दिन वहाँ क्या हुआ था?

जलियांवाला बाग कांड भारतीय इतिहास का वह स्याह पन्ना है, जिसने सब कुछ बदल कर रख दिया. 13 अप्रैल 1919 बैसाखी का दिन था. पंजाब में यह त्यौहार बहुत हर्षोल्लास से मनाया जाता है. उस दिन जलियांवाला बाग में लाखों की संख्या में लोग अंग्रेज सरकार द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों की गिरफ्तारियों के विरुद्ध प्रदर्शन करने के लिए इकट्ठा हुए थे. उस वक्त भारत पर अंग्रेजों का राज था और भारतीयों की कोई सुनवाई नहीं होती थी. ब्रिटिश सरकार ने एक आदेश के द्वारा किसी भी तरह की भीड़ और सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया था. इस विरोध प्रदर्शन के बारे में जब ब्रिटिश सरकार को पता चला तब उस वक्त पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर मिशेल ओ डायर के आदेश पर जनरल डायर को वहाँ भीड़ पर काबू करने के लिए भेजा गया. जनरल डायर ने सबसे पहले बाग से बाहर निकलने वाले सभी रास्तों पर अपनी सेना को खड़ा कर दिया. कोई बाहर न निकल सके इसलिए सभी गेट बंद कर दिए गए. उसके बाद बिना किसी पूर्व सूचना के वहाँ उपस्थित लोगों पर गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं. बाहर निकलने के सभी रास्ते बंद थे. रास्ता न पाकर कुछ लोगों ने गोलियों से बचने के लिए बाग के कुएँ में छलाँग लगा दी. अंग्रेजी हुकूमत तो बर्बरता पर उतर आई थी. उन्होंने उन लोगों को भी नहीं बख्शा वह कुएँ में उनके ऊपर लाशें फेंकने लगे. जिससे दम घुटने से उनकी भी मौत हो जाए. इस घटना में 15000 से भी ज्यादा लोगों की मौत हो गई. घायल हुए लोगों में जिंदा बचने वालों में से उस दिन एक 18 साल का लड़का भी था. जो उस दिन वहाँ अपने भाइयों के साथ लोगों तक पानी पहुँचाने का काम कर रहा था.

जी हाँ बच्चों यह 18 साल का लड़का शहीद ए आजम उधम सिंह ही था जिन्होंने तभी निर्णय लिया था कि वह एक दिन इस हत्याकांड का बदला जरूर लेंगे. कहते हैं जब जलियावाला कांड को अंजाम दिया गया तब हमारे देश के एक और शहीद भगत सिंह भी जेल से रिहा हुए थे. शहीद भगत सिंह भी वहाँ घटनास्थल से मिट्टी उठाकर घर ले आए थे. इस घटना का विरोध किया था और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया. उधम सिंह जी भगत सिंह से काफी प्रभावित हुए थे. वह उन्हें अपना गुरु मानने लगे. इस घटना के बाद उधम सिंह ने अनाथालय छोड़ दिया. भगत सिंह के कहने पर गदर पार्टी ज्वाइन करके अमेरिका में रहने लगे.

गदर पार्टी की स्थापना का मकसद भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ एक राष्ट्रव्यापी सशस्त्र संघर्ष छेड़ना था. पार्टी के अध्यक्ष बाबा सोहन सिंह भकना को बनाया गया तथा लाला हरदयाल के नेतृत्व में प्रशांत तट पर सैन फ्रांसिस्को मे हिंदी संघ के रूप में इसे स्थापित किया गया. गदर पार्टी के अधिकांश सदस्य किसान वर्ग से संबंधित थे. जिन्होंने पहली बार बीसवीं सदी के शुरुआत में पंजाब से एशिया के शहरों जैसे हांगकांग, मनीला और सिंगापुर में प्रवास करना शुरू कर दिया.

जनरल रेजीनाल्ड डायर जो जलियांवाला बाग की घटना का जिम्मेदार था उसकी मौत 1920 में ही हो गई थी. लेकिन जिस डायर को उधम सिंह ने मारा था वह उस वक्त पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर मिशेल ओ डायर थे. क्योंकि उन्हीं के आदेश पर इस खूनी खेल को शुरू करने का आदेश रेजीनाल्ड डायर को दिया गया था.

1940 मिशेल ओ डायर रिटायर हो चुके थे और भारत छोड़कर इंग्लैंड में बस गए थे. उधम सिंह भी इस कांड का बदला लेने के लिए इंग्लैंड तक पहुँच गए. डायर तक पहुँचना उनके लिए आसान नहीं था. काफी लंबे समय तक इंतजार करने के बाद एक दिन उन्हें पता चला की कांगस्टन हॉल में डायर स्पीच देने के लिए आने वाले हैं. उधम सिंह भी उस दिन अंग्रेजों जैसे कपड़े पहन कर वेस्ट मिन्स्टर के कैप्टन हॉल में पहुँच गए, जहाँ यह मीटिंग होने वाली थी. उधम सिंह घटना को अंजाम देने के लिए एक किताब के अंदर रिवाल्वर छुपाकर ले गए. इतनी सुरक्षा के बाद भी वह बंदूक अंदर ले जाने में कामयाब रहे. जब डायर स्पीच के लिए स्टेज की तरफ बढ़ रहे थे तभी उधम सिंह ने एक के बाद एक छह गोलियाँ उसके ऊपर चला दीं. जिनमें से दो गोलियाँ डायर को लगीं और उसकी मौके पर ही मौत हो गई. इस घटना के बाद उधम सिंह वहाँ से भागे नहीं बल्कि अपनी मर्जी से उन्होंने गिरफ्तारी दी. उन्होंने अपने बयान में कहा था कि उन्हें अपने इस काम पर कोई अफसोस नहीं है. जेल में उधम सिंह ने ब्रिटिश सरकार द्वारा हो रहे अन्याय के खिलाफ बयालीस दिन की भूख हड़ताल भी की. भूख हड़ताल को तोड़ने के लिए उन्हें जबरदस्ती खाना खिलाया गया. गिरफ्तारी के 4 महीने बाद 31 जुलाई 1940 को उधम सिंह को फाँसी दे दी गई. उनके शव के अवशेषों को इंग्लैंड के पेंटिंग विलेज से भारत लाया गया. उनके अवशेष का कुछ हिस्सा पंजाब की सतलज नदी में बहा दिया गया और कुछ हिस्सा आज भी जलियांवाला बाग में रखा गया है. यह वह लोग हैं जिन्होंने हँसते-हँसते अपनी जान देश के लिए न्योछावर कर दी. हमारे देश को आजादी दिलाने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है इतनी मुश्किलों के बाद भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी इसीलिए वह आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं.

*****

नानी

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

नानी मेरी प्यारी नानी,
हमें सुना दो एक कहानी.

हो परियों की सुंदर दुनिया,
या जिसमें हो राजा-रानी.

नानी बोली आओ बच्चो,
तुम्हें सुनाऊँ एक कहानी.

भीषण गर्मी पड़ी गाँव में,
सूख गया पोखर का पानी.

हाहाकार मच गया गाँव में,
संकट में पड़ गई जिंदगानी.

सबको बात समझ में आई,
पेड़ लगाने की सबने ठानी.

अब वे पेड़ नहीं काटेंगे,
बचायेंगे एक-एक बूंद पानी.

*****

चंदा तारे

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

नील गगन में चंदा तारे,
बच्चों को वे लगते प्यारे.
ढूँढते चाँद में दादी अम्मा,
बच्चों के वे प्यारे मामा.

तारों में ढूँढते चोर सिपाही,
उनके पीछे चलते हैं राही.
चाँद अकेले घूमता रहता,
कभी न रुकता, कभी न थकता.

चारों तरफ हैं अनगिन तारे,
कितने अद्भुत कितने न्यारे.
गिनने की सब शर्त लगाते,
कोई उन्हें पर गिन न पाते.

गिनते-गिनते जब थक जाते,
मीठे सपनों में खो जाते.
रहते नहीं क्यों साथ हमारे,
छुप जाते हैं दिन में सारे.

नील गगन में चंदा तारे,
बच्चों को लगते हैं प्यारे.

*****

बंदर मामा

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

इस डाली से उस डाली पर,
कूद रहे हैं बंदर मामा.

नीचे खेल रहे हैं बच्चे,
राजू गोलू रानी श्यामा.

दो केले रख आई गुड़िया,
शायद बंदर को भूख लगी हो.

नीचे आकर केला खाकर,
अपनी भूख मिटा ले वो.

नीचे आए बंदर मामा,
छुप गए बच्चे घर के अंदर.

झूम उठा वो केले पाकर,
चढ़ा पेड़ पर फिर केले लेकर.

अपने साथी को दे केला एक,
खुद भी खाया केला एक.

बच्चे निकले घर के बाहर,
बनना है अब उनको भी नेक.

*****

बाल दिवस

रचनाकार- भगवत पटेल

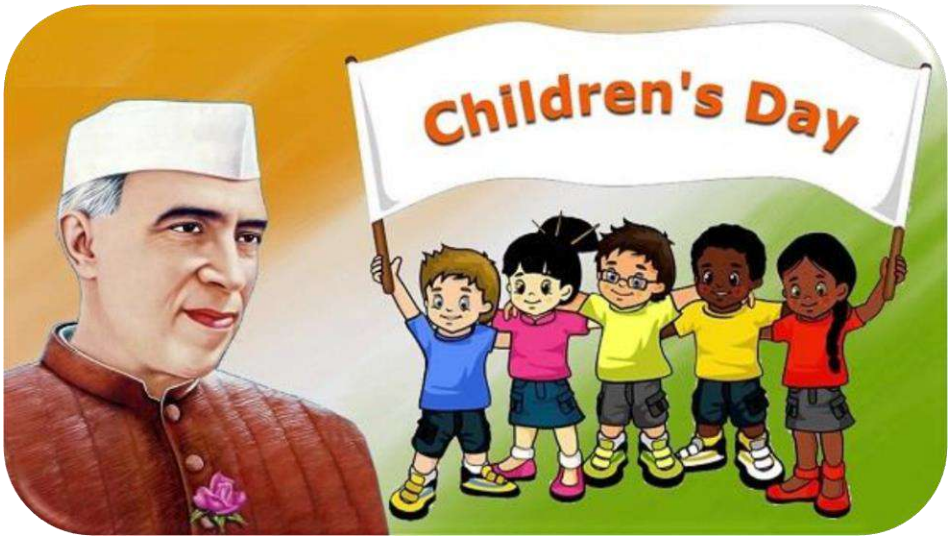

दुनिया मुझको याद करे ऐसा मैं नन्हा कलाम हूँ.
खेल, खिलौने, कन्चे, गोली, मुझको लगते प्यारे.
फूलों के संग तितली रानी, भौंरे कितने न्यारे.
जगमग-जगमग जुगनू जैसे नभ में चाँद-सितारे.
मेरे कोरे मन मेंउपजें प्रश्नअनोखे सारे.
खोज निकालूँ प्रश्नों के हल ऐसा मैं इंसान हूँ.
दुनिया मुझको याद करे ऐसा मैं नन्हा कलाम हूँ.

रोज सवेरे विद्यालय जाता, गुरुजन मुझे पढ़ाते.
गिनती,कविता और पहाड़े, मुझको खूब रटाते.
पेड़, फूल और पत्तों के मैं सुंदर चित्र बनाऊँ .
प्रकृति की प्यारी इस बगिया में सबको पास बुलाऊँ.
नानक, बुद्ध और महावीर का मैं नन्हा पयाम हूँ.
दुनिया मुझको याद करे ऐसा मैं नन्हा कलाम हूँ.

बच्चों के प्रिय नेहरु चाचा अच्छे लगते हैं.
बाल-दिवस को हम सब मस्ती खूब करते हैं.
कलाम के सपनों की, भारत में धूम मचाएँगे.
ज्ञान प्रकाश से तम को हम सब दूर भगाएँगे.
विज्ञान, कला और संस्कृति का मैं ऐसा आयाम हूँ.

दुनिया मुझको याद करे ऐसा मैं नन्हा कलाम हूँ.

कौन बनेगा नन्हा कलाम है वैज्ञानिक नवाचार.
अक्टूबर में शुरू हुआ लिए सपने पंख हजार.
ज्ञान-विज्ञान के रहस्यों का है नया संसार .
जीवन को सीखने का है वैज्ञानिक आधार .
कलाम की दृष्टि का ऐसा मैं सुंदर सलाम हूँ .
दुनिया मुझको याद करे ऐसा मैं नन्हा कलाम हूँ.

*****

मेरा खेत

रचनाकार- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

प्यारा- न्यारा मेरा खेत,
हरा-भरा सुंदर खेत.
उसमें फसलें लहरातीं,
मेरे मन को बहुत लुभातीं.

महके पीली-पीली सरसों,
फूले अरहर- झूमे अरहर.
बेहद लंबा हुआ बाजरा,
भुट्टा नाचे पहन घाघरा.

उग आए हैं मूली- गाजर,
लाल हुआ है गोल टमाटर.
किसी से कम न गोभी आलू,
बहुत रुलाते प्याज- रतालू .

केला आया ताजा-ताजा,
कलुआ बैंगन बन बैठा राजा.
कद्दू जैसा हुआ ना मोटा,
गन्ना आया मीठा-मीठा.

खरबूज की खुशबू क्या कहने,
बहुत महकता सुंदर धनिया.
भाव खा रही हरी मटर,
सुध-बुध खो गई है ज्वार.

सबको उगाता मेरा खेत,
हरा-भरा सुंदर खेत.

*****

परमार्थ की भावना

रचनाकार- सीमा यादव

प्यारे बच्चो! आज मैं आप सभी को परमार्थ से मिलने वाली सुख की सच्ची अनुभूति के बारे में बताने जा रही हूँ. बच्चो! इस संसार में हम सभी मानव शरीर में अपने-अपने कर्म के अनुरूप भाग्य लेकर आते हैं, जो व्यक्ति सद्कर्म को अपनी साधना, तपस्या एवं उपासना बना लेता है. वही सच्चे अर्थ में परमार्थी कहा जाता है. परहित के भाव से भरा हृदय वाला व्यक्ति ही परोपकार के बारे में सोचता है और इसकी शुरुआत वो स्वयं से करता है. एक निःस्वार्थ व्यक्ति वही होता है जो कपट, छल, लालच एवं षड्यंत्र से कोसों दूर होता है. जो दूसरों के दुःख में दुखी और दूसरों के सुख में सुख का अनुभव करता है. ऐसे व्यक्ति समाज में विरले ही होते हैं.

परमार्थ की भावना रखने वाला समभाव की सोच रखता है. सबकी जीत में विश्वास रखता है और खुद तो आगे बढ़ता ही है दूसरों को भी सही दिशा में आगे बढ़ने हेतु निरंतर प्रयासरत रहता है. बच्चो! हमें अपने वीर महापुरूषों के जीवन चरित्र का अध्ययन करना चाहिए जिससे कि हम भी उनके ऊँचे आदर्शों पर चलकर परमार्थ करके अपना जीवन सार्थक कर सकें.

*****

शिशु शिरोमणि

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

बच्चे मन के होते सच्चे, होते भोले-भाले.
मन निश्छल, कोमल भाव, होते वे निराले.

जिस साँचे में ढाल दो, वैसे ही ढल जाते हैं.
कुम्हार सरीखे थपकी दो, वैसे ही पक जाते हैं.

खेलखेल में हँसतेगाते, कभी रूठते, कभी मनाते.
बड़ो से जो संस्कार पाते, सहर्ष उन्हें वे अपनाते.

कहते हैं बच्चों में, भगवान का है रूप समाया.
फूलों सा नाजुक वो, पल-पल है मुस्काया.

बच्चे करते धमाचौकड़ी, शोरगुल, शरारत.
बच्चों के शोरगुल में भी, उर आनंद समाया.

हैं शर्मीले, नटखट अंदाज, बच्चे होते प्यारे.
इसीलिये चाचा नेहरू को, बच्चे लगते न्यारे.

फूलों का राजा गुलाब, चाचा नेहरू मन को भाए.
तभी तो अचकन में अपने, सुंदर गुलाब सजाए.

चाचा नेहरू को लगते हैं, बच्चे बहुत ही प्यारे.
बच्चे भी चाचा चाचा कह, नेहरू को पुकारे.

देश की भावी पीढ़ी, होते हैं ये ही बच्चे.
बच्चे भोले-भाले, होते हैं मन के सच्चे.

बच्चों के प्यारे नेहरू, पहले प्रधानमंत्री भारत के.
जनजन के हिय में समाये, लाल हैं ये भारत के.

*****

मंटू मुर्गा

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार

मंटू मुर्गा बैठे-बैठे,
रहा दूर की सोच.
नाच न जाने आँगन टेढ़ा,
आई पाँव में मोच.

मुर्गी झट मरहम ले आई,
पाँव पर बाँधी पट्टी.
आँख नचाकर लगी सुनाने,
कुछ बातें मीठी-खट्टी.

डींग मारता लम्बी-लम्बी,
काम तुझे ना भावे.
एक अजान सुबह की देकर,
दिन भर फिर सुस्तावे.

आसमान में उड़ो नहीं,
कर लो थोड़े काम.
चलना-फिरना बहुत जरूरी,
हर दिन सुबह और शाम.

*****

सौर परिवार

रचनाकार- पेशवर यादव

सौर परिवार की कर लो पाठ,
ग्रहों की संख्या होती आठ.
बुध, शुक्र, पृथ्वीं, मंगल, बृहस्पति,
शनि अरुण वरुण ग्रह है सभी.
सूरज है एक तारा,
ऊष्मा प्रकाश का स्रोत है सारा.
ग्रहों में होती सबसे बुध गरम,
अरुण ग्रह है सबसे ठंडा परम.
पृथ्वी को कहते है ग्रह नीला,
ग्रहों में है सबसे शुक्र चमकीला.
सबसे बड़ा ग्रह वृहस्पति,
सभी ग्रहों में होती घूर्णन गति.
शनि वलयों से है घिरा,
इसलिए कहते है सुंदर ग्रह.
सुनो बच्चों एक और बात
जाने कैसी होती है दिन और रात.
पृथ्वी अपनी अक्ष में घुमा करती,
संग सूरज की परिक्रमा करती.
जहाँ अन्धेरा हो रात कहलाती,
शेष जगह हो दिन कहलाती.

*****

बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

बच्चे मन के होते सच्चे, होते भोले-भाले.
मन निश्छल, कोमल भाव, होते वे निराले.

जिस साँचे में ढाल दो, वैसे ही ढल जाते हैं.
कुम्हार सरीखे थपकी दो, वैसे ही पक जाते हैं.

खेलखेल में हँसतेगाते, कभी रूठते, कभी मनाते.
बड़ो से जो संस्कार पाते, सहर्ष उन्हें वे अपनाते.

कहते हैं बच्चों में, भगवान का है रूप समाया.
फूलों सा नाजुक वो, पल-पल है मुस्काया.

बच्चे करते धमाचौकड़ी, शोरगुल, शरारत.
बच्चों के शोरगुल में भी, उर आनंद समाया.

हैं शर्मीले, नटखट अंदाज, बच्चे होते प्यारे.
इसीलिये चाचा नेहरू को, बच्चे लगते न्यारे.

फूलों का राजा गुलाब, चाचा नेहरू मन को भाए.
तभी तो अचकन में अपने, सुंदर गुलाब सजाए.

चाचा नेहरू को लगते हैं, बच्चे बहुत ही प्यारे.
बच्चे भी चाचा चाचा कह, नेहरू को पुकारे.

देश की भावी पीढ़ी, होते हैं ये ही बच्चे.
बच्चे भोले-भाले, होते हैं मन के सच्चे.

बच्चों के प्यारे नेहरू, पहले प्रधानमंत्री भारत के.
जनजन के हिय में समाये, लाल हैं ये भारत के.

*****

मुस्कुराता पुष्प

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर

छोटी-छोटी क्यारियों में,
लगा एक सुंदर पौधा.
हरी-भरी पत्तियों से सजा,
एक सुंदर पौधा.

फिर आई उसमें,
छोटी-छोटी कलियाँ.
फिर एक सुबह देखा तो,
फूल बन गईं थी कलियाँ.

सुंदर रंग-बिरंगे फूलों से ,
महक रहा था उपवन.
फूल मानो हँस रहे थे,
हवा के साथ झूम रहे थे.

मेरे कान में कुछ बोल रहे,
मुझ जैसे तुम खुश रहना.
क्योंकि मुस्कान ही तो है,
अपने जीवन का गहना.

*****

प्यारी नानी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

नानी करती प्यार है, बैठ सभी के साथ.
खेल-खेलती है सदा, और पकड़ती हाथ.

और पकड़ती हाथ हमारे, हँसती गाती.
बच्चे के संग बच्ची बन कर, खुश हो जाती.

खेल-खेल में, हम सब की वह, बनती रानी.
बचपन की वो बात बताती प्यारी नानी.

टोली लेकर साथ में, जाते नानी गाँव.
बड़े मजे से खेलते, बैठ पेड़ की छाँव.

बैठ पेड़ की छाँव सभी जी, सुने कहानी.
पंच तन्त्र की बात बताती, प्यारी नानी.

चुन्नू मुन्नू खुश हो कर के, करे ठिठोली.
बच्चे-बच्चे, बैठा करते, बनकर टोली.

*****

अटकन-बटकन

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली

अटकन बटकन दही चटाकन,
नहा खोर के तियार हो जाथन.
रोटी चटनी हम बासी खाथन,
खेलत कूदत स्कूल जाथन.

लाइन बना के प्रार्थना गाथन,
प्रार्थना कर कक्षा म जाथन.
पारी पारी हाजिरी देवाथन,
अपन अपन सुविचार बताथन.

पुस्तक-कापी मिलजुल पढ़ाथन,
सुग्घर गीत कविता ल गाथन.
अक्षर जोड़ के शब्द बनाथन,
गुरु के आगू माथ नवाथन .

नवा-नव हम चित्र बनाथन,
लिखथन-पढ़थन मजा उड़ाथन.
अपन मन के बात बताथन,
कहानी किस्सा घलो सुनाथन.

बाल सभा स्कूल मा होथे ,
सुग्घर सुग्घर खिलौना बनाथन.

*****

बचपन

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

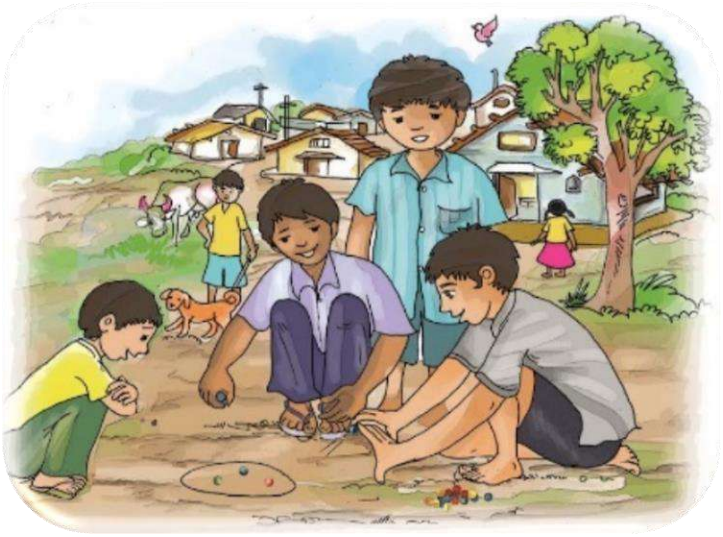

दुनिया भर की दौड़ लगाते, बन जाते वे छुकछुक रेल.
धूल मिट्टी गलियाँ आँगन में, तरह तरह के खेले खेल.
दुनियादारी से क्या लेना, पल में झगड़ा पल में मेल.
निष्कपट निश्छल बचपन, रखते न मन में कोई मैल.

धूप हो या हो बारिश, वो तो है अपने मन का राजा.
कभी चलाते कागज की कश्ती, कभी बजाते बाजा.
पेड़ों पर चढ़ते, झूला झूलते, तोड़े फल मीठा ताजा.
उनकी टोली धूम मचाती, खोले ख़ुशियों का दरवाजा.

तारों में ढूँढे चोर सिपाही, चाँद में पा लेते वे बुढ़िया.
तितली के पीछे भागते, कभी चढ़ते छत की सीढ़ियाँ.
दादा दादी से सुने कहानी, माँ से सुने मधुर लोरियाँ.
पल भर में आती मीठी नींद, सपनों से भरी अँखियाँ.

*****

बचपन की वे बातें

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

बचपन की वे बातें ही तो, जिंदगी की अनमोल पूंजी है.
छुटपन में खेलते-खेलते, हमनें खुशी-खुशी जो सहेजीं हैं.

मित्रता निभाना, रिश्ते निभाना और सीखा फर्ज निभाना.
पढ़ना सीखा, लिखना सीखा, सीखा मिल बांटकर खाना.

नानी की कहानियाँ और दादी के हसीन मीठी जुबानिया.
महाभारत की कथा हो या, पंचतंत्र की मनोहर कहानियाँ.

सबसे सीखीं हमनें संघर्ष करते-करते आगे बढ़ने के तरीके.
नीति- नियम, शिष्टाचार और जिंदगी जीने के कई सलीके.

बचपन की सीखी बातें ही हमें, जीवन भर याद रह जाते हैं.
जब कभी हम निराश होते हैं, यही हमारे हौसला बढ़ाते हैं.

*****

करव बिचार के

रचनाकार- कलेश्वर शत्रुहन साहू

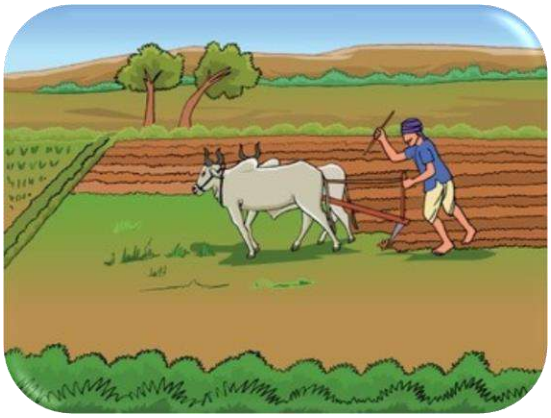

एक ठक गांव म गरीब किसान रहत रहिस जउन ह एक ठक नेवरा पोसे रहिस. नेवरा बिकट हुसियार अउ अपन मालिक के भक्त रहिस. एक दिन किसान कहु गे रहिस त किसान के गोसाईन बुधारिन ह अपन छोटकुन लइका ल दूध पीआ के सुता दिस अउ नेवरा ल उही मेर रख के ओहा ह मरकी बाल्टी अउ डोरी ल धर के कुआ म पानी भरे बर चल दिस.

बुधारिन के कुआ जाय के बाद घर म एकठक करिया सांप बिला ले निकल के आइस. लइका ह भुइयाँ के ओनहा म सुते रहय ओतके बेरा सांप ल नेवरा ह देख डरिस. हुसियार अउ ईमानदार नेवरा ह सांप के ऊपर कूददिस सांप ल मार के नेवरा ह ओला कुटी कुटी कर दिस अउ घर के फ़इका मेर बुधारिन के रद्दा अगोरत रहिस.

बुधारिन मरकी म पानी भर के घर आइस त घर के फइका मेर नेवरा ल देखिस. नेवरा के मुंह म लहू ल देख के वो समझिस कि ये नेवरा ह मोर लइका ल काट डरे हे. तभे बुधारिन ल बिकट गुस्सा आइस त पानी ले भराय मरकी ल नेवरा के ऊपर पटक दिस बपुरा नेवरा ह मरगे.

बुधारिन ह लकर-धकर दउर के घर भीतर गिस. त घर म अपन लइका ल भुइयाँ म सुघ्घर सुते अउ ओमेर एकठक करिया सांप ल मरे परे देखिस. बुधारिन ह ये सब ल देख के मुड़ी ल धरलिस ओला अपन गलती पता चलिस त फेर लकर-धकर दउर के नेवरा कना आइस अउ मरे नेवरा ल अपन गोदी म पाके रोय ल लागिस. फेर अब रोय ले का मिलहि?

एखरे सेती हमु मन ल कोनो बुता काम ल बिना सोचे बिचारे नइ करना चाही. कोखरो उपर बद्दी लगाय के पहिली बने सोच बिचार कर लेना चाही नइ तो अवइया दिन म अड़बड़ पछताय ल पड़थे अउ बने बने रिश्ता ह टूट घलो जाथे.

*****

जाड़ा आई

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"

जाड़ा आई,जाड़ा आई.
तन मन में खूब ठिठुरन छाई.
जाड़ा आई.

घास पात में मोती चमके,
चारों तरफ़ धुंध है, छाई.
जाड़ा आई,जाड़ा आई.

जरकिन,स्वेटर निकल गया है,
निकला गया अब शाल, रजाई.
जाड़ा आई,जाड़ा आई.

ठंडे पानी से डर लागे,
नहाने पानी गरम कराई.
जाड़ा आई,जाड़ा आई.

ठंडे चीज नहीं खाएंगे,
लेंगे गरम गरम मिठाई.
जाड़ा आई,जाड़ा आई.

*****

गाय

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

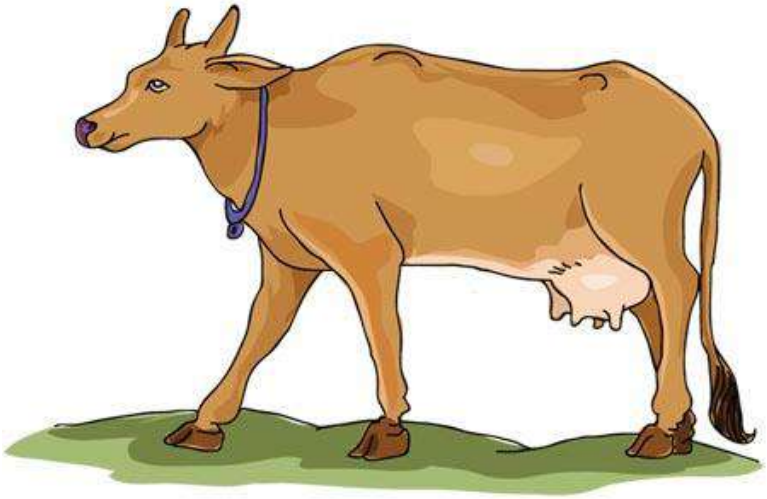

गाय तो है एक सभ्य व पालतू पशु.
जिसे बना दिया है हमने फालतू पशु.

दो सिंग,चार पैर,दो आँखें हैं प्यारी.
यह दुनियाँ जहाँ में,लगती सबसे न्यारी.

मातृत्व हम पर है,सदैव वह लुटाती.
रुखा-सूखा खाकर,आशीष हमें देती.

गाय दूध सेवन से,शक्ति-बुद्धि है बढ़ती.
दूध से बनता घी, और दही भी बनती.

तभी तो गाय कहाती,सारे जग की मात.
दूजा पशु तुझसे ना,कोई जगत विख्यात.

*****

बन्दर भैया

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

सूट पहन कर बन्दर भैया,
करते हैं जंगल में हैया.

गॉगल पहन, पहन के टोपा,
बन जाते हीरो फिल्मइया.

सब पर अपना रोब जमा के,
समझे सबको भोली गैया.

शेर देख के डर कर छुपते,
छुपे जैसे काली बिलैया.

उछलकूद करके हंगामा,
करते वन में ता-ता थैया.

सर्कस में करतब दिखलाते,
बन के मोटे लाल सिपैया.

जोकर बन के खूब हंसाते,
मन बहलाते बन्दर भैया.

*****

मेरी नानी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

मेरी प्यारी-प्यारी नानी,
लगती हो तुम खूब सुहानी.
कौतुक और अचम्भे वाली,
मुझे सुनाती रोज कहानी.

छुक-छुक वाली रेल दिलाती,
और दिलाती गुड़िया धानी.
नुक्कड़ वाली चाट खिलाती,
और खिलाती पूरी पानी.

छत पे संग मेरे वो खेले,
गेंद और बल्ला तूफानी.
मुझसे हरदम प्यार जताती,
सदा बोलती मीठी बानी.

मम्मी जब गुस्सा हो जाती,
मुझे बचाती मेरी नानी.

*****

छठ पूजा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

व्रत करती है मिलकर नारी,
लगती हैं सब प्यारी-प्यारी.
सूर्य देव की पूजा करती,
आस्था श्रद्धा मन में भरती.

सूर्योदय नदियों पर जाती,
कलशा में वह जल को लाती.
फल मिष्ठान्न भोग लगाती,
छठ मैया की आशीष पाती.

सुंदर-सुंदर सूप सजाती,
गन्ने फल को भर कर लाती.
दीपदान नदियों में करती,
छठ मैया सब दुख को हरती.

सदा सुखी तुम रखना माता,
तुम ही हो जीवन की दाता.
मातायें सब आस लगाती,
रोग-दोष को दूर भगाती.

*****

सुबह हुई

रचनाकार- दिपेश पुरोहित 'बिहारी'

सुबह हुई, पूर्व की लालिमा नये उत्साह और उमंग लेकर आई पर रितिका के जीवन में ऐसा कुछ नहीं था. वह जीवन के ऐसे मोड़ पर खड़ी थी कि लग रहा था मानो सब खत्म हो गया. पलकों पर आँसुओं की लड़ियाँ थमने का नाम नहीं ले रहीं थीं.पिता की बातों को याद करने लगी.

वह 7-8 साल की रही होगी. उसके पिता विद्यालय में चपरासी थे. प्रतिदिन 8 बजे से उनका दिन शुरू होता. 9 बजे स्कूल पहुँचकर साफ सफाई करना, बच्चों का खयाल रखना, स्कूल के बगीचे में पौधों की देखभाल, उनकी दिनचर्या में शामिल था. रितिका को भी अब इसी दिनचर्या में शामिल होना था, क्योंकि उसका दाखिला उसी स्कूल में हुआ था. शाम को 5 बजे दोनों बाप बेटी स्कूल के बारे में बातें करते सायकल से लौटते थे. उनकी छोटी सी आमदनी में रितिका के लिए कुछ भी नहीं था, माँ बीमार थी, उनकी दवा और घर के खर्चे के बाद छोटी सी बचत हो पाती थी. कभी कभी बचत वाले डिब्बे से उसे चिढ़ होती थी, उसके शौक के बदले पैसे उसमें डाल दिये जाते थे.

पिता के प्रेम और अनुशासन से धीरे धीरे उसने न्यूनतम आवश्यकता को ही आदत बना लिया.

इतनी कर्तव्यनिष्ठा से काम करने के बावजूद, उसके पिता को न तो विद्यालय से कोई पुरस्कार मिला न ही यथोचित सम्मान. एक बार कलेक्टर साहब का दौरा हुआ. स्कूल की साफ सफाई, समस्त व्यवस्था और बागवानी को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए. प्रार्थना सभा में सभी बच्चों के सामने उन्होंने हेडमास्टर साहब की प्रशंसा की. हेडमास्टर ने सबके सामने पुरस्कार भी ग्रहण किया, लेकिन श्रेय का एक कतरा भी रितिका के पिता के लिए देना उचित नहीं समझा. वह कहना चाहती थी, कलेक्टर साहब यह सारा नजारा उनके पिता के कार्यों का नतीजा है, हेडमास्टर साहब आराम से 11 बजे आते हैं और कभी कभी 4 बजने से पहले ही निकल जाते हैं.

शाम को सायकल के आगे सीट में वह मौन बैठी, तब पिता ने पूछ लिया "बेटा आज चुप कैसे हो.बताओगी नहीं कलेक्टर साहब को देखकर कैसा लगा?"

रितिका थोड़ा गुस्सा करते बोली "कल से आप भी 11 बजे आएँ और 4 बजे लौट जाएँगे.इतना काम करने का कोई मतलब नहीं. काम आपने किया और इनाम तो हेडमास्टर साहब ले गए. बताइये गलत है कि नहीं."

"ओह! इस वजह से गुस्से में है बिटिया रानी!"

"हाँ! क्या कलेक्टर साहब को इनाम आपको नहीं देना था." उसने प्रश्नवाचक निगाह से देखा.

"ये उनका निर्णय है वे किसे इनाम का अधिकारी समझते हैं.विद्यालय की सफाई के लिए हेडमास्टर ही जिम्मेदार होता है. इसलिए उनको इनाम मिला."

"और आपको? क्या मिला ये सब करके? यहाँ तक कि हेडमास्टर साहब ने इतना भी नहीं कहा कि आप दिनरात मेहनत करते हैं तब ये स्कूल और ये बागबग़ीचे हैं."

"ठीक है. नहीं कहा तो अच्छा हुआ."

"कैसे?"

"बेटा. पहली बात हमें कोई काम इसलिये नहीं करना चाहिए कि हमारी प्रशंसा हो. अगर ऐसा हुआ तब वह कार्य उतने दिन तक हो पाएगा जब तक प्रशंसा होती रहे. प्रशंसा समाप्त फिर कार्य नहीं होगा."

"लेकिन पापा."

उसकी बात बीच में काटते हुए बोल उठे "मैं यह सब करता हूँ कि मुझे खुशी होती है साफ सुथरा स्कूल देखकर, यहाँ के बच्चों को सफाई पसंद और बाग बगीचे की रखवाली करता देखकर. भले ही शुरुआत मैंने की लेकिन आज देखो सब बच्चे एक एक पौधे लगाकर उसकी देखभाल करते हैं न क्या इसके बदले मुझे इनाम चाहिए."

स्वयं के आनन्द और खुशी के लिए काम, कितना अद्भुत विचार था. जिसके लिए रितिका निरूत्तर होकर चिंतन करने लगी. इसी दिन उसने निश्चित किया वह हेडमास्टर बनेगी, जो अपने मातहत कर्मचारियों को पुरा श्रेय और सम्मान देगी.

"मैम, दूध के लिए आज बर्तन नहीं रखा आपने." दूधवाले की आवाज ने उसकी तंद्रा भंग की.

अनमने भाव से उसने दूध का बर्तन उठाया. दूधवाले ने उसका चेहरा देखकर पूछ लिया. आपकी तबीयत तो ठीक है न?

रितिका ने आँसू बड़ी मुश्किल से रोके और सिर हिलाया. दूध लेकर वापस लौट आयी.

पिता के संस्कारों और माँ की बीमारी में भी दृढ़ इच्छा-शक्ति ने उसके भीतर धैर्य और हिम्मत कूटकूटकर भर दी थी.

शिक्षा पूर्ण होने के उपरांत उसकी मेहनत रंग लाई. वह हेडमास्टर के पद पर दूरस्थ ग्रामीण अंचल में एक छोटे से विद्यालय में नियुक्त हुई.

महज 20 बच्चों से शुरू होने वाले स्कूल को रितिका ने अपने कार्यों और सीखने सिखाने के नए तरीकों से बदल डाला. स्कूल से 25 किमी दूर रहते हुए भी वह प्रतिदिन 9 बजे स्कूल पहुँच जाती, शाम को 5 बजे स्कूल से वापस निकलती.

बागबग़ीचे लगाना, साफ सफाई उसे विरासत में मिली थी.

उसने दिन रात मेहनत की, छुट्टियों के दिनों में स्कूल जाती, खेतों में पालकों से बैठकर बातें करती, बड़ी लड़कियों को भी स्कूल आने के लिए प्रोत्साहित करती.

परिणाम यह हुआ की गाँव की लड़की बुधवारा जो 13 साल की थी उसने विद्यालय आना शुरू कर दिया. धीरे-धीरे चारों ओर स्कूल का प्रचार-प्रसार होने लगा. गाँव में बैठक आयोजित कर पालक समिति बनाई गई. उनके सहयोग से स्कूल भवन बनाने का काम शुरू हुआ. लेकिन बच्चों की बढ़ती संख्या से हर साल भवन छोटा पड़ जाता.

रितिका के विद्यालय आने की दसवीं वर्षगांठ थी, उसने कुछ मिठाई बच्चों में बाँटी और कुछ बच्चों के लिए जूते और कपड़े दिए. प्रतिवर्ष बहुत सारे बच्चों के एडमिशन इसी दिन किये जाते थे. अब संख्या बढ़ने लगी और संसाधन अपर्याप्त थे. धीरे धीरे बच्चों की छंटनी होने लगी. आवेदन में से कुछ स्थानीय बच्चों के लिए निर्धारित थे, उससे इतर बच्चों को उनके ज्ञान, सीखने की दक्षता आदि का टेस्ट दिलाना होता तब उनकी भर्ती हो पाती. ऐसे ही कई वर्षों तक क्रम चलता रहा.

इस वर्ष अन्य क्षेत्रों के बच्चों को स्थान देने के उद्देश्य से 100 सीट के बालकों एवं 50 सीट की बालिकाओं के हॉस्टल की सुविधा शुरू की गई.

विद्यालय को 4000 से अधिक आवेदन मिले. रितिका अपने स्टाफ के साथ दिन रात एक कर उनमें से पात्र बच्चों की सूची बनाने जुट गई थी. उसके मन में कोई दुविधा नहीं थी, जो पात्र हैं उन्हें स्थान मिलेगा.

तभी मोबाइल बजी.

रितिका ने कहा "हैलो."

"मैडम मेरी एक दरख्वास्त थी. मेरे बच्चे का एडमिशन आपके विद्यालय में करवाना है." आवाज रौबदार और वजनी थी.

रितिका ने उसी सहजता से जवाब दिया "कल आवेदन की आखिरी तारीख है. आप आवेदन करें हम पात्र होने पर जरूर एडमिशन देंगे."

"वैसे नही मॅडम मुझे डायरेक्ट एडमिशन चाहिए. मैनेजमेंट कोटा या स्पेशल सीट कुछ तो होगा, आपके विद्यालय में." उस रौब में अब झल्लाहट जुड़ गई.

"सॉरी सर. यह शासकीय विद्यालय है जहाँ सभी का समान अधिकार है. ऐसी कोई सुविधा नहीं है. थैंक यू." रितिका ने फोन काट दिया.

बाद में कई बार उसने फोन करने की कोशिश की लेकिन रितिका ने फोन रिसीव नहीं किया.

एडमिशन की प्रक्रिया आगे बढ़ गई. रितिका अपने काम मे व्यस्त हो गई. 2 दिन पहले ही उसके साथी शिक्षक ने उसे फोन कर बताया.

"मैम आज तो गजब हो गया. मैम, हमारे स्कूल के बारे में अखबार में बहुत ही गलत तरीके से छापा गया है. सभी शिक्षकों को भ्रष्टाचार से लिप्त बताया गया है और भ्रामक तथ्यों के साथ धनाढ्य वर्ग के एडमिशन किये जा रहे हैं.ऐसी बातें छापी गई हैं."

रितिका ने अखबार ढूंढा, वह बेहद संजीदगी से आर्टिकल पढ़ने लगी. उसके आंखों से आंसू बह रहे थे. जिस विद्यालय को खड़ा करने में उसने अपने जीवन के 10 साल खर्च कर दिए. उसके मेहनत और काम के प्रशंसा के स्थान पर इतना निम्नस्तर के आरोप मढ़े गए थे कि उसका धैर्य भी जवाब दे गया. वह ऐसे तैसे तैयार होकर स्कूल पहुँची ही थी कि खण्ड शिक्षा अधिकारी महोदय का फोन आ गया.

पेपर में छपी ख़बर के कारण जिले से जाँच दल आ रहा था. इस खबर ने उसे और हैरान कर दिया.

वह अपने कमरे में स्टाफ के साथ मौन बैठी थी. सब के भीतर तूफान उमड़ रहा था लेकिन बाहर से सभी शांत दिखने का प्रयत्न कर रहे थे.

कुछ ही देर में खण्ड शिक्षा अधिकारी, जिले के अधिकारियों के साथ विद्यालय पहुँचे. सबने उनका स्वागत किया. अधिकारियों ने चारों ओर घुमघामकर देखा, बच्चों से मुखातिब भी हुए, एडमिशन प्रोसेस को देखा.

सब सही था. कहीं कोई समस्या नहीं थी. फिर भी महोदय रितिका से पूछ बैठे- सब तो ठीक लग रहा है फिर ऐसी शिकायत क्यों आई?

साहब का लहजा थोड़ा सख्त था.

रितिका ने अपना इस्तीफा टेबल पर रख दिया. जिस विद्यालय को मैंने 10 साल दिए, उन कार्यों का कोई मोल नहीं और किसी ऐसे व्यक्ति जिसने उस आर्टिकल को केवल दुष्प्रचार के उद्देश्य से लिखा हो उसकी बातों पर मेरे विभाग को भरोसा हो गया तो मेरा इस विद्यालय में आखिरी दिन ही होना चाहिए.

यह देखकर सब हैरान थे. सभी ने एक स्वर में कहा यदि रितिका यहाँ नहीं आएंगी तो हम सब अपना इस्तीफा सौंप देंगे.

अधिकारी महोदय नरम पड़ चुके थे. "आप बिलकुल सही हैं रितिका. इस विद्यालय और समाज को आपकी जरूरत है."

थोड़ा रुककर आगे बोले- "हमारी सबसे बड़ी समस्या यही है, हम अच्छा काम करने वालों की कद्र नहीं करते. उन्हें श्रेय नहीं मिलता, बल्कि विरोध मिलता है. हर पालक चाहता है कि उसके बच्चे का एडमिशन इसी विद्यालय में हो. इससे अच्छा यह हो सकता था कि हम हर विद्यालय को इस विद्यालय जैसा बना पाते."

खण्ड शिक्षा अधिकारी महोदय ने भी सहृदयता से कहा "रितिका और उसका विद्यालय हमारे खण्ड की शान है. तुम चिंता न करो इस शिकायत का कोई अर्थ नहीं है. तुम निश्चिन्त होकर आगे बढ़ो."

सभी की बातों से अभी भी रितिका सहज नहीं हो पाई. उसने खण्ड शिक्षा अधिकारी महोदय से पूछ लिया- कल की छुट्टी मिलेगी सर?

"छुट्टी लेकर क्या करोगी. देखो ऐसे मन को खराब न करो. सब ठीक ही होगा."खण्ड अधिकारी समझाने लगे.

दिन बहुत थकावट भरा था. रितिका शाम होते होते घर पहुँची.ऐसा लग रहा था कोई बोझ उस पर रख दिया गया हो.

चारो ओर संकट के बादल ही नजर आ रहे थे. अनिर्णय की स्थिति थी, क्या उसके कार्यों का यह अपमान नहीं था. सब सोचते सोचते रात बीत गयी थी.

अभी भी सोफे पर लेटी हुई थी. स्कूल जाने का मन नहीं था. 8 बज चुके थे, आज तो नहाने का भी मन नहीं था.

मोबाइल की घण्टी बजी.

रितिका ने रुंधे गले से कहा " हैलो पापा."

पापा अब रिटायर हो चुके थे. आज सुबह उन्हें अखबार की बात का पता चला था.

"बेटा. तू दुखी हो रही है."

"हाँ पापा." "लोग अच्छाई की कद्र नहीं करते यहाँ तक तो ठीक है. लेकिन अच्छे को अच्छा नहीं रहने देते. हर किसी को अपने मतलब की पड़ी है. अपने काम को पूरा करने के लिए इस हद तक चले जाते हैं. क्या मिला होगा मुझे बदनाम करके?"

"किसने कहा कोई तुम्हे बदनाम कर पायेगा. बेटा किसी एक व्यक्ति ने कुछ दुष्प्रचार कर दिया तो क्या होगा? लोग जानने का प्रयास करेंगे ये रितिका कौन है?ज्यादा से ज्यादा 2 चार लोग बात भी कर लें. 20 पचास तेरे बारे में एक राय बना लें. लेकिन तू सोच जो 400 बच्चे हैं उनके लिये तुम ही आधार हो उनका जीवन तुमसे बनेगा. तुमको मैंने कहा था, ये हमारे आनंद का विषय है."

"पर पापा. मुझे भी दुख लगता है."

"आनन्द में दुख का कोई स्थान नहीं है पगली. सुख का विपर्याय दुख है. आनन्द का विपर्याय है ही नहीं. उन सैकड़ों बच्चों से वो पत्रकार मूल्यवान हो गया जिसे तुम जानती भी नहीं.बताओ?"

"नहीं पापा!"

"तो उसके आरोप इतने महत्वपूर्ण हैं जिसके लिए तुम अपना कार्य त्याग दो."

"नहीं पापा."

"तो तुम स्कूल के लिए लेट नहीं हो जाओगी आज. बस 9 बजने ही वाले हैं बेटा!"

रितिका ने आँसू पोंछ लिए, तुरंत नहाकर तैयार हो गई.टिफिन नहीं बन पाया आज तो? उसने सोचा स्कूल में मध्यान्ह भोजन में से कुछ ले लुंगी. प्रार्थना सभा में उसे खड़ी देखकर सभी का उत्साह दुगुना हो गया.

*****

छठ-पर्व

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

शुभ छठ पर्व आया ,
खुशियाँ है साथ लाया.
व्रतधारी व्रत करें,
महिमा अपार है.

नदियाँ के घाट पर,
करें पूजा मिलकर.
रवि की अराधना से,
जीवन साकार है.

निर्मल हृदय रख,
करते है जो भी व्रत.
इच्छा सारी पूरी होती,
माता ही आधार है.

जगत कल्याणी माता,
यही तो भाग्यविधाता.
देती वरदान सदा,
माँ पालनहार है.

*****

लौह पुरुष को सत सत नमन

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

जिसने सन् अटठारह सौ संतावन में जन्म लिया गुजरात में,
अपने अधिकारों के विरुद्ध आंदोलन किया शिक्षा काल में,
उन लौह पुरुष को मेरा शत-शत नमन.

जो प्रथम गृह मंत्रीनियुक्त हुए,नेहरू शासनकाल में,
सोमनाथ मंदिर पुनर्निर्माण शामिल है इनके ऐतिहासिक कार्य में,
उन लौह पुरुष को मेरा शत-शत नमन.

जिसने उल्लेखनीय कार्य किया भारत को आजाद कराने में,
भारत को जिसने विशाल और अखंड बनाने की कल्पना की अपने मन में,
उन लौह पुरुष को मेरा शत शत नमन.

संपूर्ण भारत को अखंड बनाया जिसने अपने अथक परिश्रम से,
अपने दूरदर्शिता और अटल निश्चय से लौह पुरुष कहलाए इस जहान में,
उन लौह पुरुष को मेरा शत-शत नमन.

*****

हस्तलिखित पुस्तिका लेखन

रचनाकार- कामिनी जोशी

हस्तलिखितपुस्तिका का नाम सुनकर, मन में आया विचार.
न जाने शिक्षा जगत में होंगे कितने नवाचार,
जब समझी इसके उपयोग को तो मन हो गया खुश,
अपने विचारों को बच्चे व्यक्त कर सकते है,
फिर वो हो कविता, कहानी, या पहेली बुझ.
अच्छी ये सोच है, अच्छे ये विचार,
नित दिन नए उमंग से बच्चे करेंगे विचार.
छपी किताबों को बहुत निहारे हैं,
अब खुद की किताब बनाएंगे,
रंग-बिरंगों तस्वीरों से रोज इसे सजायेंगे.
सब बच्चों के अंदर कौशल छिपा है.
हस्तलिखित पुस्तिका से साबित करते जाएंगे.

*****

कृतज्ञता

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

मधु अपनी बेटी के साथ जल्दी-जल्दी बस में चढ़ी. बस के अंदर बहुत भीड़ थी. बैठने के लिए सीट नहीं मिली. मधु अपनी बेटी को अपने करीब चिपका कर खड़ी हो गई. अगले स्टेशन पर बस कुछ खाली हुई, तो मधु और उसकी बेटी को सीट मिल गई. दोनों बैठ गए. बस अभी कुछ ही दूर चली थी, इतने में कंडक्टर आ गया. मधु ने अपना और अपनी बेटी का टिकट ले लिया. कंडक्टर आगे बढ़ गया. थोड़ी देर बाद मधु ने देखा कि कंडक्टर एक वृद्ध व्यक्ति को डपट रहा था. तुम लोगों का यही रोज का काम है. पैसे रहते नहीं है मुफ्त में आ जाते हैं सवारी करने. बूढ़ा व्यक्ति हाथ जोड़े उसके सामने गिड़गिड़ा रहा था. बेटा ले चलो मेरी पत्नी बहुत बीमार है वह घर में मेरा इंतजार कर रही है. किंतु उसकी बातों का कंडक्टर पर कोई असर नहीं हुआ. कंडक्टर ने उसे बस से उतार दिया. मधु उस वृद्ध व्यक्ति की कातर आँखों को देखकर द्रवित हो गई. उसने कंडक्टर से कहा कि वह उसके टिकट के पैसे दे देगी. वह उसे वापस बस में चढ़ा ले. कंडक्टर ने समझाया कि ऐसे बहुत लोग होते हैं जो पैसे नहीं रखे होते और बस में सफर करना चाहते हैं. हम कितने लोगों पर दया दिखाएँगे. उन्होंने कहा कोई बात नहीं भैया आप उसके टिकट के पैसे मुझसे ले लीजिए. बस कंडक्टर ने उस वृद्ध व्यक्ति को पुनः बस में बैठा लिया. वह वृद्ध व्यक्ति मधु को बार-बार धन्यवाद देने लगा. उसकी आँखों में कृतज्ञता के आँसू थे.

मधु ने हाथ जोड़कर कहा कोई बात नहीं बाबा. मधु को आज उस वृद्ध की मदद करके शांति का अनुभव हो रहा था.

*****

त्योहारों का अनुभव

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

त्यौहारों के अनुभव कुछ खास होते हैं.
त्यौहार तो आकर चले जाते,बस अपने साथ होते हैं.
मिठाइयाँ तो सब होते वही पुराने हैं.
पर इनकी मिठास हर बार नई होती है.

हर तरफ छाई रहती है खुशी,
सबके दिलों में उत्साह होता है.
काम सब ठीक और समय पर हो,
मन में छाया टेंशन भी तो रहता है.

बच्चों की धमा-चौकड़ी देखते ही बनती है.
हर घर में सद्भावों की महफिल भी सजती है.
घर-आँगन में सुन्दर रंगोली बनाई जाती है.
जो उमंगों सहित रंगों से सजाई जाती है.

धनतेरस पे धनवंतरि,कुबेर पूजे जाते हैं.
नरकचौदस नरकासुर वध की याद दिलाती है.
अमावस पे गणेश,सरस्वती सहित श्री पूजी जाती.
अगले दिन हम करते गौ-गोवर्धन की पूजा.

फिर आता प्यारा भाई-दूज का अनोखा दिन.
भाई-बहन का प्रेम अनोखा देखें सारी दुनियाँ.
रस्मों रिवाजों सहित मिलकर करते हम सारी पूजा.
त्यौहारों की उमंग होती है,भाव मन में ना कोई दूजा.

उत्सव आकर चले जाते,उत्साह बना रहता है.
फिर यह उत्सव जल्दी आए अरमान सदा रहता है.
त्यौहारों की थकान कर दे एक तरफ तो,
त्यौहारों का हर अनुभव बड़ा अनमोल रहता है.

*****

आसमा को जमीन पर लाने वाला चाहिए

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

जो आसमां को जमीन पर लाना चाहे,
हौसला उनका बुलंद होना चाहिए.

तिनके की तरह बिखरे ना जिनके हौसले,
बाज की तरह ऊंची उड़ान होना चाहिए.

गिरे जितनी बार उतनी बार उठ कर फिर चले,
अनवरत लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला चाहिए.

सितारेउनको गर्दिश में भी राह दिखाएंगे.
जिगर में काम का जुनून उनके होना चाहिए.

आसमां भी जमीन परएक रोज उतर आएगा.
बस आसमां को जमीन पर लाने वाला चाहिए.

*****

दीप मालिका

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

आ गई शुभ घड़ी, भाई और भार्या सहित घर आए मेरे श्री राम.
आओ री सखी मंगल गीत गाओ, प्रज्वलित करो सुंदर दीपमालिका.
चंदन, केसर, कपूर की सुगंधित इत्र का, करो छिड़काव गलियों में.
सुंदर रंगों की सजाओ रंगोली,
फिर उनमें सजाओ दीपमालिका.
पत्रों, पुष्पों की बनाओ सुंदर बंदनवार, मंदिरों में चढ़ाओ सुंदर ध्वजा, पताका.
हर घर में बँटने दो बतासे, बजने दो बधावे,
हर घर में सजाओ सुंदर दीपमालिका.
मन के अपने हराकर आसुरी भावना, हृदय में आह्वान करें श्री सीताराम का.
तिमिर युक्त रजनी को रोशनी से भर दे हम,
हर देहरी में जगमग जलाएं दीपमालिका.
रोली, केसर, अगर, कपूर, चंदन लिए,
आओ कनक थाल सजाएं सब मिलकर.
करें आरती गौरी गणेश सहित लक्ष्मीनारायण का,
इस दीपावली घी के जलाएं दीपमालिका.

*****

रात्रि कहानी

रचनाकार- संकलित

सर! मुझे पहचाना?"

"कौन?"

"सर, मैं आपका स्टूडेंट, 40 साल पहले का.

"ओह! अच्छा. आजकल ठीक से दिखता नही बेटा और याददाश्त भी कमज़ोर हो गयी है. इसलिए नही पहचान पाया. खैर. आओ, बैठो. क्या करते हो आजकल?" उन्होंने उसे प्यार से बैठाया और पीठ पर हाथ फेरते हुए पूछा.

"सर, मैं भी आपकी ही तरह टीचर बन गया हूँ."

"वाह! यह तो अच्छी बात है लेकिन टीचर की तनख़ाह तो बहुत कम होती है फिर तुम कैसे?"

"सर. जब मैं सातवीं क्लास में था तब हमारी कलास में एक वाक़िआ हुआ था. उस से आपने मुझे बचाया था. मैंने तभी टीचर बनने का इरादा कर लिया था. वो वाक़िआ मैं आपको याद दिलाता हूँ. आपको मैं भी याद आ जाऊँगा."

"अच्छा! क्या हुआ था तब?"

"सर, सातवीं में हमारी क्लास में एक बहुत अमीर लड़का पढ़ता था. जबकि हम बाक़ी सब बहुत ग़रीब थे. एक दिन वोह बहुत महंगी घड़ी पहनकर आया था और उसकी घड़ी चोरी हो गयी थी. कुछ याद आया सर?"

"सातवीं कक्षा?"

"हाँ सर. उस दिन मेरा दिल उस घड़ी पर आ गया था और खेल के पीरियड में जब उसने वह घड़ी अपने पेंसिल बॉक्स में रखी तो मैंने मौक़ा देखकर वह घड़ी चुरा ली थी.

उसके बाद आपका पीरियड था. उस लड़के ने आपके पास घड़ी चोरी होने की शिकायत की. आपने कहा कि जिसने भी वह घड़ी चुराई है उसे वापस कर दो. मैं उसे सज़ा नहीं दूँगा. लेकिन डर के मारे मेरी हिम्मत ही न हुई घड़ी वापस करने की."

"फिर आपने कमरे का दरवाज़ा बंद किया और हम सबको एक लाइन से आँखें बंद कर खड़े होने को कहा और यह भी कहा कि आप सबकी जेब देखेंगे लेकिन जब तक घड़ी मिल नहीं जाती तब तक कोई भी अपनी आँखें नहीं खोलेगा वरना उसे स्कूल से निकाल दिया जाएगा."

"हम सब आँखें बन्द कर खड़े हो गए. आप एक-एक कर सबकी जेब देख रहे थे. जब आप मेरे पास आये तो मेरी धड़कन तेज होने लगी. मेरी चोरी पकड़ी जानी थी. अब जिंदगी भर के लिए मेरे ऊपर चोर का ठप्पा लगने वाला था. मैं पछतावे से भर उठा था. उसी वक्त जान देने का इरादा कर लिया था लेकिन, लेकिन मेरी जेब में घड़ी मिलने के बाद भी आप लाइन के आख़िर तक सबकी जेब देखते रहे. और घड़ी उस लड़के को वापस देते हुए कहा, "अब ऐसी घड़ी पहनकर स्कूल नहीं आना और जिसने भी यह चोरी की थी वह दोबारा ऐसा काम न करे. इतना कहकर आप फिर हमेशा की तरह पढाने लगे थे."कहते कहते उसकी आँख भर आई.

वह रुंधे गले से बोला, "आपने मुझे सबके सामने शर्मिंदा होने से बचा लिया. आगे भी कभी किसी पर भी आपने मेरा चोर होना जाहिर न होने दिया. आपने कभी मेरे साथ फ़र्क़ नहीं किया. उसी दिन मैंने तय कर लिया था कि मैं आपके जैसा टीचर ही बनूँगा."

"हाँ हाँ, मुझे याद आया." उनकी आँखों मे चमक आ गयी. फिर चकित हो बोले, "लेकिन बेटा, मैं आजतक नहीं जानता था कि वह चोरी किसने की थी क्योंकि जब मैं तुम सबकी जेब देख कर रहा था तब मैंने भी अपनी आँखें बंद कर ली थीं."

*****

सुखद अनुभव

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

ऐ री सखी! आज इस नील गगन की देखो तो जरा सुंदरता.
कितनी मनभावन लग रही है बादलों की यह पंक्तियाँ.

कहीं-कहीं श्याम तो कहीं-कहीं श्वेत धवल.
यह मनाकर्षक मेघ मानों हो फूलों की लड़ियाँ.

कुछ खिली-खिली-सी, कुछ दिखे जरा अधखिली-सी.
जैसे हो राधा-कृष्ण के बाग की कलियाँ.

ए सखी री!मन का मयूरा मेरा आज बांवरा-सा हो रहा.
देखकर अचरज भरी बादलों की यह सुन्दर बगिया.

बचपन की,जवानी की,गांव और मोहल्ले की.
आज आ जाओ दूर-पास की मेरी सारी सखी सहेलियाँ.

स्वच्छंद व उन्मुक्त मन से जरा आज हम भी सखी री.
घूम आएं हम भी यह सुंदर बादलों की गलियाँ.

कहीं-कहीं गुच्छो में भी दिख रही है यह बदलियाँ.
मानो हो यह श्वेत पुष्पों से भरी-भरी डालियाँ.

यह शुभ धवल बादल कतारों में आज ऐसे सजे.
जैसे लगी हों आसमां में बादलों की सुन्दर क्यारियाँ.

ए री सखी! जरा देखो यह धवल चंचल बादल.
इस तरु में उलझ कर, कर रहा कैसी अठखेलियाँ.

हे सखी री! कितना मनमोहक, सुंदर दृश्य है यह.
दुआ करो इस सुखद अनुभव से आल्हादित हो आज सारी दुनिया.

*****

जीवन के अनुभव

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

कभी रोमांच से तन-मन हमारा पुलकित हो जाता.
कभी भावुक हो नयनों से अश्रुओं की झड़ी लगाता.
कभी रिश्तो की चौपाल सजाता, कभी भीड़ में अकेला रह जाता.
होते हैं कितने विचित्र ये जीवन के यह हमारे अनुभव.

यहां कभी खुशियों की बहार ही बहार है.
कभी बीच भंवर में फंसी नैया, बिना पतवार है.
जैसा हो जीवन का अनुभव जाना तो हर हाल में उस पार है.
होते हैं कितने विचित्र ये जीवन के हमारे अनुभव.

कभी जरा सी हवा चली तो बिखर जाता है सपनों का महल.
कभी नकारात्मक विचारों में फंसकर दिल जाता है दहल.
कभी कमर कसके आशाओं का दामन थाम करता है नई पहल.
होते हैं कितने विचित्र ये जीवन के हमारे अनुभव.

कभी कोई बड़ा सबक सिखाता, दिन में तारे हमें दिखाता.
मोह माया के मृग मरीचिका में फंसा, हमारा मन भरमाता.
कभी हंसाता, कभी रुलाता,जाने क्या-क्या ये खेल दिखाता.
होते हैं कितने विचित्र ये जीवन के हमारे अनुभव.

कभी आशा, कभी निराशा में जीवन उलझकर रह जाता.
कभी अतीत की यादों में, कभी भविष्य के ख्वाबों में खो जाता.
कभी सुनहरे अवसर को खोकर, हाथ मलता और पछताता.

*****

प्रेरणा

रचनाकार- सीमा यादव

1. सूरज और चन्द्रमा से कर्तव्य पथ के प्रति समर्पित होना सीखिए.

2. फलों से लदे हुए वृक्ष से विनम्रता का गुण सीखिए.

3. नदी, झरनों के जल की धारा से निरंतर आगे बढ़ते रहना सीखिए.

4. बेजुबान पशु-पक्षियों से मेहनत करना सीखिए.

5. फूलों से हँसते हुए परमार्थ का भाव सीखिए.

6. माँ धरती सी सरलता और सहनशीलता सीखिए.

*****

आम का पेड़

रचनाकार- संकलित

एक बच्चे को आम का पेड़ बहुत पसंद था.जब भी फुर्सत मिलती वो आम के पेड़ के पास पहुच जाता. पेड़ के ऊपर चढ़ता, आम खाता, खेलता और थक जाने पर उसी की छाया मे सो जाता. उस बच्चे और आम के पेड़ के बीच एक अनोखा रिश्ता बन गया. बच्चा जैसे-जैसे बडा होता गया वैसे-वैसे उसने पेड़ के पास आना कम कर दिया. कुछ समय बाद तो बिल्कुल ही बंद हो गया. आम का पेड़ उस बालक को याद करके अकेला रोता.

एक दिन अचानक पेड़ ने उस बच्चे को अपनी तरफ आते देखा और पास आने पर कहा,

"तू कहाँ चला गया था? मैं रोज तुम्हें याद किया करता था. चलो आज फिर से दोनों खेलते हैं."

बच्चे ने आम के पेड़ से कहा,

"अब मेरी खेलने की उम्र नहीं है. मुझे पढना है, लेकिन मेरे पास फीस भरने के पैसे नहीं है."

पेड़ ने कहा,

"तू मेरे आम लेकर बाजार मे बेच दे, इससे जो पैसे मिले अपनी फीस भर देना."

उस बच्चे ने आम के पेड़ से सारे आम तोड़ लिए और उन सब आमों को लेकर वहाँ से चला गया. उसके बाद फिर कभी दिखाई नहीं दिया. आम का पेड़ उसकी राह देखता रहता.

एक दिन वह फिर आया और कहने लगा, अब मुझे नौकरी मिल गई है, मेरी शादी हो चुकी है. मुझे मेरा अपना घर बनाना है, इसके लिए मेरे पास अब पैसे नहीं है."

आम के पेड़ ने कहा, "तू मेरी सभी डाली को काट कर ले जा, उससे अपना घर बना ले." उस जवान ने पेड़ की सभी डाली काट ली और ले के चला गया.

आम के पेड़ के पास अब कुछ नहीं था वह अब बिल्कुल बंजर हो गया था.

कोई उसे देखता भी नहीं था.

पेड़ भी अब उस बालक/जवान उसके पास फिर आयेगा यह उम्मीद छोड दी थी.

फिर एक दिन अचानक वहाँ एक बूढा आदमी आया. उसने आम के पेड़ से कहा,

"शायद आपने मुझे नहीं पहचाना,

मैं वही बालक हूँ जो बार-बार आपके पास आता और आप हमेशा अपने टुकड़े काटकर मेरी मदद करते थे."

आम के पेड़ ने दु:ख के साथ कहा,

"पर बेटा मेरे पास अब ऐसा कुछ भी नहीं जो मैं तुम्हें दे सकूँ."

वृद्ध ने आँखों में आँसू लिए कहा,

"आज मैं आपसे कुछ लेने नहीं आया हूँ, बल्कि आज तो मुझे आपके साथ जी भरके खेलना है, आपकी गोद मे सर रखकर सो जाना है." इतना कहकर वो आम के पेड़ से लिपट गया और आम के पेड़ की सूखी हुई डाली फिर से अंकुरित हो उठी. वह आम का पेड़ कोई और नहीं हमारे माता-पिता हैं.

*****

ट्रेन

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

छुक-छुक करती, स्टेशन आई ट्रेन.
इंजन संग डिब्बे, भी धर लाई ट्रेन.
ट्रेन के आते ही, चढते हैं भाग.
स्टेशन में मचे है, भागम-भाग.

कुन्नू-मुन्नू और, सीता-गीता भी.
दादा-दादी संग, चढ़ बैठे वे भी.
सीटी बजते ही, चल पड़ती ट्रेन.
सवारी संग माल, ले चलती है ट्रेन.

स्टेशन-स्टेशन रुकते है जाती.
सवारी उतारती, बिठा लेती जाती.
छुक छुक करती, चलती जाती ट्रेन.
अनेकता मे एकता का संदेश देती ट्रेन.

संदेश देती ट्रेन, संदेश देती ट्रेन.

*****

चींटी रानी

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

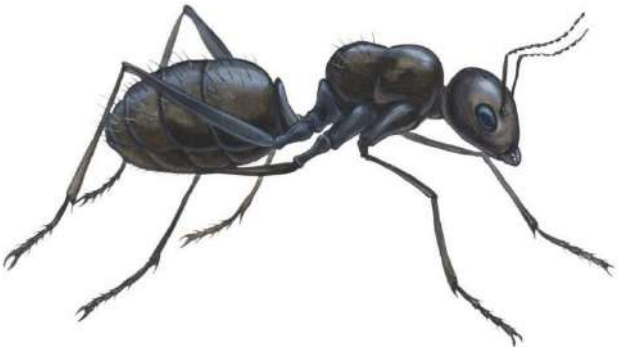

चींटी रानी, बड़ी सयानी.
मेहनत में, ना है परेशानी.

छोटी काया, बड़े काम.
करती हरदम, सुबह से शाम.

एकता की है, देती मिशाल.
मिलजुल है, वे मालामाल.

अपनों की वे, सदा साथ रहती.
हर कोई काम, मिलजुल करती.

जग में ना है, इनका सानी.
सदा जुटाती, वह दाना पानी.

देती सदा है, वह तो शिक्षा.
ना मांगे कोई, कभी भिक्षा.

*****

छठ पूजा

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

भारत माता तेरा, वैभवशाली रूप.
दिव्य सूर्य को माने, सदा देव स्वरूप.

सूर्य षष्ठी का पूजन, सत्यनिष्ठा का पर्व.
श्रद्धा विश्वास धर, मनाते हम यह पर्व.

पुरातन यह पर्व है, करते सब सम्मान.
एक घाट जा मिलते, राजा रंक समान.

मनभावन पूजन, दीर्घजीवी सभ्यता.
पवित्र पूजन की, पुरातन सभ्यता.

कार्तिकी छठ दे, मनोवांछित फल.
इस व्रत से होता, मंगलकारी कल.

आज दिन दर्शन, करें उदियमान सूर्य.
जल साधना अर्घ्य, देते अस्ताचल सूर्य.

संतान रक्षण की, पौराणिक मान्यता.
आज पुत्रेष्ठि यज्ञ, करते ले मानता.

सूर्य देव को अर्पण, बाँस-टोकरी और सूप.
अर्घ्य महिमा से हमें, ना लगे भूख और धूप.

खीर परसादी लेकर, करते उपवास आरंभ.
क्षीर-नीर अर्पण कर, करते पूजन का अंत.

आदित्य देव रक्षा करें, जगमग किरणें प्रसार.
बाल स्वरूप दर्शन पा, प्रगट करें हम आभार.

*****

भारतीय साहित्य

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी

भारत एक धर्मनिरपेक्ष, सबसे बड़ा लोकतंत्र है यहाँ आदि काल से ही साहित्य की सबसे पुरानी या प्रारंभिक कृतियाँ मौखिक रूप से प्रेषित थी. साथियों हम साहित्य, संस्कृति के इतिहास में जाएँ तो हमें पता चलेगा कि भारतीय साहित्य की सबसे पुरानी या प्रारंभिक कृतियाँ मौखिक रूप से प्रेषित थीं.संस्कृत साहित्य की शुरुआत होती है 5500 से 5200 ईसा पूर्व के बीच संकलित ऋग्वेद से जो की पवित्र भजनों का एक संकलन है. साथियों मेरा मानना है कि भारतीय साहित्य सबसे पुराना है आज हम वैश्विक स्तर पर देख रहे हैं कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता, धर्मनिरपेक्षता, साहित्य को पूर्ण विकसित देश भी देखने पर हैरानी महसूस करते हैं ऊपर से हम 135 करोड़ जनसंख्या का एक विशाल संगठन है. एक विशाल जनसंख्यकीय जनशक्ति हैं. 22 करोड़ जनसंख्या के रूप में हमारा यूपी विश्व में पांचवी जनसंख्यकीय बड़े क्षेत्र में गिना जाता है. याने यूपी जितनी जनसंख्या शक्ति में गिना जाए तो विश्व का पाँचवा नंबर देश लगेगा. साथियों बात अगर हम भारत के साहित्य की करें तो भारत में साहित्यका अणखुट खजाना है !! हमारे राष्ट्र में इतना साहित्य है कि जिनकी व्याख्या हम कागज कलम से नहीं कर सकते!!इसलिए ही हमारे भारत को साहित्य सृजनकर्ता की भी हम संज्ञा दे सकते हैं !! साथियों साहित्य और संस्कृति एक राष्ट्र की महानता और वैभव दिखाने का एक माध्यम भी है. भारत में साहित्य का अणखुट खजाना भरा है! साथियों बात अगर हम भारत में संस्कृति की करें तो, संस्कृत के महाकाव्य रामायण और महाभारत पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंत में आये.

पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व की पहली कुछ सदियों के दौरान शास्त्रीय संस्कृत खूब फलीफूली, तमिल संगम साहित्य और पाली केनोन ने भी इस समय काफी प्रगति की. साथियों बात अगर हम भारत में संस्कृति की करें तो, भारत की संस्कृति बहुआयामी है जिसमें भारत का महान इतिहास, विलक्षण भूगोल और सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरुआत और उसके अस्तगमन के साथ फली-फूली अपनी खुद की प्राचीन विरासत शामिल हैं. इसके साथ ही पड़ोसी देशों के रिवाज़, परम्पराओं और विचारों का भी इसमें समावेश है. पिछली पाँच सहस्राब्दियों से अधिक समय से भारत के रीति-रिवाज़, भाषाएँ, प्रथाएँ और परंपराएँ इसके एक-दूसरे से परस्पर संबंधों में महान विविधताओं का एक अद्वितीय उदाहरण देती हैं. भारत कई धार्मिक प्रणालियों, जैसे कि सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म, सिंधी धर्म धर्मों का जनक

है. इस मिश्रण से भारत में उत्पन्न हुए विभिन्न धर्म और परम्पराओं ने विश्व के अलग-अलग हिस्सों को भी बहुत प्रभावित किया है. भारत में ऋग्वेद के समय से कविता के साथ-साथ गद्य रचनाओं की मजबूत परंपरा है कविता प्रायः संगीत की परम्पराओं से सम्बद्ध होती है और कविताओं का एक बड़ा भाग धार्मिक आंदोलनों पर आधारित होता है या उनसे जुड़ा होता है लेखक और दार्शनिक अक्सर कुशल कवि भी होते थे आधुनिक समय में, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्र वाद और अहिंसा को प्रोत्साहित करने के लिए कविता ने एक महत्वपूर्ण हथियार की भूमिका निभाई है. साथियों बात अगर हम भारत के 28 राज्यों और 9 केंद्रशासित प्रदेशों की करें तो, भारतीय गणराज्य में 22 आधिकारिक मान्यता प्राप्त भाषाएँ है.

वर्तमान समय में भारत में मुख्यतः दो साहित्यिक पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार. हिन्दी तथा कन्नड भाषाओं को आठ-आठ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किए गये हैं. बांग्ला और मलयालम को पाँच-पाँच, उड़िया को चार, गुजराती, मराठी, तेलुगु और उर्दू को तीन-तीन तथा असमिया, तमिल को दो-दो और संस्कृत को एक ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया है. साथियों बात अगर हम वर्तमान स्थिति के साहित्य में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के योगदान की करें तो मेरा मानना है कि यह मीडिया वर्तमान साहित्य, कविता, लेख, गद्द को जीवंतता प्रदान करते हैं! साथियों अगर हम कोई भी कविता या लेख लिखते हैं तो वह हमारी योग्यता हम तक ही रहती है! किसी को क्या पता चलेगा कि हमने क्या लिखा है! और हमारा साहित्य क्या है ? यह हमारी मीडिया ही है जो बिना स्वार्थ देश और भक्ति में हमारे लेखन को आम आदमी तक पहुंचाकर उनमें जीवंतता प्रदान करती है जो काबिले तारीफ है! साथियों बात अगर हम माननीय उपराष्ट्रपति की करें तो पीआईबी के अनुसार दिनांक 6 नवंबर 2021 को एक कार्यक्रम में अपने संबोधन में कहा कि साहित्य को आकार देने में किसी देश की संस्कृति और परंपराएं एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. उन्होंने कहा कि अगर हम अपने लोक साहित्य को संरक्षित रखेंगे तो हम अपनी संस्कृति की रक्षा कर पाएंगे. उन्होंने कहा कि साहित्य वह माध्यम है, जिसके जरिए एक राष्ट्र की महानता और वैभव को दिखाया जाता है. उन्होंने अपनी इच्छा व्यक्त की कि लेखक, कवि, बुद्धिजीवी और पत्रकार अपने सभी लेखन और कार्यों में सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता दें. उन्होंने लेखकों से बाल साहित्य पर विशेष ध्यान देने का अनुरोध किया. साथ ही, उन्हें बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाने के लिए नए तरीकों की खोज करने का भी सुझाव दिया. उन्होंने इस क्षेत्र में दो प्रसिद्ध लेखकों मुल्लापुडी वेंकटरमण और चिंथा दीक्षितुलु के योगदान का उल्लेख किया, कहा कि जो साहित्य और कविता सामाजिक कल्याण पर केंद्रित हैं, वे कालजयी हैं. उन्होंने कहा कि यही कारण है कि रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य आज भी हमें प्रेरणा देते हैं.उन्होंने कहा कि सभी भारतीय भाषाओं की रक्षा तथा संरक्षण से हमारी संस्कृति खुद के अस्तित्व को बनाए रखने में सक्षम होगी और आने वाली पीढ़ियों को सही राह दिखाने का काम करेगी. अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत में साहित्य का अणखुट ख़जाना है. साहित्य एक राष्ट्र की महानता और वैभवता दिखाने का एक माध्यम है. भारत की प्रत्येक भाषा के साहित्य का अपना स्वतंत्र और प्रखर वैशिष्ट्य है जो अपने प्रदेश के व्यक्तित्व से मुद्रांकित है.

*****

बच्चे

रचनाकार- सीमा यादव

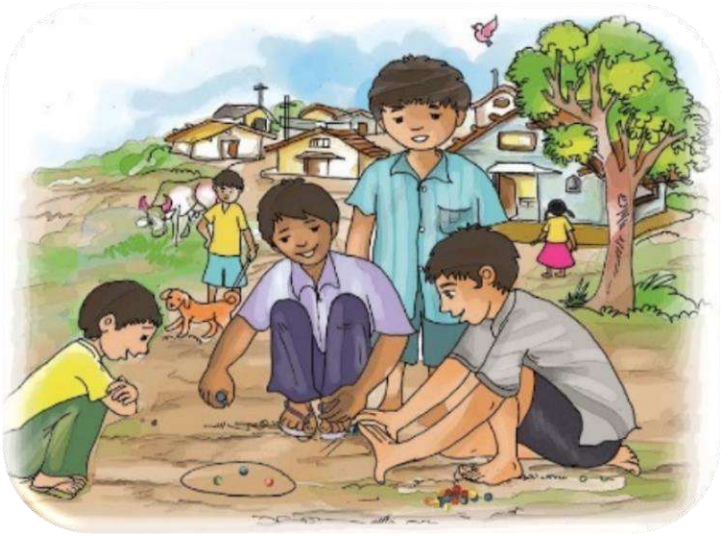

बच्चे घर की शान हैं,
माँ-बाप की जान हैं.

बच्चे सभी होते हैं बड़े ही गजब,
दिखाते हैं अजब अनोखे करतब.

बच्चे हरपल -हरदम रहते हैं खुश.
नहीं कभी करते हैं किसी को नाखुश.

बच्चे कल का होते हैं भविष्य.
उन्हें सद्मार्ग की शिक्षा देना अवश्य.

*****

रेल चली

रचनाकार- जयंती खमारी "रूही"

रेल चली भई रेल चली,
छुक-छुक, छुक-छुक रेल चली.
पहुँची हलवाई की गली.

हम हैं मिठाई प्यारे-प्यारे,
नाम सुनाओ न्यारे-न्यारे.
लड्डू जलेबी दो थे भाई,
दोनों में फिर हुई लड़ाई.
देख-देख हम ललचाएँ,
मुँह बना कर हमें चिढ़ाएँ.

रेल चली भई रेल चली,
छुक-छुक, छुक-छुक रेल चली.
पहुँची हलवाई की गली.

चीनी दूध और मलाई,
सँग हो लें बनी मिठाई.
सात समंदर पार से आई,
रसगुल्ला गुलाब मेवा भाई.
जामुन के संग मिलकर गाते,
गुलाब जामुन हैं कहलाते.

रेल चली भाई रेल चली,
छुक-छुक, छुक-छुक रेल चली.
पहुँची हलवाई की गली.

*****

प्रकृति से सामंजस्य करें

रचनाकार- रामावतार 'निश्छल'

वहाँ शिखर पर, यहाँ सतह पर,
सिंधु तल में जहाँ-तहाँ.

गगन, क्षितिज, सरिता, पोखर में,
मत पूछो है कहाँ-कहाँ.

वन, उपवन में, तुहिन, श्वेद में,
बादल, निर्झर, घर-बाहर.

बंद करें मन की मुट्ठी में,
मिल जाए वह जहाँ-जहाँ.

मन की आँखों से ही देखें,
ओ मन से ही बात करें.

चलो आज ढूँढे प्रकृति से,
कैसे हम संवाद करें?

उसके रंगों को सहलाएँ,
उलझें उसके ढंगों में.

प्रकृति की प्रकृति को समझें,
उससे सामंजस्य करें.

मरुस्थली में, सिंधु किनारे,
रेत बिछी है यहाँ-वहाँ.

अँजलि में भर कर बाँधें तो,
जीवन रेत टिकी कहाँ?

जीवन की क्षणभंगुरी में,
प्रकृति तो अमरत्व भरे.

जन्म उसी से, जीवन उससे,
प्रकृति है सर्वत्र यहाँ.

बंद करें मन की मुट्ठी में,
मिल जाए वह जहाँ-जहाँ.

*****

ठंडी आई

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"

ठंडी आई ठंडी आई,
तन-मन में ठिठुरन छाई.
ठंडी आई.

घास पात में मोती चमके,
चारों तरफ़ धुंध है छाई.
ठंडी आई.

जरकिन, स्वेटर निकल गया है,
निकला गई अब शाल,रजाई.
ठंडी आई.

ठंडे पानी से डर लगता,
आग तापें लोग-लुगाई
ठंडी आई.

ठंडी चीज नहीं खाएँगे,
लेंगे गर्मागर्म मिठाई.
ठंडी आई.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी –

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

उत्तम क्षमा धर्म

तालाब के किनारे श्यामू का खेत था. जिसमें वह विभिन्न प्रकार की फसल एवं फलों की खेती करता था. श्यामू मन लगाकर खेती का कार्य करता था. जिसकी वजह से उसे आमदनी अच्छी होती थी, लेकिन कुछ दिनों से उसकी फसल को एक बंदर और लोमड़ी नुकसान पहुँचा रहे थे. जब भी श्यामू अपनी फसल को देखने आता, उसे देख कर लोमड़ी, बंदर को संकेत दे देता और बंदर पेड़ों पर चढ़कर धमा-चौकड़ी मचाते हुए फलों को तोड़ कर इधर-उधर फेंकता. किसान यह सब देखकर चिंतित था. उसने विचार किया कि जब तक ये दोनों यहाँ रहेगे तब तक मेरी फसल को नुकसान पहुँचता रहेगा. इसलिए इन दोनों को भगाने का कोई उपाय करना पड़ेगा.

अगले दिन श्यामू ने सुबह खेत में पहुँचकर पेड़ एवं उसके आसपास जाल फैलाया और उस जाल को पत्तियों से ढँक दिया. कुछ घंटों पश्चात श्यामू अपने खेत के पास पहुँचने वाला ही था कि रोज की तरह लोमड़ी ने बंदर को किसान के आने का संकेत दे दिया. बंदर उछल कूद करते हुए फलों का नुकसान करने लगा. इधर लोमड़ी ने भी बंदर की उछल कूद देख, पेड़ का चक्कर लगाना शुरू कर दिया. कुछ क्षण पश्चात बंदर जाल में फँस गया. वह लोमड़ी से कहने लगा- दोस्त,मैं जाल में फँस गया हूँ, मुझे निकालो. लोमड़ी को पता भी नहीं था कि वह भी जाल में फँस गया है. दोनों जाल से निकलने की भरपूर कोशिश करते रहे लेकिन निकलने की बजाय और बुरी तरह जाल में फँस गए. श्यामू वहाँ पहुँचा और बंदर और लोमड़ी की हालत देखकर उनसे कहा- जिस प्रकार तुम लोगों ने मेरी फसल का नुकसान किया है उसी का फल तुम्हें मिला है. अब तुम इस जाल से नहीं निकल पाओगे और यही भूखे प्यासे मरोगे. बंदर और लोमड़ी किसान की बातों को सुनकर कहने लगे-किसान भैया! हमें छोड़ दो, अब हम कभी आपकी फसल

का नुकसान नहीं करेंगे. हम अपने किए कार्य पर बहुत शर्मिंदा हैं. फसल के नुकसान के बदले आपकी फसल की हम दोनों रखवाली करेंगे.हम पर विश्वास करो और हमें क्षमा कर दो.

दोनों की बातों को सुनकर श्यामू मन ही मन सोचने लगा-किसी को मारने की अपेक्षा क्षमा करना अच्छा है. श्यामू को उन दोनों पर दया आ गई और उसने उन्हें क्षमा कर दिया. भविष्य में किसी की फसल का नुकसान न करने की सलाह देते हुए उन दोनों को जाल से मुक्त कर दिया. दोनों ने जाल से मुक्त होकर किसान को धन्यवाद दिया. पश्चाताप के तौर पर बंदर और लोमड़ी, श्यामू के फसल की रखवाली करने लगे और तीनों में अच्छी मित्रता हो गई. वे सभी खुशी से अपना जीवन यापन करने लगे.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com**पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 अ	2		3 ग		4		5		6 ल
					7 हा				
	8			9 क			10		
						11 सा			
12 अं		13 ज							
14							15 झं		
		16 स							
						17 स		18	
					19 ता				
20 हा							21 गो		

बाएँ से दाएँ

1. अस्त-व्यस्त, 5. आलसी, 7. हड्डी, 8. धम्म, धड़ाम, 10. उजाला, 11. शौक, 13. तितर-बितर, 14. मृत्यु होने पर तालाब, नदी मे जाकर पानी चढ़ाया जाता है का नाम, 15. झोंका, 16. साला की पत्नी का रिश्ता, 17. लगातार, 19. निर्धारण, 20. हिलता-डुलता, 21. गाय-बैल रखने का स्थान।

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 ठ	2 उ	का	य		4 प	त्तो			5 ग
	ति			6 ह	र्री		7 मे	छ	र्री
8 लु	अ	ई		म			क		
	इ		9 ठ	न	कु	10 क	रा		11 आ
	12 ल	क	ठा			म		13 म	ही
			य		14 झो	र		त	
15 क		16 म				छ		वा	
17 ट	क	र	हा		18 गो	ठ	19 का	र	
म		ह			द		क		20 का
ट		21 म	ह	ता	री		22 र	थी	या

ऊपर से नीचे

2. बहुत बड़ा, 3. अनपढ़, 4. रुको, 6. जल्दबाज़ी, 9. खुशबूदार, 10. हड़बड़ी, 11. एक अंक, 12. जल्दी–जल्दी, 13. जैसे, 18. नजदीक, 19. गरम।

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की
सदस्यता जारी रखने हेतु
सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने कीरुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)
आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर **खाता क्र. 45730100004644 आई.ऍफ़.एस.सी कोड BARB0MOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE)** में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहितअपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।